



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० ४८]

नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर २५, १९७२ (अग्रहायण ४, १८९४)

No. 48] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 25, 1972 (AGRAHAYANA 4, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस (NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र १५ फरवरी १९७२ तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned Gazettes of India Extraordinary were published up to the 15th February 1972 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4

शून्य
—NIL—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी।
मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the Gazettes Extraordinary mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1165	भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1887	भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	—
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—	भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1637
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1697	भाग III—खंड 2—एकम्ब कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	347
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—	भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	145
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें	—	भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1805
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)		भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें	233
		पूरक संख्या 48—	
		18 नवम्बर, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्टें	2305
		28 अक्तूबर, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़े	2315

CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1165	PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	—
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1887	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	—
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	1637
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	1697	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	347
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	145
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1805
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	—	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	233
		SUPPLEMENT NO. 48	
		Weekly Epidemiological Reports for week-ending 18th November, 1972	2305
		Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 28th October, 1972	2315

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

(रक्षा मंत्रालय या छोड़कर) भारत या भारत के प्रशासनिक अथवा न्यायिक विभागों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएँ।

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 14 नवम्बर 1972

सं० 119-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिए “शीर्ष चक्र” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री काली चरण,
ग्राम अयार,
जिला एटा,
उत्तर प्रदेश।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 फरवरी, 1966)

20 फरवरी, 1966 की शाम को लगभग 6.30 बजे घातक हथियारों से लैस कुख्यात डाकू महावीरा के गिरोह ने मध्य प्रदेश में अयार गांव के निवासी श्री तोता राम तथा श्री रत्ती राम के घर पर धावा बोली। गिरोह के 18-19 व्यक्तियों का एक दल श्री तोता राम के घर में घुस गया और उसने अंधाधुंध गोशियों चला कर परिवार के सात सदस्यों को मौत के घाट उतार दिया। डाकूओं का दूसरा दल पड़ोस में श्री रत्ती राम के मकान में घुसा और उसने हत्या की तथा घर में आग लगा दी। श्री तोता राम अपनी तथा अपनी दो पुत्रियों की जान बचाने के लिए एक कमरे में घुस गए और उन्होंने उस कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। इस बीच डाकूओं ने 16 व्यक्तियों की भीमत्सपूर्ण और नृशंस हत्या करके एक भयानक दृश्य खड़ा कर दिया। जब डाकू श्री तोता राम तथा उनकी दो पुत्रियों की हत्या करने के लिए दरवाजा नहीं खोल सके, तो उन्होंने मकान को आग लगा दी। इस बीच श्री तोता राम के भाई श्री काली चरण अपनी जान की परवाह किए बिना, अपनी बन्धूक लेकर घटना स्थल पर पहुंचे। डाकूओं का मुकाबला करने के लिए कोई उपयुक्त आड़ न पाकर, उन्होंने एक वृक्ष की ओट लेकर डाकूओं को ललकारा और उन पर गोली बरसाना आरम्भ किया। मुठभेड़ में श्री काली चरण ने दो डाकूओं को मार गिराया। इससे डाकूओं का होसला पस्त हो गया और वे पीछे लौटने लगे। श्री काली चरण की वीरतापूर्ण तथा निर्भीक कार्यवाही के कारण डाकूओं का गिरोह और अधिक हताश न कर सका तथा श्री तोता राम और उनकी दो पुत्रियों की जान बच गई।

इस कार्यवाही में, श्री काली चरण ने उच्चकोर्ट की वीरता, पहल-शक्ति तथा दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

2. 7111682-क्राफ्ट्समैन कार्पेन्टर तथा ज्वाइनर दुर्लभ चन्द्र दास, इलैक्ट्रीकल एण्ड मैकेनिकल इन्जीनियर्स कोर।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 जून, 1970)

11 जून, 1970 को क्राफ्ट्समैन कार्पेन्टर तथा ज्वाइनर दुर्लभ चन्द्र दास पश्चिम बंगाल में दक्षिण पूर्वी रेलवे की हावड़ा-खड़गपुर लाइन पर एक सवारी गाड़ी में झूठी पर सफर कर रहे थे। प्रातः 8.30 बजे उलूबाड़ रेलवे स्टेशन पर कुछ समाज विरोधी तत्वों ने रेलगाड़ी पर हमला कर दिया। वे पत्थर फेंकने लगे और रेलवे रैकों को क्षति पहुंचाने लगे। गुण्डों द्वारा उत्पन्न इस स्थिति के कारण यात्रियों में घबराहट और भय पैदा हो गया। गाड़ ने गाड़ी में सफर कर रहे यात्रियों और विशेष कर सैनिकों से सहायता करने को कहा। क्राफ्ट्समैन दास सैनिक बर्दी पहुंचने हुए अन्य यात्रियों के साथ डिब्बे से बाहर आए और उन्होंने निहत्थे ही गुण्डों का पीछा किया। इसी बीच कुछ बदमाश रेलगाड़ी की छत पर चढ़ गए थे। गाड़ के अनुरोध पर क्राफ्ट्समैन दास उसमें निहित जोखिम की परवाह किए बिना बदमाशों को भगाने के लिए रेलगाड़ी की छत पर चढ़े। अभी क्राफ्ट्समैन दास रेलगाड़ी की छत पर ही थे कि रेलगाड़ी धीमी गति से चल पड़ी और वे बिजली के शक्तिवाली तारों से टकरा गए। इससे वे बुरी तरह झुलस गए और चलती गाड़ी की छत से दूर जा गिरे। उन्हें तत्काल निकटतम सिविल अस्पताल में ले जाया गया जहां से बाद में उन्हें कमान्ड अस्पताल, कलकत्ता में ले जाया गया, जहां 13 जून, 1970 को उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में, क्राफ्ट्समैन कार्पेन्टर और ज्वाइनर दुर्लभ चन्द्र दास ने उच्चकोर्ट की वीरता तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

3. श्री गोविन्द राव,

जी/59863 चार्जमैन (प्लान्ट)

जुलाई 1970 में ऋषिकेश-जोशी मठ-बद्रीनाथ सड़क पर अलकनंदा नदी की बाढ़ से हुई तबाही के बाद इस सड़क पर भीषण ही मातायात की व्यवस्था करना इस बात पर निर्भर था कि यहां अन्य स्थानों से उपस्कर तथा भस्मीने शीघ्र यहां पहुंचाई जाए और

उन्हें सड़क निर्माण कार्य पर लगाया जाए। नालों, तंग-घाटियों और गहरे खड्डों और सक्रिय भूस्खलनों को पार करते हुए मशीनों को दूसरी जगह से यहां पहुंचाने का काम अत्यन्त कठिन तथा जोखिमपूर्ण था। इसके साथ-साथ इस कार्य के लिए उपस्करों तथा मशीनों की बड़ी सावधानी एवं वक्षता से देख-रेख भी आवश्यक थी। इन सब कठिनाइयों के बावजूद भी चार्जमैन गोविन्द राव ने मशीनों के हिस्से पुर्जों को अलग-अलग कर तथा उन्हें जोखिमपूर्ण मार्गों से होते हुए और कई बार तो रास्तों के सहारे सीधी ढलान पर चढ़ते हुए अपेक्षित स्थानों तक पहुंचाया और बाद में उन्हें बड़ी कुशलता से संयोजित किया। अपने व्यक्तिगत उदाहरण और दृढ़-संकल्पशक्ति का परिचय देकर उन्होंने अपने साथियों को इसी प्रकार के जोखिमपूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित किया जिससे उन्हें दिया गया कार्य, पूरा किया जा सका। उन्होंने मूसलाधार वर्षा में भी दिन-रात काम किया और इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि मशीनें अगले दिन प्रातः काम करने के लिए तैयार रहें, उन्होंने मरम्मत के काम को चौबीसो घंटे किया।

इस सारी कार्यवाही में, श्री गोविन्द राव, चार्जमैन (प्लान्ट) ने उच्चकोटि के साहस, दृढ़-संकल्प तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. कैप्टन हरीश कुमार सिंह मेहता,

(आई० सी०-17812),

पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 सितम्बर, 1970)

2 सितम्बर, 1970 को कैप्टन हरीश कुमार सिंह मेहता के नेतृत्व में 15 जवानों के एक गश्ती दल को दक्षिण मिजो पहाड़ियों में थेन्जावल सेक्टर में एक संवेहास्पद गुप्त स्थान पर छापा मारने का आदेश दिया गया था। गुप्त रूप से अचानक छापा मारने के उद्देश्य से वे आधी रात को ही अपना गश्ती दल ले कर चल पड़े। गश्ती दल पहाड़ी पर चढ़ते हुए तथा दलेश्वरी नदी को तटों से पार करते हुए जोखिमपूर्ण भू-मार्गों से होते हुए बहुत सुबह उस क्षेत्र में जा पहुंचा और तत्काल उस क्षेत्र की छान-बीन करनी शुरू कर दी। दिन निकलते ही गश्ती दल को हवा में उबलते हुए चावलों की महक आई। कैप्टन मेहता गश्ती दल को उसी ओर ले गए जिधर से वह महक आ रही थी और एक नाले से होते हुए लगभग 1000 गज चलने के बाद उन्हें एक जगह दिखाई दी जहां पर बंदी पहने एक संतरी पहरा दे रहा था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, उन्होंने तत्काल झोंपड़ी पर आक्रमण किया और उस संतरी को मार गिराया तथा एक और उपद्रवी को, जो पास की झाड़ियों में से द्रव्य निकलने का प्रयत्न कर रहा था, घायल कर दिया। उन्होंने घायल उपद्रवी का पीछा किया और उसे पकड़ लिया। उपद्रवी से प्राप्त सूचना के आधार पर उस क्षेत्र में और छापे मारे गए और उनमें कैप्टन मेहता ने एक और उपद्रवी को मारा, दो को पकड़ा तथा तीन को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य किया। उन्होंने बहुत से हथियार भी अपने कब्जे में किए।

आज्ञोपायन कैप्टन हरीश कुमार सिंह मेहता ने उच्चकोटि की वीरता तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

5. 18578 राइफलमैन पण बहादुर गुंग, असम राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर, 1970)

9/10 सितम्बर, 1970 की राति को ऐंजल में लगभग 25 किलोमीटर दूर थिंगसाइतलोंग में स्थित उपद्रवियों के एक कैम्प पर छापा मारने के लिए एक दस्ते का तैनात किया गया था। यह कैम्प बांस के घने जंगल से घिरा एक कगार जैमी ढलान पर स्थित था। कैम्प तक पहुंचने का केवल एक ही रास्ता नाले के पूर्वी किनारे से था और उस पर उपद्रवियों का बड़ा पहरा था। राइफलमैन पण बहादुर गुंग ने स्वेच्छा से दस्ते का नेतृत्व किया। वे अभी कैम्प में केवल 10 मीटर ही दूर थे कि उपद्रवियों ने उन पर गोलियां चलाने के लिए अपने मोर्चे संभाल लिए। राइफलमैन पण बहादुर गुंग ने बड़ी निर्भीकता से अकेले ही कैम्प पर धावा बोल दिया तथा दो उपद्रवियों को मार गिराया। उपद्रवी मृतकों को छोड़ कर भाग खड़े हुए। राइफलमैन गुंग के व्यक्तिगत उदाहरण ने प्रेरित होकर उनके दल के जवानों ने उनका अनुसरण किया और वे दो उपद्रवियों को मार डालने, तथा अन्य दो घायल करने और भारी मात्रा में हथियार तथा गोलाबारूद बरामद करने में सफल हुए। इस कार्यवाही की सफलता में मैलिंग-सॉल्लिप सड़क पर तोड़-फोड़ करने वाले उपद्रवी दल का पूर्णतया सफाया हो गया।

इस कार्यवाही में, राइफलमैन पण बहादुर गुंग ने उच्चकोटि के साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

6. 213103 सार्जेंट कैलाश चन्द्र शर्मा,

ए० सी० एच०/जी० डी०

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 सितम्बर, 1970)

15 सितम्बर, 1970 को एक हेलीकाप्टर यूनिट के भण्डार-रक्षक में आग लग गई थी। सार्जेंट कैलाश चन्द्र शर्मा ने, जो यूनिट वारंट अफसर थे, तत्काल खतरे का अलार्म बजाया तथा दो अग्नि-शमन उपकरण लेकर घटना स्थल पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि आग फैल रही है और पास के भण्डार कक्षों तथा उस हैंगर को, जहां दो वायु-यान रखे हुए थे, खतरा पैदा हो गया है। वे अकेले ही तब तक आग में जूझते रहे जब तक कि कुमुक नहीं पहुंच पाई। आग की भीषण लपटें उठ रही थीं जिससे उनका शरीर बहुत झुलस गया था। यद्यपि आग बुझाने का उन्हें प्रशिक्षण नहीं मिला था, फिर भी अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे तब तक आग बुझाते रहे जब तक कि वे गर्मी, धुं और गंध से बेहोश होकर गिर नहीं गए। 229133 कार्पोरल तिलक राज शर्मा ने घटनास्थल पर पहुंच कर उन्हें बचाया। सार्जेंट कैलाश चन्द्र शर्मा के प्रयास से ही आग को केवल दो कमरों तक ही सीमित रखा जा सका और हैंगर से दो वायुयानों और अन्य बहुमूल्य भण्डारों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना सम्भव हो सका।

इस कार्यवाही में, सार्जेंट कैलाश चन्द्र शर्मा ने उच्चकोटि के साहस, दृढ़-संकल्प तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

7. 229133 कार्पोरल तिलक राज शर्मा,

कार्प/रिज

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 सितम्बर, 1970)

15 सितम्बर, 1970 को एक हेलीकाप्टर यूनिट के भण्डार कक्ष में आग लग गई थी। इसकी सूचना पाते ही कार्पोरल तिलक राज शर्मा तत्काल घटनास्थल की ओर दौड़े। आग की गर्मी, धुएँ, एवं गंध के कारण बेहोश हुए सार्जेंट कैलाश चन्द्र शर्मा को उठाने के बाद वे आग बुझाने के काम पर लग गए। यद्यपि कार्पोरल शर्मा ने आग बुझाने का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर रखा था फिर भी वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आग बुझाने में लगे रहे। उनका शरीर बहुत झुलम गया था और अन्ततः वे बेहोश होकर गिर पड़े। इस पर आग बुझाने में लगे अन्य व्यक्तियों ने उन्हें बचाया। कार्पोरल तिलक राज शर्मा के प्रयास से आग को वे केवल दो कमरों तक ही सीमित रखा जा सका और दो वायुयानों तथा अन्य बहुमूल्य सामग्री को बचाया जा सका।

इस कार्यवाही में, कार्पोरल तिलक राज शर्मा ने उच्चकोटि के साहस, दृढ़-संकल्प तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

8. 807415 अयोधी (भरती किया हुआ)

यमपल्ला पापा राव, कुक

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 सितम्बर, 1970)

15 सितम्बर, 1970 को एक हेलीकाप्टर यूनिट के भण्डार कक्ष में आग लग गई थी। यह नुतक कि यूनिट के भण्डार में आग लग गई है, एन० सी० (ई०) यमपल्ला पापा राव, कुक, तत्काल दो अग्नि-शमन उपकरणों को लेकर घटनास्थल की ओर दौड़े। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने देखा कि आग फैल चुकी है तथा पास के भण्डार कक्षों को तथा उस हैंगर को, जिसमें दो वायुयान खड़े थे, खतरा पैदा हो गया है। वे तत्काल आग बुझाने में लग गए। यद्यपि लफ्टे काफ़ी भीषण थीं और आग में उनका शरीर बहुत झुलम गया था फिर भी एन० सी० (ई०) यमपल्ला पापा राव अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना उस समय तक आग बुझाते रहे जब तक कि नियमित आग बुझाने वाला दल वहाँ नहीं पहुँचा। एन० सी० (ई०) यमपल्ला पापा राव के प्रयास से आग को केवल दो कमरों तक ही सीमित रखा जा सका और दो वायुयानों और अन्य बहुमूल्य सामग्री को सुरक्षित स्थानों में ले जाया जा सका।

इस कार्यवाही में, एन० सी० (ई०) यमपल्ला पापा राव ने साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

9. श्री रामानन्द किमोटी,

चीफ इंजीनियरिंग मर्केनिक सं० 46156

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1970)

आई० एन० एस० मैसूर की सहायक मशीनरी की जाँच करने के लिए उसके ए 1 बायलर को दिनांक 31 दिसम्बर, 1970 को प्रज्वलित करना था। चूंकि बायलर बहुत समय से निष्क्रिय पड़ा हुआ था, अतः उसे प्रज्वलित करने में कठिनाई हो रही थी। इसका कारण यह था कि बायलर की ट्यूबों में काँच जमी हुई थी और उसके फलस्वरूप वह लगातार तीन बार प्रज्वलित होकर भी बुझ गया था, चूंकि सहायक मशीनरी का परीक्षण भाग की उपस्थिति पर निर्भर

था, अतः उक्त खराबी के कारण निर्धारित परीक्षण में विलम्ब हो जाता। बायलर के प्रज्वलित होकर बुझते रहने के बावजूद भी इंजीनियरिंग मर्केनिक श्री रामानन्द किमोटी ने इस खराबी को ठीक कर बायलर को चालू करने का प्रयत्न किया। बड़ी तल्लीनता से इस कार्य को पूरा करने के प्रयास के दौरान अचानक आग भड़क उठी और उससे उनका चेहरा और दायाँ बाजू झुलम गए। उनकी सूखबूझ और तत्परतापूर्ण कार्यवाही से दुर्घटना और अधिक भयंकर रूप न ले सकी। पुनः 9 जनवरी, 1971 को बायलर में पानी पहुँचाने वाला पम्प ठीक ढंग से पानी नहीं पहुँचा रहा था। जलने के कारण हुए घावा के बावजूद भी वे उस पम्प को ठीक करने के लिए बायलर कक्ष में गए। हालांकि, पम्प को चालू करने की कोशिश में, उनके जले हुए बाजू पर आर धाव लगने से अत्यधिक रक्तस्राव हो रहा था, फिर भी वह तब तक उस काम पर जुटे रहे जब तक कि पम्प चालू नहीं हो गया।

आद्यापान्त श्री रामानन्द किमोटी, चीफ इंजीनियरिंग मर्केनिक ने उच्चकोटि की वीरता एवं दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

10. मेजर कवलजीत सिंह (आई० सी०-14590)

पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 फरवरी, 1971)

2 फरवरी, 1971 को मेजर कवलजीत सिंह फील्ड फायरिंग रेंज में अपनी कम्पनी के कार्मिकों के ग्रेनेड फेंकने के अभ्यास का निरीक्षण कर रहे थे। प्रभारी अधिकारी के आदेशानुसार, वे स्वयं न० 2 प्रक्षेप बीथी में पोजीशन लिए हुए थे जहाँ से वे ग्रेनेडों को फेंकते हुए देख सकते थे। एक सैनिक ने ग्रेनेड इस ढंग से फेंका कि वह वापस आकर उसी प्रक्षेप बीथी में आ गिरा जिसमें वह स्वयं और मेजर कवलजीत सिंह खड़े थे। मेजर कवलजीत सिंह ने तुरन्त प्रत्येक को आड़ में रहने के लिए रावधान किया और उस सैनिक को एक ओर धकेल कर उसे ग्रेनेड-विस्फोट की लपेट में आने से बचाया। इस बात को भली प्रकार जानते हुए कि ग्रेनेड के विस्फोट होने का चार सैकिण्ड का समय लगभग समाप्त हो चुका है, मेजर कवलजीत सिंह ने बड़े साहसिक ढंग से उस ग्रेनेड को दुबारा खाई में बाहर फेंका। ऐसा करने में ग्रेनेड फेंकते समय फट गया और उनके बाएँ हाथ की हथेली का एक बड़ा भाग और चार अंगुलियाँ कट गईं।

इस कार्यवाही में, मेजर कवलजीत सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और पहल-शक्ति का परिचय दिया।

11. जी. ओ. 1061, आर्मस्ट्रेट इंजीनियर (सिविल)

श्री पोन्नू सुकुमारन

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 जुलाई, 1971)

21-22 जुलाई, 1971 को रात को श्री पोन्नू सुकुमारन दमदम अलगराह सड़क के इंचार्ज थे। उस रात उस क्षेत्र में भारी वर्षा हुई। रात की मूसलाधार वर्षा और उफानती नदियों से सड़क को पहुँची क्षति का जायजा लेने के विचार से वे अगले दिन प्रातः अपने कैम्प से निकल पड़े। उन्होंने मार्ग में बहुत से भू-स्खलन पाए किए। चेलखोला पुल के पास पहुँचने पर उन्होंने देखा कि सड़क पूरी तरह टूटी हुई है और पृथ्वी का भी सम्भावित क्षति पहुँच सकती

थी जो कि उस क्षेत्र में यातायात के लिए काफी महत्वपूर्ण था। वे उस पुल का सर्वेक्षण करना चाहते थे लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए कोई रास्ता सुलभ नहीं था। यद्यपि ऊपर में पत्थर आदि के गिरते रहने और पहाड़ी में फिसलने होने के कारण पहाड़ी पर चढ़ कर पुल का निरीक्षण करना एक जोखिमपूर्ण कार्य था फिर भी उन्होंने ऐसा करने का निश्चय किया। पहाड़ी की थोड़ी पर पहुँच कर उन्होंने देखा कि पुल का एक ओर का पीलपाया पानी के साथ बह गया है और पुल का वह छोर नीचे की ओर लटक रहा है। वे उस पहाड़ी से, जहाँ से कि अभी भी बड़े-2 पत्थर लुढ़कते चले आ रहे थे नीचे उतरे और आवश्यक सामान एकत्र किया और अपने कुछ माथियों की सहायता ली। अपने प्राणों की भारी जोखिम में डाल कर दिन भर काम करने के उपरान्त, वे काम चलाऊ साधनों से पुल को नीचे से सहारा देने में और उसे बचाने में सफल हुए।

आद्योपान्त श्री पोन्नू सुकुमारन ने उच्चकोटि के उदाहरणीय साहस, दृढ़-संकल्प, और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. श्री राम लुभाय,

जी०/143683, अधीक्षक, बी०/आर० ग्रेड II

अलकनंदा की दुखद घटना के बाद श्री राम लुभाय को, ऋषिकेश-जोशीमठ सड़क पर पातालगंगा चट्टान को काट कर 12 फुट चौड़ा रास्ता बनाने का काम सौंपा गया था। झील के फट जाने से, इस क्षेत्र में अभूतपूर्व विनाश लीला के कारण सीधी खड़ी नग्न चट्टानों के अतिरिक्त वहाँ कुछ भी शेष न बचा था। बहुत ही अस्थिर और असम्भव जान पड़ने वाली इस चट्टान को काट कर ही फिर से मार्ग बनाया जा सकता था। चट्टान तक पहुँचने का केवल एक ही तरीका रस्सों के सहारे लटक कर चढ़ना था। इन चट्टानी परतों की अत्यन्त अस्थिरता के कारण लटक कर उस चट्टान को काटने के लिए सभी हिचकिचा रहे थे। इस विकट स्थिति में अपने जीवन को भारी जोखिम में डाल कर श्री राम लुभाय अपनी कमर में रस्सा बांध कर अपने साथियों के साथ चट्टान के उस स्थल पर जा पहुँचे जहाँ पर कटान करनी थी। उन्होंने व्यक्तिगत उदाहरण से अपनी टोली को जोखिम का सामना करने के लिए प्रेरित किया और इस प्रकार दिए गए कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया।

आद्योपान्त श्री रामलुभाय ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और नेतृत्व का परिचय दिया।

13. जी०/35482 मेसन पूर्णबीर सुन्दास

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 जुलाई, 1971)

21-22 जुलाई, 1971 की रात को पेपरखीती सब-डिवीजन में अभूतपूर्व मूसलाधार वर्षा के कारण, चेलखोला बेली प्रिज के नीचे से बहती नदी की तेज़ धार से पुल के एक ओर के पीलपायों का कुछ भाग कट गया जिससे पुल के टूट कर बह जाने का भारी खतरा पैदा हो गया था मेसन पूर्णबीर सुन्दास ने, जो नदी के पार एक गांव में रहते थे, इस इलाके में यातायात के लिए महत्वपूर्ण इस पुल की ऐसी नाजुक स्थिति देखकर स्वयं अपनी डिटैचमेंट लोकेशन के प्रभारी अधिकारी को इसके बारे में सूचित करने का निश्चय किया ताकि पुल को बचाने के लिए आवश्यक उपाय किए जा सकें हालांकि इसके लिए किसी उच्च अधिकारी ने उन्हें आदेश नहीं दिया। अपने प्राणों

के जोखिम का पूरा बोझ होते हुए भी, उन्होंने नीचे की ओर लटकते हुए पुल को पार किया लेकिन एक भारी भू-स्खलन ने उनका रास्ता रोक दिया। अपने जीवन के लिए प्रत्यक्ष खतरा उठाते हुए वे अपने लक्ष्य सिद्धि के लिए, एक तंग और खतरनाक गिना फलक पर चढ़ गए। अन्ततः वे अपने सैक्टर-इन-चार्ज के साथ क्षतिग्रस्त पुल पर नीट आए। वे काम करने वालों की छोटी टुकड़ी में जा मिले और कामचलाऊ साधनों से पुल को सहारा देकर उसे ठीक करने में सफल हुए।

आद्योपान्त मेसन पूर्णबीर सुन्दास ने उच्चकोटि के साहस, नेतृत्व और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

14. 13655243 हवलदार गोपी सिंह,
गार्ड्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1971)

11 सितम्बर, 1971 को करीमगंज के सब-डिवीजनल अधिकारी से यह सूचना मिली कि सपरकंदी और नीलम बाजार के रेलवे स्टेशनों के बीच खड़ी उत्तरी कचार के, (करीम गंज सब-डिवीजन, असम) मार्थ ईस्ट फ्रन्टियर रेलवे को 212 अप सवारी गाड़ी के एक महिला-डिब्बे में दो टाइम बम्ब पाए गए हैं। हवलदार गोपी सिंह 6 जवानों की एक टोली के साथ घटनास्थल पर पहुँचे। उन्होंने देखा कि सभी यात्री गाड़ी से बाहर आ गए हैं। वे उस डिब्बे में गए और देखा कि अत्यन्त जटिल किस्म के आयातित दो टाइम बम्ब वहाँ पड़े हैं। उन्होंने अकेले ही उनके चार्जों को हटा कर उन्हें निष्क्रिय बनाया और फिर उन्हें गाड़ी से बाहर निकाल कर नष्ट कर दिया।

इस कार्य में हवलदार गोपी सिंह ने उच्चकोटि के उदाहरणीय साहस और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

पे० ना० कृष्णमणि,
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

औद्योगिक विकास मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 24 अक्टूबर 1972

संकल्प

सं० 20-37/72 एच० ई० एम०—इस मंत्रालय के दिनांक 27 दिसम्बर, 1971 के संकल्प संख्या 20-39/71-एच० ई० एम० जिसमें वैद्युत उद्योग के अनुसंधान और विकास संगठन, भोपाल के कार्यों का पुनरीक्षण करने और उनके कार्यक्रमों के संबंध में परामर्श देने वाली समिति के विभिन्न सदस्यों को नामित किया गया था, के संदर्भ में भारत सरकार तत्काल से इस मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव श्री आर० वी० सुब्रमण्यन को वैद्युत उद्योग के अनुसंधान और विकास संगठन, भोपाल की संवीक्षा समिति का अध्यक्ष नामित करती है।

आवेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की सभी संबंधित लोगों को जानकारी दे दी जाय तथा आम सूचना के लिये इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय।

न० 30 कामत, संयुक्त सचिव,

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय

(समाज कल्याण विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 26 अक्टूबर 1972

संकल्प

सं० एफ० 7-1/72-एस० डब्ल्यू०-2—इस विभाग के संकल्प संख्या 8/11/71-एस० डब्ल्यू०-5 दिनांक 4 जनवरी, 1971 के, जिसके द्वारा शहरी क्षेत्रों में बच्चों और युवकों के लिये ममेकिन सेवाओं से संबद्ध एक सलाहकार समिति का गठन किया गया था, आंशिक आशोधन में इस समिति की रचना में निम्नलिखित परिवर्तन एतद्वारा अधिसूचित किये जाते हैं :—

1. श्री पी० के० समाल, सदस्य
संयुक्त सचिव (एन०),
समाज कल्याण विभाग,
नई दिल्ली ।
2. श्री एस० सत्यम, (श्री एम० सी०
उप सचिव (एस० डब्ल्यू०), नानावती, सलाह-
समाज कल्याण विभाग, कार, समाज
नई दिल्ली । कल्याण विभाग के
स्थान पर) ।
3. प्रो० देव राज, (प्रो० जी० मुखर्जी
निदेशक (सी० एम० ए०), के स्थान पर) ।
जन प्रशासन का भारतीय संस्थान,
नई दिल्ली ।
4. श्री ए० बी० मलिक, (श्री आर० एन०
संयुक्त सचिव, स्वास्थ्य विभाग स्वास्थ्य मधोक, संयुक्त
और परिवार नियोजन मंत्रालय, सचिव, स्वास्थ्य वि-
नई दिल्ली । भाग के स्थान पर) ।
5. श्री ईश्वर चन्द्र, (श्री एस० के०
महानिदेशक, रोजगार और प्रशिक्षण, मलिक के स्थान
श्रम और रोजगार मंत्रालय, पर) ।
नई दिल्ली ।
6. डा० के० जी० कृष्णामूर्ति, (डा० ए० बी०
संयुक्त निदेशक, बोस के स्थान
योजना आयोग, पर) ।
नई दिल्ली ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रतिलिपि समिति के सभी सदस्यों; भारत सरकार के सभी मंत्रालयों; योजना आयोग; लोक सभा सचिवालय; राज्य सभा सचिवालय; मंत्री-मंडल सचिवालय; प्रधान मंत्री सचिवालय; संसदीय कार्य विभाग तथा सभी राज्य सरकारों और संबंधित शासित क्षेत्रों के मुख्य सचिवों को भेजी जाय ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को साधारण सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय ।

ओ० पी० सिंह भाटिया, अवसर सचिव

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

नई दिल्ली, दिनांक 13 अप्रैल 1972

संकल्प

सं० 36/1/72-एम०—भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा भारतीय विश्वविद्यालयों में जहां पुरातत्वीय और अन्य संबंधित विषयों पढ़ाई जाती हैं और जहां भविष्य के लिये पुरातत्वेता प्रशिक्षित किये जाते हैं । भारत की विद्वत संस्थाओं और राज्य सरकारों के पुरातत्व सर्वेक्षण की गतिविधियों के और अधिक संपर्क में लाने के हेतु, राष्ट्रपति आदेश देते हैं कि पहली मई 1972 से चार वर्ष के लिये केंद्रीय पुरातत्व सलाहकार बोर्ड का पुनःगठन किया जाता है जिसका संकलन तथा कार्य निम्नलिखित होगा :—

संरचना

अध्यक्ष

शिक्षा, समाज कल्याण एवं संस्कृति मंत्री अथवा उनकी अनुपस्थिति में राज्य मंत्री अथवा पुरातत्व के मामलों से संबंधित उप मंत्री ।

सदस्य

सचिव, भारतीय सरकार, शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्रालय ।

महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ।

निदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली अथवा उनकी अनुपस्थिति में संग्रहालय का अगला सबसे प्रवर अधिकारी ।

निदेशक, भारत का मानव विज्ञान सर्वेक्षण अथवा उनकी अनुपस्थिति में सर्वेक्षण का अगला प्रवर अधिकारी ।

महानिदेशक, पर्यटन अथवा उनकी अनुपस्थिति में संयुक्त पर्यटन महानिदेशक ।

संसद के तीन सदस्य, एक राज्य सभा द्वारा एवं दो लोक-सभा द्वारा चुने हुये एक एक सदस्य

- (1) भारतीय इतिहास कांग्रेस
- (2) अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन,
- (3) एशियाटिक परिषद्-कलकत्ता,
- (4) भारतीय पुरातत्व परिषद्, एवं
- (5) भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्

राज्य सरकारों का एक एक प्रतिनिधि जो सामान्यता राज्य में पुरातत्व विभाग का संचालन और जहां किसी कारणवश यह संभव न हो तो राज्य सरकारों के सचिव जो पुरातत्व से संबंध रखते हों ।

विश्वविद्यालयों द्वारा सिफारिश किये गये भारतीय इतिहास संस्कृति और पुरातत्व के आचार्यों में से भारत सरकार द्वारा नाम-जद किये गये पांच आचार्य सदस्य ।

भारत सरकार द्वारा नामजद दो वैज्ञानिक जिनकी रुचि पुरातत्व विद्या में हो ।

व्यक्तिगत योग्यता के आधार पर भारत सरकार द्वारा नामजद पांच सदस्य जिनमें से दो सदस्य उन संस्थाओं में से होंगे जो वास्तव में पुरातत्व उत्खनन/सर्वेक्षण कार्य में संलग्न हों ।

सदस्य सचिव

संयुक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ।

कार्य

इस बोर्ड के सदस्य भारतीय पुरातत्व संबंधी विषयों पर भारत सरकार को परामर्श देंगे, तथा ऐसे विषयों पर विचार हेतु सुझाव भी दे सकते हैं । विषय विषयों पर विचार करने तथा उन पर रिपोर्ट देने के लिये बोर्ड-उपसमितियां भी स्थापित कर सकती है ।

2. सामान्यता बोर्ड की बैठक अध्यक्ष द्वारा निश्चित किये स्थान और समय में दो वर्ष में एक बार होगी ।

3. संसद के सदस्यों की अवधि इस बोर्ड में तभी होगी जब तक वे संसद के सदस्य रहें जिसने उन्हें चुना है ।

4. राष्ट्रपति यह आदेश भी देने है कि केंद्रीय पुरातत्व सलाहकार बोर्ड की एक स्थायी समिति होगी जिसका संकलन तथा कार्य निम्नलिखित होगा :—

संकलन**अध्यक्ष तथा संयोजक**

महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

सदस्य

समिति के पांच सदस्य बोर्ड के सदस्यों द्वारा अपने में से ही चुने जायेंगे ।

कार्य

स्थायी समिति का सामान्यता यह कर्तव्य होगा कि वह बोर्ड को ऐसी सलाह दे कि देश में पुरातत्व के कार्यों को किस प्रकार बढ़ावा दिया जाय । ऐसी सभी रिपोर्टों और विषयों पर विचार करेगी जो इसे भेजी जायें और बोर्ड की बैठक की कार्य सूची के विषयों पर भी अपनी राय देगी, ऐसे अन्य कार्य करेगी जिन्हें सरकार या बोर्ड या समिति के अध्यक्ष इसे सौंपें । बोर्ड आवश्यकतानुसार उप-समितियां नियुक्त करेगा जिन्हें सहयोजित करने का अधिकार होगा । इसकी बैठक वर्ष में दो बार से अधिक नहीं होगी ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेज दी जाये ।

वी० वी० लाल

महानिदेशक,

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

पदेन संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 1 नवम्बर 1972

सं० 35/1/72-एम०—“भारत सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, के संकल्प संख्या 36/1/72-एम०, दिनांक 13 अप्रैल 1972 के अनुसरण में भारत सरकार/विश्वविद्यालयों से प्राप्त सिफारिशों में से, राज्य सभा/लोक सभा द्वारा निर्वाचित अथवा विस्वत संस्थाओं/राज्य सरकारों/सभापति द्वारा मनोनीत निम्नलिखित व्यक्ति पुरातत्व केंद्रीय सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त किये जाने हैं ।” संसद द्वारा चुने गये सदस्य

- (1) श्रीमती लक्ष्मी कुमारी जण्डावन, (राज्य सभा), लक्ष्मी निवास, वाणी पार्क, जगदीश मार्ग, जयपुर-6 ।

- (2) श्री एच० एन० मुखर्जी, (लोक सभा) 21 रक्षा गंज रोड, नई दिल्ली ।

- (3) श्री रघु प्रताप मिह (लोक सभा) ।

अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन का प्रतिनिधि

प्रोफेसर आर० एन० डांडेकर, जैनरल सैक्रेटरी भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का प्रतिनिधि

प्रोफेसर आर० एस० शर्मा

इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

राज्य सरकारों के प्रतिनिधि

- (1) श्री एम० एच० राव, सैक्रेटरी एवं निदेशक पुरातत्व विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, भूपाल ।

- (2) श्री जे० एम०, निदेशक, पुरातत्व विभाग, गुजरात सरकार, अहमदाबाद ।

- (3) श्री एन० गोपालकृष्णन उद्दिष्टन, निदेशक पुरातत्व विभाग, केरल सरकार, त्रिवेंद्रम ।

- (4) श्री पी० सी० दास गुप्ता, निदेशक पुरातत्व विभाग, पश्चिमी बंगाल सरकार, कलकत्ता ।

- (5) श्री के० पी० दत्त, उप-निदेशक, शिक्षा विभाग, त्रिपुरा सरकार, अगरतला ।

- (6) निदेशक सांस्कृतिक विभाग एवं म्यूजियम, भुवनेश्वर ।

- (7) श्री एच० एन० दास मोहापत्रा, निदेशक, पुरातत्व विभाग एवं म्यूजियम असम सरकार, गोहाटी ।

- (8) श्री एस० के० मिश्र, सचिव पुरातत्व विभाग, हरियाणा सरकार, चंडीगढ़ ।

- (9) श्री शिरोमणि शर्मा, सचिव सांस्कृतिक विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ।

- (10) डा० वी० पी० सिन्हा, निदेशक, पुरातत्व विभाग एवं म्यूजियम, बिहार सरकार, पटना ।

- (11) श्री एम० ए० बहीदखान, निदेशक, पुरातत्व विभाग एवं म्यूजियम, आंध्र प्रदेश सरकार, हैदराबाद ।

- (12) सचिव, शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार, सचिवालय, बम्बई-32 ।

- (13) श्री आर० सी० अग्रवाल, निदेशक, पुरातत्व विभाग एवं म्यूजियम, राजस्थान सरकार, जयपुर ।

- (14) श्री आर० नागास्वामी,
निदेशक पुरातत्व विभाग
3/4 माउथ बैक रोड, मद्रास-28।
- (15) श्री भनेश्वर सिंह चहल,
उप-सचिव पंजाब सरकार,
शिक्षा-विभाग, चंडीगढ़।
- (16) श्री एल० तोमचा सिंह,
निदेशक, शिक्षा विभाग,
मनीपुर सरकार, इम्फाल।
- (17) संचालक, पुरातत्व विभाग,
मैसूर सरकार, मैसूर।
- (18) श्री फिदा मोहम्मद हसनैन
निदेशक एल० आर० एम०
जम्मू और श्रीनगर सरकार, श्रीनगर।

विश्वविद्यालयों के सदस्य

- (1) प्रोफेसर एम० वी० देव,
विभागाध्यक्ष इतिहास एवं पुरातत्व,
नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।
- (2) प्रोफेसर एच० डी० संकालिया,
इकन कालिज, उत्तर स्नातक तथा अनुसंधान संस्थान,
पूना।
- (3) प्रोफेसर के० ए० निजामी,
उप कुलपति मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़।
- (4) प्रोफेसर एस० आर० दास,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
15/6 जमीर लेन, कलकत्ता-19।
- (5) प्रोफेसर आर० नरसिंह राव,
विभागाध्यक्ष इतिहास एवं पुरातत्व,
उसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।

वैज्ञानिक

- (1) डा० डी० लाल,
टाटा संस्थान का मौलिक अनुसंधान,
होमी भाभा रोड, बम्बई-5।
- (2) डा० विष्णु मित्र,
बीरबल साहूनी का पेलोपोटेनी संस्थान,
लखनऊ।

केंद्रीय सरकार के सदस्य

- (1) श्री ए० घोष,
'वनकुली गुडगांव रोड, नई दिल्ली।
- (2) प्रोफेसर वी० वी० लाल,
वरिष्ठ प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय इतिहास सांस्कृतिक तथा पुरातत्व,
अध्ययन शाला जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
- (3) प्रोफेसर एस० सी० मिश्र,
विभागाध्यक्ष इतिहास,
एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ोदा।

- (4) प्रोफेसर जी० आर० शर्मा,
विभागाध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास, 'सांस्कृतिक
एवं पुरातत्व इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- (5) डा० टी० वी० महालिंगम,
रिटायर्ड पुरातत्व प्रोफेसर,
रामा कृष्ण नगर, राजा अन्नामलाई पुरम,
मद्रास-28।

म० न० देशपाण्डे, महानिदेशक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
पदेन संयुक्त सचिव

संचार मंत्रालय

नियमावली

नई दिल्ली, दिनांक 25 नवम्बर 1972

सं० ए० 12025/3/72-सी० ऐड पी०—संबंधित मंत्रालयों/
विभागों की सहमति से निम्नलिखित रिक्त पदों को भरने के लिये
संघ लोक सेवा आयोग द्वारा 1973 में ली जाने वाली प्रतियोगिता
परीक्षा के नियम सर्व साधारण की सूचना के लिये प्रकाशित किये
जाते हैं।

श्रेणी I

- (1) बेतार आयोजना और समन्वय स्कन्ध/अनुश्रवण संघ-
टन, संचार मंत्रालय में इंजीनियर।
- (2) विदेश संचार सेवा, संचार मंत्रालय में उप-कार्यभारी
इंजीनियर।
- (3) आकाशवाणी सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सहायक
स्टेशन इंजीनियर।
- (4) नागर विमानन विभाग, पर्यटन और नागर विमानन
मंत्रालय में तकनीकी अधिकारी।
- (5) नागर विमानन विभाग, पर्यटन और नागर विमानन
मंत्रालय में संचार अधिकारी।
- (6) तकनीकी विकास महानिदेशालय, औद्योगिक विकास
मंत्रालय में सहायक विकास अधिकारी (इंजीनियरी);
और
- (7) भारतीय नौसेना, रक्षा मंत्रालय में उप-आयुध आपूर्ति
अधिकारी ग्रेड-II।

श्रेणी II

- (1) आकाशवाणी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सहायक
इंजीनियर।
- (2) विदेश संचार सेवा, संचार मंत्रालय में सहायक इंजी-
नियर।
- (3) विदेश संचार सेवा, संचार मंत्रालय में तकनीकी सहा-
यक (श्रेणी II अराजपक्षित)।

कोई भी उम्मीदवार उपर्युक्त एक या अधिक पदों के लिये
आयोजित प्रतियोगिता में सम्मिलित हो सकता है। उसे अपने
आवेदन-पत्र में अधिमान्यतः वरीयताक्रम से उन पदों को स्पष्ट
रूप से दिखाना चाहिये जिनके लिये वह प्रतियोगी रहना चाहते
हैं।

किमी उम्मीदवार द्वारा पदों के संबंध में, जिनके लिये वे प्रति-योगिता में भाग ले रहे हैं, दिखाई गई वरीयता को बदलने के लिये की प्रार्थना पर तब तक विचार नहीं किया जायगा जब तक कि ऐसी अदला-बदली की प्रार्थना संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा के अंतिम परिणाम घोषित करने की तारीख से 10 दिन पहले तक प्राप्त न हो जाय।

2. आयोग द्वारा जारी किये गये नोटिस के माध्यम से परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरे जाने वाले स्थानों की संख्या बताई जायगी। सरकार द्वारा निर्धारित स्थान अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिये आरक्षित रखे जायेंगे।

अनुसूचित जाति/आदिम जाति का अर्थ है वे जातियाँ/आदिम जातियाँ जिनका संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950, संविधान (अनुसूचित जाति) (भाग ग राज्य) आदेश, 1950, और संविधान (अनुसूचित आदिम जाति) (भाग ग राज्य) आदेश, 1951, जो बम्बई पुनर्गठन अधिनियम, 1960 और पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966, संविधान (जम्मू और काश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश, 1956, संविधान (अन्डमान और निकोबार द्वीप) अनुसूचित जाति आदेश, 1959, संविधान (दादरा और नागर हवेली), अनुसूचित जाति आदेश, 1962, संविधान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित आदिम जाति आदेश 1962, संविधान (पाण्डिचेरी) अनुसूचित जाति आदेश, 1964, संविधान (अनुसूचित आदिम जाति) (उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967, संविधान (गोआ, दमन और दीव) अनुसूचित जाति आदेश, 1968, संविधान (गोआ दमन और दीव) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1968 और संविधान (नागालैंड) अनुसूचित जाति आदेश, 1970 के साथ पठित अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाति की सूचियाँ (संशोधन) आदेश, 1956 से संशोधित हैं।

3. परीक्षा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा इस नियमावली के परिशिष्ट I में दिये गये तरीके से आयोजित की जायगी।

आयोग द्वारा परीक्षा की तारीखें और स्थान तय किये जायेंगे।

4. उम्मीदवार

- (क) भारत का नागरिक; या
- (ख) सिक्किम की प्रजा; या
- (ग) नेपाल की प्रजा; या
- (घ) भूटान की प्रजा; या
- (ङ) निम्नलिखित शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से बसने के लिये 1 जनवरी, 1962 से पूर्व भारत में आ गया व्यक्ति; या
- (च) वह व्यक्ति जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से पाकिस्तान, लंका और पूर्वी अफ्रीका के केनिया, युगांडा तथा संयुक्त तंजानिया गणराज्य (भूतपूर्व टांगानिका और जंजीबार) देशों से आया है, भारतीय मूल का प्रवासी होना चाहिये,

वर्तते उपर्युक्त श्रेणी (ग), (घ), (ङ) और (च) के अन्तर्गत आने वाले उम्मीदवारों के पक्ष में पात्रता का प्रमाण-पत्र भारत सरकार द्वारा जारी कर दिया गया हो।

उस उम्मीदवार को जिस के लिये पात्रता प्रमाण-पत्र आवश्यक है सरकार द्वारा आवश्यक प्रमाण-पत्र दिये जाने की शर्त के अधीन परीक्षा में बैठने और अस्थाई रूप से नियुक्त किये जाने की अनुमति दी जा सकती है।

5. (क) इस परीक्षा के उम्मीदवार की आयु 20 वर्ष की होनी चाहिये और 1 जनवरी, 1973 को उसकी आयु 30 वर्ष नहीं होनी चाहिये अर्थात् उसका जन्म 2 जनवरी, 1943 से पहले और 1 जनवरी, 1953 के बाद का नहीं होना चाहिये। शर्त यह है कि उम्मीदवार, जिसका जन्म जनवरी 1953 के बाद लेकिन 1 अगस्त, 1953 के बाद नहीं हुआ है विशेष मामले में इस परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र होगा। यह रियायत केवल 1943 में आयोजित परीक्षा के लिये होगी।

(ख) नीचे लिखे वर्गों के सरकारी कर्मचारियों के मामलों में आयु की ऊपरी सीमा 30 वर्ष से 35 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है यदि वे नीचे बताये कालम 1 में दिये गये विभाग/कार्यालय में नियुक्त हों और उनके सामने कालम 2 में दिये गये अनुरूपी पद (पदों) की परीक्षा के लिये आवेदन द :-

(i) वह उम्मीदवार जो संबद्ध विभाग/कार्यालय विशेष में मौलिक रूप से स्थायी पद पर हों। यह छूट उस परीक्षाधीन व्यक्ति को जिसे विभाग/कार्यालय में स्थायी पद पर नियुक्त किया गया है परीक्षाधीन अवधि के दौरान अनुमत्य नहीं होगी।

(ii) वह उम्मीदवार जो 1 जनवरी, 1973 को किमी विशेष विभाग/कार्यालय में लगातार अस्थायी सेवा में है।

कालम 1	कालम 2
वेतार आयोजना तथा समन्वय स्कंध अनुश्रवण संघटन	इंजीनियर (श्रेणी I) उप कार्यभारी इंजीनियर (श्रेणी I) सहायक इंजीनियर (श्रेणी II)
विदेश संचार सेवा	तकनीकी सहायक (श्रेणी II—अराजपत्रित)
आकाशवाणी	सहायक स्टेशन इंजीनियर (श्रेणी I) सहायक इंजीनियर (श्रेणी II)
सिविल विमानन विभाग तकनीकी विकास महा-निदेशालय	तकनीकी अधिकारी (श्रेणी I) सहायक विकास अधिकारी (इन्जीनियरिंग) श्रेणी-I संचार अधिकारी (श्रेणी I)
भारतीय नौसेना	उप-आयुध-आपूर्ति अधिकारी ग्रेड-II (श्रेणी I)।

बशर्त किसी भी उम्मीदवार को परीक्षा में बैठने के लिए विभागीय उम्मीदवार के रूप में अनुमत्य आयु की ऊपरी सीमा की छूट में तीन से अधिक बार नहीं दी जाएगी।

(ग) उपर्युक्त आयु की सीमा अधिकतम नीचे लिखे मामलों में आगे बढ़ाई जा सकती है :—

- (i) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिकतम 5 वर्ष तक।
- (ii) यदि उम्मीदवार पूर्वी पाकिस्तान से भारत में 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद लेकिन 25 मार्च 1971 के पहले आया वास्तविक विस्थापित हो तो अधिकतम 3 वर्ष तक;
- (iii) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो और पूर्वी पाकिस्तान से आया हुआ वास्तविक विस्थापित भी हो, तथा भारत में 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद आया हो, तो अधिकतम 8 वर्ष तक;
- (iv) यदि उम्मीदवार पांडिचेरी संघ-क्षेत्र का निवासी हो और उसने किसी स्तर पर फ्रांसीसी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण की हो, तो अधिकतम तीन वर्ष तक;
- (v) यदि उम्मीदवार श्रीलंका (जिसे पहले सीलोन कहा जाता था) से प्रत्यावर्तित वास्तविक भारत मूलक व्यक्ति हो और अक्तूबर, 1964 के भारत-लंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद भारत आया है, तो अधिकतम तीन वर्ष तक;
- (vi) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो और श्रीलंका (जिसे पहले सीलोन कहा जाता था) से प्रत्यावर्तित वास्तविक भारत-मूलक व्यक्ति हो और अक्तूबर, 1964 के भारत-लंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद भारत आ गया हो, तो अधिकतम 8 वर्ष तक;
- (vii) यदि उम्मीदवार भारत-मूलक हो और केन्या, युगान्डा या संयुक्त तंजानिया गणराज्य (भूतपूर्व टांगानिका और जंजीबार) से भारत आया हो, तो अधिकतम 3 वर्ष तक;
- (viii) यदि उम्मीदवार बर्मा से प्रत्यावर्तित वास्तविक भारत-मूलक व्यक्ति हो और 1 जून, 1963 को या उसके बाद भारत आ गया हो तो अधिकतम 3 वर्ष तक;

(ix) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो और बर्मा से प्रत्यावर्तित वास्तविक भारत-मूलक व्यक्ति भी हो तथा 1 जून 1963 को या उसके बाद भारत आ गया हो तो अधिकतम 8 वर्ष तक;

(x) यदि उम्मीदवार रक्षा सेवाओं का ऐसा कामकाज हो जो किसी अन्य देश के साथ युद्ध में या उपद्रव वाले क्षेत्र में कार्यरत रहने हुए विकलांग हो गया हो और इसके परिणामस्वरूप सेवामुक्त कर दिया गया हो तो, अधिकतम 3 वर्ष। किन्तु यह छूट उस उम्मीदवार को नहीं दी जाएगी जो यह परीक्षा पहले ही पांच बार दे चुका है;

(xi) यदि उम्मीदवार रक्षा सेवाओं का ऐसा कामकाज हो जो किसी अन्य देश के साथ युद्ध या उपद्रव वाले क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए विकलांग हो गया हो और इसके परिणामस्वरूप सेवा मुक्त कर दिया गया हो तथा जो अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का भी हो तो अधिकतम 8 वर्ष तक। किन्तु यह छूट उस उम्मीदवार को नहीं दी जाएगी जो पहले ही दस बार यह परीक्षा दे चुका हो; और

(xii) यदि उम्मीदवार गोआ, दमन और दीव के संघ क्षेत्र का निवासी हो, तो अधिकतम 3 वर्ष।

(घ) गोआ, दमन और दीव के स्वाधीनता सैनिकी जो गोआ, दमन और दीव में पुर्तगाली शासन के कर्मचारी नहीं थे और जिन्होंने स्वाधीनता की लड़ाई में भाग लिया था तथा इसके परिणामस्वरूप भूतपूर्व पुर्तगाली शासन के अधीन कम से कम छः माह की जेल या तजरबन्दी भोगी है, परीक्षा में बैठ सकेंगे बशर्त 1 जनवरी, 1972 को उनकी आयु 35 वर्ष की न हो गई हो।

ध्यान दें (i) उन उम्मीदवारों को जो नियम 5 (घ) के अधीन आयु सीमा सम्बन्धी छूट चाहते हैं, उपर्युक्त नियम 5 (ख) और 5 (ग) के अधीन आयु-सीमा में छूट पाने के हकदार नहीं होंगे।

ध्यान दें (ii) इस नियम के प्रयोजन के लिए यदि उम्मीदवार इस परीक्षा में एक या दो पदों के लिए बैठा हो तो वह परीक्षा के अन्तर्गत सभी पदों के लिए बैठा हुआ माना जाएगा। यदि कोई उम्मीदवार एक या अधिक विषयों में परीक्षा देता है तो उस परीक्षा में बैठा हुआ माना जाएगा।

ध्यान दें (iii) यदि किसी उम्मीदवार को उपर्युक्त (ख) में उल्लिखित आयु की छूट के साथ परीक्षा में बैठने की स्वीकृति दी गई हो तो उसकी उम्मीदवारी तब रह कर दी जाएगी जब परीक्षा के लिए आवेदन-पत्र दे देने के बाद, वह नौकरी से इस्तीफा दे दे या उसका विभाग उसके परीक्षा में बैठने के पूर्व या उसके बाद उसे नौकरी से निकाल दें। किन्तु परीक्षा के लिए आवेदन-पत्र के दे देने के बाद उम्मीदवार के उसके पद या सेवा से छटनी हो जाए तो, वह परीक्षा देने का पात्र बना रहेगा।

यदि परीक्षा के लिए विभाग का आवेदन-पत्र दे देने के बाद उम्मीदवार का स्थानान्तरण किसी अन्य विभाग/कार्यालय में हो जाए तो भी उस पद के लिए आयु सम्बन्धी विभागीय छूट के साथ प्रतियोगिता में बैठने में उसकी पात्रता में कोई अन्तर नहीं आएगा जिसके लिए वह स्थानान्तरण से पहले हकदार था, बशर्ते उसका आवेदन-पत्र उसके मूल विभाग ने अंग्रेषित किया हो।

उपर्युक्त उपबन्धों को छोड़कर विहित आयु-सीमा किसी भी मामले में नहीं बढ़ाई जाएगी।

6. उम्मीदवार के लिए आवश्यक है कि :—

- (क) उसने भारत के केन्द्रीय या किसी राज्य विधान मण्डल के अधिनियम द्वारा निगमित विश्वविद्यालय की अथवा संसद के किसी अधिनियम द्वारा स्थापित किसी अन्य शिक्षा संस्था की अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मानी गई संस्थाओं की इंजीनियरी की डिग्री प्राप्त की हो; या
- (ख) उसने इंस्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स (इंडिया) की सह-सदस्यता की परीक्षा के खण्ड क और ख पास किया हो;
- (ग) ऐसे विदेशी विश्वविद्यालयों/कालेजों/संस्थाओं की इंजीनियरिंग डिग्री/डिप्लोमा, उन शर्तों के अधीन प्राप्त किया हो जिन्हें सरकार ने समय-समय पर मान्यता दी हो;
- (घ) “इंस्टीट्यूशन आफ टेलीकम्यूनिकेशन इंजीनियर्स (इंडिया) की स्नातक सदस्यता परीक्षा पास की हो; या”
- (ङ) बेतार संचार, इलेक्ट्रानिकी, रेडियो भौतिकी या रेडियो इंजीनियरी के विशेष विषय सहित एम० एस० सी० या उमके समकक्ष डिग्री प्राप्त की हो; या
- (च) “इंस्टीट्यूशन आफ इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड रेडियो इंजीनियर्स, लन्दन” की नवम्बर, 1959 के ब्राइ की ग्रेजुएट मेम्बरशिप परीक्षा पास की हो।

“दि इंस्टीट्यूशन आफ इलेक्ट्रानिक्स एण्ड रेडियो इंजीनियर्स, लन्दन” की ग्रेजुएट मेम्बरशिप नवम्बर, 1959 में पहले आयोजित परीक्षा भी निम्नलिखित शर्तों के साथ स्वीकार की जाती है :—

- (1) यदि उम्मीदवार ने नवम्बर, 1959 के पहले की परीक्षा पास की हो तो, यह आवश्यक है कि वह 1959 के बाद की ग्रेजुएट मेम्बरशिप परीक्षा योजना के अनुसार निम्नलिखित अतिरिक्त प्रश्न-पत्रों में भी बैठे और उत्तीर्ण हुआ हो :—

(i) रेडियो और इलेक्ट्रानिक-I के सिद्धान्त (अनुभाग ‘क’)

(ii) गणित II (अनुभाग ‘ख’)

- (2) ऊपर की शर्तें (1) पूरी करने के प्रमाणस्वरूप सम्बन्धित उम्मीदवार को “इंस्टीट्यूशन आफ इलेक्ट्रानिक्स एण्ड रेडियो इंजीनियर्स, लन्दन” का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा।

नोट 1 :—अपवाद स्वरूप आयोग ऐसे उम्मीदवारों को भी शैक्षणिक दृष्टि से योग्य मान सकता है जिनके पास इस नियम में निर्धारित कोई योग्यताएं तो न हों किन्तु जिन्होंने अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित ऐसी परीक्षाएं पास की हों जिनका स्तर आयोग की राय में परीक्षा में प्रवेश के दृष्टि से उचित सिद्ध हो।

नोट 2 :—यदि उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा में बैठ चुका है जिसमें पास हो जाने पर, वह इस परीक्षा में बैठने का पात्र हो जाता है तो, वह परीक्षाओं में प्रवेश के लिए आवेदन कर सकता है भले ही उक्त परीक्षा के परिणाम की सूचना उसे तब तक न मिली हो। जो उम्मीदवार ऐसी कोई अर्हक परीक्षा में बैठना चाहता है आवेदन कर सकता है, बशर्ते क्रियात्मक प्रशिक्षण/प्रायोजना कार्य सहित अर्हक परीक्षा इस प्रतियोगिता परीक्षा के शुरू होने से पहले पूरी हो जाने वाली हो। ऐसे उम्मीदवारों को परीक्षा में तो बैठने दिया जाएगा बशर्ते वे अन्यथा इसके पात्र हों लेकिन ऐसी अभिस्वीकृति अनन्तिम ही मानी जाएगी और यदि उम्मीदवार प्रशिक्षण/प्रायोजना कार्य सहित सम्बन्धित परीक्षा में सफल होने का प्रमाण शीघ्रातिशीघ्र प्रस्तुत न कर पाए तो इस अभिस्वीकृति को रद्द किया जा सकता है। हर हालत में उन्हें अर्हक परीक्षा पास कर लेने के प्रमाण इस परीक्षा के शुरू होने के बाद दो महीने के भीतर भेज देने पड़ेंगे।

नोट 3 :—यदि किसी उम्मीदवार के पास किसी विदेशी विश्व-विद्यालय की ऐसी डिग्री हो जिसे सरकार से मान्यता प्राप्त न हो लेकिन यह उम्मीदवार यदि अन्यथा योग्य हो तो वह भी आवेदन कर सकता है और उसे भी आयोग के विवेकानुसार परीक्षा में बैठने दिया जा सकता है।

7. उम्मीदवार को आयोग के नोटिस के अनुबंध 1 के अनुसार निर्धारित फीस अवश्य देनी चाहिए।

8. पहले से ही सरकारी नौकरी में लगे हुए उम्मीदवार को चाहे वह स्थायी हो अथवा अस्थायी या काम के अनुसार वेतन पाने वाला वह कर्मचारी जिसकी नैमित्तिक या रोजनदारी पर नियुक्ति नहीं है परीक्षा में बैठने के लिए विभागाध्यक्ष या सम्बन्धित कार्यालय में अनुमति प्राप्त कर लेनी चाहिए।

9. कोई उम्मीदवार परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र है या नहीं इस सम्बन्ध में आयोग का निर्णय अन्तिम होगा।

10. जब तक उम्मीदवार के पास परीक्षा में प्रवेश के लिए आयोग का प्रमाण-पत्र न होगा, तब तक उस परीक्षा में प्रवेश नहीं दिया जायगा।

11. किसी उम्मीदवार की ओर से अपनी उम्मीदवारी का समर्थन प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार के साधनों के द्वारा किया गया किसी भी प्रकार का प्रयास, उसे प्रवेश के लिए अयोग्य कर देगा।

12. कोई भी उम्मीदवार जो किसी अन्य व्यक्ति के स्थान पर परीक्षा देने का या जाली अथवा छेड़े गए प्रलेख प्रस्तुत करने का या गलत अथवा झूठे विवरण देने का या तथ्यात्मक सूचना छिपाने का या परीक्षा में प्रवेश के लिए अन्य प्रकार से किन्हीं दूसरे अनियमित या अनुचित साधनों का सहारा लेने का या परीक्षा भवन में अनुचित तरीकों का उपयोग करने अथवा उपयोग का प्रयास करने का या परीक्षा भवन में अशुभ व्यवहार का आयोग द्वारा दोषी घोषित किया गया हो तो, आपराधिक अध्यारोपण का भागीदार बनने के साथ ही साथ—

(क) स्थायी रूप से या किसी निर्दिष्ट अवधि के लिए,

(i) आयोग द्वारा उम्मीदवारों को प्रवरण हेतु आयोजित किसी भी परीक्षा में किसी साक्षात्कार (इंटरव्यू) में उपस्थित होने से; और

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा अपने अधीन नौकरी पर रखने से, विरजित कर दिया जाएगा।

(ख) यदि वह पहले से ही सरकारी नौकरी में हो तो, उपर्युक्त नियमावली के अन्तर्गत, उसके विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जाएगी।

13. आयोग स्वविवेक से लिखित परीक्षाओं के लिए निर्धारित न्यूनतम अर्हक अंक प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को व्यक्तित्व परीक्षण हेतु साक्षात्कार (इंटरव्यू) के लिए बुलाया जाएगा।

14. परीक्षा के बाद आयोग प्रत्येक उम्मीदवार द्वारा अन्ततः प्राप्त कुल अंकों के आधार पर बताए गए गुणानुक्रम से, सभी उम्मीदवारों की सूची बनाएगा और परीक्षा के आधार पर जितनी अनारक्षित रिक्तियों को भरे जाने का निर्णय किया गया हो, उतने उम्मीदवारों को उसी क्रम में नियुक्ति की सिफारिश करेगा।

यह यह है कि आयोग अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिए आरक्षित रिक्त स्थानों के नियतांश (कोटे) की उस कमी को पूरा करने हेतु, जिसे आम मानक के

आधार पर पूरा नहीं किया जा सकता, घटाए मानक के अनुसार अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाति के उम्मीदवारों की नियुक्ति की सिफारिश कर सकता है, फिर चाहे परीक्षा के योग्यता क्रम में उनकी प्रस्थिति (रैंक) कुछ भी कपी न हो, बशर्ते उक्त पदों पर नियुक्ति के लिए से उम्मीदवार अन्यथा उपयुक्त हो।

15. आयोग परीक्षा के परिणाम की उम्मीदवारों को सूचना देने का तरीका और उसका स्वरूप, अपने विवेक के अनुसार तय करेगा और परिणाम के सम्बन्ध में आयोग उम्मीदवार के साथ कोई पत्र व्यवहार नहीं करेगा।

16. परीक्षा के परिणामों के आधार पर नियुक्तियां करते समय आवेदन-पत्र दते समय विभिन्न पदों के लिए व्यक्त उम्मीदवारों की रुचि का भी समुचित ध्यान रखा जाएगा।

17. आवश्यक जांच के बाद सरकार जब तक इस बात से संतुष्ट न हो जाए कि लोक सेवा में नियुक्ति के लिए उम्मीदवार सभी दृष्टि से उपयुक्त है, तब तक परीक्षा में सफलता प्राप्त उम्मीदवार को नियुक्ति का कोई अधिकार नहीं होगा।

18. उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए और उसमें ऐसा कोई शारीरिक दोष न हो जो इस सेवा के अधिकारी के रूप में, उसके कर्तव्य पालन में बाधक हो। सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी, जो भी हो, द्वारा निर्धारित शारीरिक जांच के बाद जिस उम्मीदवार के बारे में यह पाया जाएगा कि उसका स्वास्थ्य आवश्यक स्तर का नहीं है तो, उसे नियुक्त नहीं किया जाएगा। व्यक्तित्व-परीक्षा के लिए योग्य घोषित उम्मीदवारों को, जिस स्थान पर साक्षात्कार (इंटरव्यू) के लिए बुलाया जाएगा, उसी स्थान पर साक्षात्कार के तत्काल पहले या बाद में शारीरिक जांच भी की जाएगी। चिकित्सा बोर्ड की फीस 16.00 रुपये उम्मीदवार को देने होंगे। उम्मीदवार की शारीरिक जांच हो जाने का अर्थ या आशय यह नहीं कि उसकी नियुक्ति के बारे में अग्रिम विचार किया जाएगा।

निराशा से बचने के लिए उम्मीदवारों को परामर्श दिया जाता है कि परीक्षा में प्रवेश हेतु आवेदन करने से पूर्व ही वे अपनी परीक्षा सिविल सर्जन की हैसियत के किसी सरकारी चिकित्सा अधिकारी से करा लें। राजपत्रिता पदों पर नियुक्ति से पूर्व उम्मीदवार की स्वास्थ्य परीक्षा किस प्रकार की होगी इसका व उस परीक्षा में अपेक्षित स्तरों का विवरण परिशिष्ट II में दिया गया है। रक्षा सेवा के भूतपूर्व विकलांग कर्मिकों के लिए प्रत्येक पद की आवश्यकताओं के अनुरूप उक्त स्तरों में शिथिलता की जाएगी।

19. कोई भी व्यक्ति,

(क) जिसने किसी ऐसे व्यक्ति से विधिपूर्वक विवाह कर लिया हो जिसकी पत्नी/जिसका पति जीवित हो; या

(ख) जिसने अपनी पत्नी/अपने पति के जीवित रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति से विधिपूर्वक विवाह कर लिया हो;

नौकरी में नियुक्ति का पात्र नहीं होगा।

शर्त यह है कि केन्द्रीय सरकार, यदि इस बात से सन्तुष्ट हो जाए कि ऐसे व्यक्तियों और दूसरे पक्ष पर लागू होने वाली स्वधर्म विधि के अन्तर्गत इस प्रकार का विवाह अनुज्ञेय है और ऐसा करने के लिए अन्य कारण भी हैं तो किसी भी व्यक्ति पर यह नियम के लागू न किए जाने की छूट दे सकेगी।

20, जिन पदों के लिए इस परीक्षा द्वारा भरती की जा रही है, उनका संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट III में दिया गया है।

कामेश्वर दयाल श्रीवास्तव, अवर सचिव

परिशिष्ट-1

1. परीक्षा का संचालन नीचे बताई गई योजना के अनुसार किया जाएगा :—

भाग-i—नीचे बताए अनुसार अनिवार्य और वैकल्पिक प्रश्न-पत्र I इन प्रश्न-पत्रों के लिए निर्धारित स्तर और पाठ्य विवरण इस परिशिष्ट की अनुसूची में दिया गया है।

भाग-ii—आयोग द्वारा व्यक्तित्व परीक्षा हेतु बुलाया जाने वाले उम्मीदवारों के व्यक्तित्व परीक्षण के लिए अधिकतम अंक 200 होंगे। (कृपया नीचे पैरा 6 देखिए)।

2. लिखित परीक्षा नीचे लिखे विषयों में होगी :—

विषय	समय	अधिकतम अंक
1	2	3
(घंटे)		
(क) अनिवार्य		
(1) अंग्रेजी निबन्ध	1½	50
(2) सामान्य अंग्रेजी	1½	50
(3) सामान्य ज्ञान और सामायिक मामले	1½	50
(4) विज्ञान का इतिहास	1½	50
(5) रेडियो भौतिकी	3	100
(6) इलेक्ट्रानिक सामग्री और अवयव	3	100
(7) अनुप्रयुक्त इलेक्ट्रानिकी परिपथ	3	100
(8) विद्युत् और यांत्रिक इंजीनियरी	3	100
(विद्युत् इंजीनियरी के लिए 60 अंक और यांत्रिक इंजीनियरी के लिए 40 अंक)		

1	2	8
(ख) वैकल्पिक :—निम्नलिखित विषयों में से कोई से दो विषय :—		
(1) ध्वनि विज्ञान के मिन्नान्त	3	100
(2) संचरण लाइनें और उनका जाल	3	100
(3) ऐन्टीना और तरंग संचरण	3	100
(4) गर्णित	3	100
(5) रेडार और सूक्ष्म तरंग इंजीनियरी, जिसमें नौ संचालन हेतु रेडियो सहायक यंत्र भी शामिल है।	3	100
(6) प्रसारण और टेली-विजन तन्त्र	3	100

3. सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में ही लिखे जाने चाहिए।

4. उम्मीदवारों को उत्तर स्वयं अपने हाथों से ही लिखने होंगे। किसी भी हालत में, उत्तर लिखने के लिए उन्हें किसी अन्य व्यक्ति (लिपिक) की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

5. आयोग अपने विवेक से परीक्षा के किसी या सभी विषयों के लिए अर्हक अंक नियत करेगा।

6. व्यक्तित्व परीक्षण में उम्मीदवार की नेतृत्व क्षमता, पहल करने की क्षमता, जिज्ञासुवृत्ति, व्यवहार पटुता और अन्य सामाजिक गुणों, मानसिक और शारीरिक ऊर्जस्विता, व्यावहारिक उपयोग की शक्ति और चरित्र की सत्यनिष्ठा का मूल्यांकन करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

7. कोई सतही ज्ञान के लिए अंक नहीं दिए जाएंगे।

8. अस्पष्ट लिखावट के लिए, लिखित विषयों के अधिकतम अंकों के 3 प्रतिशत अंक तक काटे जा सकते हैं।

9. परीक्षा के सभी विषयों में क्रमबद्ध, प्रभावशाली और कम-से-कम शब्दों में विचारों की सफल अभिव्यक्ति के लिए श्रेय दिया जाएगा।

10. उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि वे ताल और माप की मीट्रिक प्रणाली से अभिज्ञ हों। जहां कहीं आवश्यक होगा, प्रश्न-पत्रों में ताल और माप की मीट्रिक प्रणाली के प्रयोग से सम्बद्ध प्रश्न दिए जाएंगे।

ध्यान दें :—जहां कहीं आवश्यक होगा उम्मीदवारों को संदर्भ के प्रयोजन से परीक्षा हॉल में भारतीय मानक संस्थान द्वारा संकलित और प्रकाशित मीट्रिक एककों की तालिकाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

परिशिष्ट I की अनुसूची

स्तर और पाठ्य-विषय

अंग्रेजी निबन्ध, सामान्य अंग्रेजी, सामान्य ज्ञान और सामयिक मामले, और विज्ञान के इतिहास के प्रश्न-पत्रों का स्तर ऐसा रहेगा जैसा कि इंजीनियरी/विज्ञान के स्नातकों में अपेक्षित है। किसी भी विषय में प्रयोगात्मक परीक्षा नहीं ली जाएगी।

रेडियो भौतिकी, इलेक्ट्रानिक सामग्री और अवयव अनुप्रयुक्त इलेक्ट्रानिक परिपथ तथा विद्युत् और यांत्रिक इंजीनियरी के प्रश्न-पत्र, भारतीय विश्वविद्यालयों की इंजीनियरी डिग्री के स्तर के रहेंगे। ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे पता चल सके कि उम्मीदवार ने प्रत्येक विषय की आधारभूत बातों को भलीभांति समझ लिया है या नहीं।

वैकल्पिक प्रश्नपत्रों का स्तर इस तरह का रखा जाएगा कि उनको हल करने के लिए उम्मीदवारों के विशद ज्ञान की जरूरत रहेगी जैसी इंजीनियरी समस्याओं के हल के लिए आवश्यक रहती है :

- (1) अंग्रेजी निबन्ध :—दिए गए अनेक विषयों में से एक पर निबन्ध अंग्रेजी में लिखा जाएगा।
- (2) सामान्य अंग्रेजी :—उम्मीदवारों की अंग्रेजी समझने और लिख सकने की क्षमता को परखने के लिए प्रश्न पूछे जाएंगे। सामान्यतः सार-लेखन (समरी) और संक्षेप (प्रेसी) बनाने के लिए उद्धरण सामान्यतः दिए जाएंगे।
- (3) सामान्य ज्ञान और सामयिक मामले :—इस पत्र में ऐसे भी प्रश्न रखे जाएंगे जो सामयिक घटनाओं और दैनिक जीवन के अवलोकन और अनुभव सम्बन्धी ज्ञान की परख करेंगे। इस प्रश्न पत्र में भारतवर्ष के इतिहास और भूगोल पर भी प्रश्न सम्मिलित किए जाएंगे।
- (4) विज्ञान का इतिहास :—विज्ञान के उद्भव और विकास का इतिहास। महान वैज्ञानिक और विज्ञान के क्षेत्र में उनकी देन।
- (5) रेडियो भौतिकी :—चुम्बकत्व; परिभाषाएं और यूनिट, चुम्बकीय प्रेरण, हिस्टेरेसिस; चुम्बकीय परिपथ। विद्युत् मात्रक, हाईइलेक्ट्रिक पदार्थ, चार्ज, प्रत्यावर्ती (आल्टरनेटिंग) और दिष्ट (डायरेक्ट) धारा; ऐसे परिपथ जिनमें प्रतिरोध रहता है; प्रेरकत्व

और संधारित्र; अनुनाद (रेसोनेन्स), घर्षणक्षमता पर मिले-किटकिटी का प्रभाव, धारा, बोल्टता और शक्ति संबंध। समस्तरित और असमस्तरित एम्प्लीफायर, दोलित (आसि लैटर), आवृत्ति स्थायित्व, आवृत्ति गुणक (मल्टीप्लायर) और हार्मोनिक जनित, माड्युलक (माड्युलेटर)।

अभियंत्रण (रिसेप्शन) के सिद्धान्त : डायर्वासिटी अभियंत्रण, सुपरहेटरोडाइन अभियंत्रण (रिसीवर)।

रेडियो टेलीग्राफ, रेडियो टेलीफोन संचार और प्रसारण तन्त्र, तरंग दैर्घ्य और शक्ति विचार, सिग्नल-शोर अनुपात सम्बन्धी अपेक्षाएं, तरंग संचरण और प्रेषण (ट्रांसमिशन) के सिद्धान्त, एरियल, प्रदायक (फीडर) और सुमेलन (मैचिंग) युक्तियां।

आयाम माड्युलन, आवृत्ति माड्युलन और फैंज माड्युलन के सिद्धान्त और संचार तन्त्रों में उनके उपयोग।

भाषण और श्रवण :—उच्चारण (आर्टिकुलेशन) ध्वानिकी के मूलभूत सिद्धान्त।

(6) इलेक्ट्रानिक सामग्री और अवयव—विभिन्न प्रकार की चालक व हाईइलेक्ट्रिक सामग्री; पाइजोइलेक्ट्रिक और फेरोइलेक्ट्रिक सामग्री और ट्रांसड्यूसर; विभिन्न आकृति तथा समाज परिपथ के सर्किट क्रिस्टल।

विभिन्न प्रकार की चुंबकीय सामग्री और फेराइट—उनकी विशेषताएं और उपयोग, स्थायी चुंबक।

प्रतिरोधक, संधानित्र, प्रेरक और ट्रांसफार्मर; उनके विभिन्न प्रकार, रचना सिद्धान्त, विशेषताएं, कार्य और अनुप्रयोग।

विद्युत् तथा चुंबकीय क्षेत्रों में इलेक्ट्रानिक उत्सर्जन तथा गति।

इलेक्ट्रानिक ट्यूब, जिनमें कैथोडरे ट्यूब तथा अन्य विशेष उद्देश्य से काम आने वाली ट्यूबें, सूक्ष्म तरंग ट्यूबें, गैस और फोटो ट्यूबें शामिल हैं, रचना के सिद्धान्त, विशेषताएं तथा प्ररूपी (टिपिकल) अनुप्रयोग।

अर्धचालक और उनके गुण-कार्य, अर्धचालक युक्तियां, जिन में, डायोड, सी० एस० आर० टनल डायोड, ट्रांजिस्टर तथा प्रकाश सम्बन्धी (फोटो से सिटिव) युक्तियां शामिल हैं, मुद्रित परिपथ के मूलभूत सिद्धान्त।

रिले :—विद्युत् चुंबकीय तथा उष्मीय प्रकार के; उनकी विशेषताएं तथा अनुप्रयोग।

(7) व्यावहारिक (एप्प्लाइड) इलेक्ट्रानिक परिपथ—निम्नलिखित में निहित परिपथ सिद्धान्त :—

निर्वात ट्यूब एम्प्लीफायर, विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए। प्ररूपी परिपथ, पुनः प्रदाय (फीड बैक) विस्तृत-बैंड एम्प्लीफायर डी० सी० एम्प्लीफायर।

ट्रांजिस्टर म्यूल्तीफायर प्ररूपी (डिपिकल) परिपथ । तापमान स्थायित्व के लिए डिजाइन ।

निम्न और उच्च आवृत्ति दोलित, परम्परागत (कन्वेंशनल) परिपथ रिलेक्सेशन दोलित, आवृत्तिगुणक और विभाजक (डिवाइडर) आवृत्ति स्थायीकरण, स्पंद (पल्स) और प्रसर्प ((स्वीप) परिपथ, गणक (काउंटिंग) परिपथ ? माड्युलक और विमाड्युलक (डिरेक्टर्स) आयाम, आवृत्ति और फेज माड्युलन ।

इलेक्ट्रानिक उपकरणों के शक्ति प्रदाय यंत्र—दिल्टकारी, फिल्टर, वोल्टता नियमित शक्ति प्रदाय (सम्प्लाइज) ।

प्रेरणिक (इंडक्शन) तापन (हीटिंग), वेल्टन और विद्युत मोटरों की चाल-नियंत्र के औद्योगिक इलेक्ट्रानिक परिपथ ।

टेलीविजन अभिग्राहित्रों में प्रयुक्त प्ररूपी परिपथ ।

(8) विद्युत् और यांत्रिक इंजीनियरी ।

(क) विद्युत् इंजीनियरी—डी० सी० मोटर और जनित (जनरेटर)—उनके अभिलक्षणिक और सामान्य लक्षण, मोटर वर्तक (स्टार्टर) प्राथमिक और द्वितीयक सेल ।

ए० सी० परिपथ शक्ति गुणांक, ट्रांसफार्मर, आर्कटर्नर तृन्व-काली (मिक्त्रोन्स) और प्रेरण (इंडक्शन) मोटर, प्रवर्तक (स्टार्टिंग) युक्तियां ।

दिल्टकारी और घूर्णी परिवर्तित (रोटरी कन्वर्टर) ।

विद्युत् मापयंत्र और मापन—(डी० सी० और ए० सी० परिपथों में वोल्टता, धारा और शक्ति मापन, विभिन्न प्रकार के मापयंत्र और उनकी विशेषताएं । प्ररूपी (डिपिकल) ब्रिज ।

(ख) यांत्रिक (मैकेनिकल) इंजीनियरी :—पदार्थों के गुणाधर्म और सान्द्रता, तनाव (टेंशन), संपीडन (कम्प्रेसन) और अपरूपण (शियर) में प्रतिदल (स्ट्रेस) और विकृति (स्ट्रेन), हुक का नियम, प्रत्यास्थता के स्थिरांक (इलेस्टिक कान्स्टेंट) धरनों में आघूर्ण बल ।

अन्तर (इंटरनल) दहन (कम्बर्शन), इंजन-प्रमुख घटक एकक और कार्य सिद्धान्त । सरल मशीनरी औजार (मशीन टूल) और उनके उपयोग ।

शक्ति संचारण—वेल्ट और गियर चालन (ड्राइव), सीधा (डायरेक्ट) ।

युग्मन (कप्लिंग), घर्षण नियम, स्नेहक (लुब्रिकेंट) और स्नेहक तन्त्र ।

फोरम और नान-फोरम पदार्थ और उनके गुण-धर्म ।

(9) ध्वनिकी के सिद्धान्त

ध्वनि तरंग समीकरण, कंपमान (वाइब्रेटिंग), तन्त्र ध्वनि संचारण, विद्युत्-यांत्रिक—ध्वनिक परिपथ और फिल्टर ।

तत्क्ष ध्वनिकी, ध्वनि अवशोषण और रोधन (इन्सुलेशन) अनुरणन, प्रमाण रट्टिओ की डिजाइन ।

ट्रांसड्यूसर :—माइक्रोफोन लाउडस्पीकर, डिजाइन अभिलक्षण, मापन और अंशांकन (कैलीब्रेशन) ।

ध्वनि नियंत्रण, ध्वनि रोधन, मापन ।

श्रवण और वाक्-शक्ति, मनो—ध्वानिक मानदंड, श्रव्यता मापी द्वारा मापन ? उच्च तद्रूपता (फाइडेलिटी) तन्त्र, डिस्क, चुंबकीय और फिल्म अभिलेखन और प्रतिश्रवण (प्लेबैक सिस्टम) ।

(10) संचारण (ट्रांसमिशन) लाइन और जाल (नेटवर्क) ।

दो टर्मिनल जाल—आर० एल० और सी० का संयोग, ट्रांसफार्मर के तुल्य जाल की प्रतिबाधा (इम्पीडेंस) । दो टर्मिनल जालों का विश्लेषण और संश्लेषण ।

चार टर्मिनल जाल, रेमिक (लीनियर) पैरामीटर—प्रतिबिंब (इमेज) और इटरेटिव पैरामीटर, टर्मिनेशन, हानि गुणांक निवेशन (इन्सर्शन) हानि । टेण्डम सम्बन्ध परावर्तन और अन्योन्य (इन्टरएक्शन) हानियां । टी० (T) और एच० (H) किस्म के क्षीणन (एटैनुएशन) पैड और सैतव (ब्रिडज) टी० (T) जाल स्थिर (कॉस्टेंट) प्रतिरोध पुनरावृत्ति (रिक्रिस) जाल-समकारी (इक्वेलाइजर) ।

तरंग फिल्टर, पारक (पास) और क्षीणन बैंडों के लिए प्रतिबन्ध (कंडीशंस), प्रतिबिम्ब (इमेज) पैरामीटर पर आधारित फिल्टर डिजाइन के सिद्धान्त । एक समान के० (K) और एम० (M) व्युत्पन्न फिल्टर खण्ड (सेक्शन) । निम्न पारक (लोपास), उच्च पारक (हाइपास) और बैंड पारक फिल्टर [3, 4, 5 और 6 अवयव (एलीमेंट)] वाले । मिश्र (कम्पोजिट) और पूरक (काम्प्लीमेंटरी) फिल्टर । फिल्टरों का समानांतरण (पैरेलिंग) क्षय (डिसिपेशन) और टर्मिनेशन का प्रभाव । आवृत्ति प्रतिबाधा प्रसामान्यीकरण (नार्मलाइजेशन) । निम्न पारक से उच्च पारक और बैंड फिल्टर की डिजाइनों में ट्रांसफार्मेशन । विद्युत् तरंग फिल्टर डिजाइन के प्रारम्भिक सिद्धान्त ।

विद्युत् रेखा के गुण-धर्म, विद्युत् रेखाओं के आर० एल० सी० मात्रात्मक मूल्य । प्रेषण लाइन समीकरण, क्षणिक और फेज शिफ्ट । प्रेषण लाइन में परावर्तन, किसी भी और समाप्त रेखा का समीकरण, परावर्तन से हानियां और परावर्तन घटक । अप्रगामी तरंगें, सम्पूर्ण और आंशिक परावर्तन युक्त लाइनों की अवबाधा—वृत्त आरेख ।

निम्न आवृत्ति की संचारण लाइन, अभिलक्षण (कैरेक्टरिस्टिक्स), टेलीग्राफी और टेलीफोन कार्य (पाकिंग) में विकृति (डिस्टॉर्शन)—लोडिंग ।

उच्च आवृत्ति संचारण लाइन, अभिलक्षणिक—खुले (ओपन) तार और संकेन्द्री (कान्सेंट्रिक) प्रवायक (फोडर), प्रतिबाधा अवयव के रूप में संचारण लाइन, अनुनादी (रेजोनेन्ट) लाइनें—एच० एफ० (H. F.) लाइनों का सुमेलन (मैचिंग) ।

(11) एन्टीना और तरंग संघरण प्रोपेगेशन ।

विद्युत् :—चुंबकीय समीकरण, विद्युत् चुंबकीय तरंगों का विकिरण (रेडियेशन) क्षेत्र (फील्ड) तीव्रता । (इन्टेन्सिटी) ।

विकिरण (रेडियेशन) आकृति (पेटर्न), विशात्मक तन्त्र एन्टीनाओं की लब्धि (गेज), लेम्बी, माध्यम (मीडियम) लघु (शार्ट) तरंग और अति उच्च (बरी हाई) आवृत्ति (फ्रीक्वेन्सी), के विशात्मक एन्टीनाओं की व्यावहारिक डिजाइन । अभिग्राही (रिसीविंग) एन्टीना तन्त्र । दिशा (शायरेक्शन) निर्धारक (फोइन्डर) के एन्टीना ।

रेडियो आवृत्ति संचारण लाइनें, युग्मक कर्पाणिग जाल (नेट-वर्क), संचारण लाइनों का मुमेखन (मैचिंग), प्रदायक (फीडर) लाइनों और स्विचल तन्त्रों के व्यावहारिक (प्रेक्टिकल) डिजाइन और स्विचिंग सिस्टम।

संचारण :—भूमि मार्गी, ट्रोपोस्फेरिक और आयनोस्फेरिक, एटमास्फेरिक्स और ध्वनि।

(12)—गणित

मूल (फंडामेंटल) धाराएं

फंक्शन—औसत दरें (रेट्स)—सोमाएं (लिमिट्स)

मूल (बेसिक) संक्रियाएं (आपरेशन)

अवकलज (डेरिवेटिव्स)—अवकल (डिफरेंशियल) उच्चतर अवकलज उच्चिष्ठ (मैक्सिमम) और निम्नष्ठ (मिनिमम)—समाकल (इन्टीग्रल)—

निश्चित (डेफिनिट) समाकल, आगे की संक्रियाएं। समाकलन (इन्टीग्रेशन) तकनीकी—दि डबल इन्टीग्रल। इन्फिनिट सीरीज

परिभाषाएं—गुणोत्तर (ज्यामेट्रिकल) श्रेणी (सीरीज), अभिसारी (कानवर्जेंट) और अपसारी (डायवर्जेंट) श्रेणी—व्यापक (जेनरल) प्रमेय (थेोरम)—तुलना—परीक्षण—काची का समाकल (इन्टीग्रल) परीक्षण काची का रेडियो परीक्षण—एकांतर (आल्टर्नेटिंग) श्रेणी—निरपेक्ष अभिसरण (कानवर्जेंट) धात (पावर) श्रेणी—घात श्रेणियों सम्बन्धी प्रमेय—फंक्शन की श्रेणियां और एक समान अभिसरण श्रेणियों का समाकलन (इन्टीग्रेशन) और अवकलन (डिफरेंशियेशन)—टेलर की श्रेणियां—टेलर की श्रेणियों का प्रतीकात्मक रूप—घात श्रेणियों द्वारा समाकलों का मूल्यांकन—सैकलार्गन की श्रेणियों में व्युत्पन्न सन्निकट सूत्र (फार-मूला)—फंक्शनों के परिकलन (काम्प्यूटेशन) के लिए श्रेणियों का उपयोग—अनिवार्य (इण्डिटमिनेट) रूप लेने वाले फंक्शनों का मूल्यांकन।

सम्मिश्र (काम्प्लेक्स) संख्याएं (नम्बर)

परिचय :—सम्मिश्र संख्याएं—सम्मिश्र संख्याओं को बदलने (मैनीपुलेशन) के नियम—ग्राफी (ग्राफिक) निरूपण और त्रिकोण-मितीय (ट्रिगनामेट्रिक) रूप (फार्म), घात और मूल (रूट्स)—एक्सपोनेंटी और त्रिकोणमितीय फंक्शन—अतिपरबलीयिक (हाइपरबोलिक) फंक्शन—लागेरिथमीय फंक्शन—प्रतिलोम (इन्वर्स) अति परबलीयिक और त्रिकोणमितीय फंक्शन।

आवर्ती (पीरियाडिक) घटनाओं (फिनामिका) का गणितीय निरूपण। फूरिये श्रेणी और फूरिये समाकल।

परिचय—सरल आवर्त (हार्मोनिक) कंपन (वायब्रेशन)—अधिक जटिल आवर्ती घटनाओं का निरूपण, फोरियर श्रेणी—फंक्शनों के फूरिये प्रसार (एक्सपेंशन) के उदाहरण—फोरियर श्रेणी के अभिसरण के बारे में कुछ टिप्पणी—प्रभावी मान और गुणनफल का औसत माडुलित कंपन और विस्पंद (बीट) आवर्ती विक्षोभों का तरंगों के रूप में संचरण—फूरिये समाकल।

3—341GI/72

एकघाती (लीनियर) बीजगणित समीकरण—डिटर्मिनेंट और मैट्रिक्स।

सरल डिटर्मिनेंट—मूल परिभाषाएं—लाप्लास प्रसार—डिटर्मिनेंट के मूल गुण-धर्म—संख्यात्मक डिटर्मिनेंटों का मूल्यांकन—मैट्रिक्स की परिभाषा—विशेष मैट्रिक्स—मैट्रिक्सों की समानता। जोड़ और घटना—मैट्रिक्सों का गुणनफल—मैट्रिक्सों का विभाजन। पक्षांतरित (ट्रांसपोज्ड) और व्युत्क्रमित (इन्वर्स) गुणनफल का उत्क्रमण नियम उत्क्रम मैट्रिक्स—विकर्ण (डायगोनल) और तत्समकारी (यूनिट) मैट्रिक्सों—के गुणधर्म—मैट्रिक्सों का उपमैट्रिक्सों में विभाजन—विशेष प्रकार के मैट्रिक्स—एन (N) एकघाती समीकरणों का एन (N) अज्ञातों (अननोन) में हल।

अचर (कांस्टेंट) गुणांकों (कोएफिलियेंट्स) वाले एकघाती (लीनियर)

अवकल (डिफरेंशियल) समीकरण :—

समानोत (रिड्यूस्ड) समीकरण, पूरक (काम्प्लीमेंटरी) फंक्शन—संकारक (आपरेटर) के गुणधर्म एल० एन० (डी०)—अनिवारित (अनडिटर्मिन्ड) गुणांकों की विधि—सरल (सिम्पल) सीधा (डायरेक्ट) लाप्लास—अचर गुणांकों वाले एकघाती अवकल समीकरणों को हल करने की संक्रियात्मक (आपरेशनल) या रूपांतरण (ट्रांसफर्म) विधि—रूपांतरों (ट्रांसफार्मों) का सीधा परिकलन (काम्प्यूटेशन) अचर गुणांकों वाले एकघाती अवकल समीकरणों का निष्काय (सिस्टम)।

अवकल समीकरणों के हल में उपयोगी लाप्लास रूपांतर

अंश पद्धति (नोटेशन)—मूल प्रमेय

रेखिक (लीनियर) पिण्डित (लम्ड) विद्युत् परिपथों के दोलन

विद्युत् परिपथ सिद्धान्त :—ऊर्जा आधारित विचार—सामान्य मालाबद्ध परिपथ का विश्लेषण—संधारित्र का चार्ज और विसर्जन (डिस्चार्ज)—परिमित (फाइनाइट) विश्व (पोटेन्शियल) स्पंद का प्रभाव—सामान्य जाल (नेटवर्क) का विश्लेषण—स्थिर अवस्था के हल—प्रत्यावर्ती (आल्टर्नेटिंग) धारा की स्थिर अवस्था के चार टर्मिनल वाले जाल—चार टर्मिनल जाल के रूप में संचारण लाइन।

आंशिक अवकलन

आंशिक अवकलन (डेरिवेटिव)—टेलर प्रसार का प्रतीकात्मक रूप—संयुक्त फलनों (फंक्शनों) का अवकलन—चरों (वेरिएबल्स) के परिवर्तन—प्रथम अवकल (डिफरेंशियल)—अस्पष्ट (इम्प्लिसिट) फंक्शनों का अवकल—उच्चिष्ठ (मैक्सिमा) और निम्नष्ठ (मिनिमा)—निश्चित (डेफिनिट) समाकल का अवकल—समाकल चिह्न के अंतर्गत समाकलन—कुछ निश्चित समाकलों का मूल्यांकन-विचरण (वैरियेशन) कलन (कैल्कुलस) के मूल तत्त्व-विचरण कलन के प्रधान (फंडामेंटल) सूत्रों का सारांश—हैमिल्टन का सिद्धान्त—लाग्रांजी समीकरण—गौण (एक्ससैसरी) अवस्था (कंडीशन) वाले विचरण के प्रश्न-समपरिभाषी (आइसो-पेरिमेट्रिक) समस्याएं।

सदिश (वेक्टर) विश्लेषण

सदिश की धारणा—सदिशों को जोड़ना और घटाना—
सदिश और अदिश (स्केलर) का गुणा—दो सदिशों का गुणनफल—
दो सदिशों का सदिश गुणनफल-बहुल (मल्टीपल) गुणनफल—समय
की दृष्टि से (विषय रिस्पेक्ट टू टाइम) सदिश का अवकलन-प्रवणता
(ग्रेडिएन्ट)—डाइवर्जेंस और गाउस का प्रमेय-सदिश क्षेत्र
(फील्ड) का कर्ल और स्टाक का प्रमेय-संकारक का उत्तरांतर
अनुप्रयोग—लंबकोणीय (आर्थोगोनल) वक्ररेखी निर्देशांक-हाइ-
ड्रॉइनेमिक्स में अनुप्रयोग—टॉम पदार्थों में ऊष्मा प्रवाह के समी-
करण—गुरुत्वीय विभव-मैक्सवेल के समीकरण-तरंग, समी-
करण-त्वाचिक प्रभाव या विसरण। समीकरण-टेन्सर (गुणात्मक
परिचय) निर्देशांक रूपांतरण। आदेश, प्रतिचर (कन्ट्रावेरिस्ट)
सदिश, सहपरिवर्तन (कोवेरिस्ट) सदिश-जोड़। टेन्सरों का
गुणनफल और संकुचन (कान्ट्रैक्शन)—सदिश जोड़। टेन्सरों का
गुणनफल और संकुचन (कान्ट्रैक्शन)—सहचारित (असोमियेटेड)
टेन्सर-निश्चर (इन्वेरिएन्ट) का अवकलन—टेन्सरों का अवकल-
क्रिस्टोफेल के प्रतीक-उच्चतर कोटि के टेन्सरों के नैज (इट्रिन्जिक)
और सहपरिणत अवकलन (डेरीवेटिव)—कण की गति की
(डाइनेमिक्स) में टेन्सर विश्लेषण का अनुप्रयोग।

सम्मिश्र (काम्प्लेक्स) चर (वैरिएबल) के सिद्धान्त के मूलतत्त्व

सम्मिश्र चर के सामान्य कार्य-अवकल (डेरीवेटिव) और
काची और रीमन के अवकल समीकरण-सम्मिश्र फंक्शनों के रेखा
समाकल-काची का समाकल प्रमेय—काची का समाकल मूल-
टेलर की श्रेणियाँ—लारेन्ट की श्रेणियाँ। अवशेष (रेसिड्यूज)
काची का अवशेष प्रमेय। विश्लेषी फंक्शन के विचित्र (सिंगुलर)
बिन्दुअनन्त के बिन्दु—अवशेषों का मूल्यांकन लियोविल का
प्रमेय निश्चित समाकलों का मूल्यांकन—जोर्डन का लाम्मा-बहुल
समाकल—(वेल्यूड फंक्शन)।

संक्रियात्मक (ऑपरेशनल) और रूपात्मक विधियाँ

फूरिये-मेलिन का प्रमेय—मूल नियम—सरल (डायरेक्ट)
रूपान्तरों का परिकलन-व्युत्क्रम रूपांतरों का परिकलन-परिवर्तित
समाकल, आवेगी (इम्पल्सिव) फंक्शन। आंशिक अवकल
समीकरणों के हल के लिए संक्रियात्मक कैल्कुलस का अनुप्रयोग-
समाकलों का मूल्यांकन—एक घाती समाकल समीकरणों के
हल के लिए लाम्मास रूपांतरों का अनुप्रयोग-चर गुणकों
वाले सामान्य—अवकल समीकरणों का हल, लाम्मास रूपांतरों
की मदद से फूरिये श्रेणी का संकलन (समेशन)।

13. रेडार और सूक्ष्म (माइक्रो) तरंग इंजीनियरी जिसमें
यान संचालन (नैवीगेशन) में उपयोगी रेडियो सहायक
यंत्र (एड्स) सम्मिलित हैं।

सिद्धान्त, विवेदन (रिजोल्यूशन), यथार्थता और पराम
(क्वरेज), रेडार की पराम रेंज के समीकरण, रेडार के लिये उप-
युक्त आवृत्तियाँ और विभिन्न प्रकार के रेडार उपस्कर
(इक्विपमेंट)।

स्पंद (पल्स) परिपथ और जाल, स्ट्रोव और गेटिंग परिपथ
प्रिजेन्टेशन और संबन्धित मरकटरी के विविध प्रकार। माड्युलक
और उनके सिद्धान्त।

रेडार अभिग्राही परिपथ

विभिन्न प्रकार के रेडार गेटिंग और प्रदाय (फीड)
तन्त्र, परावर्तक और उनकी डिजाइन, सूक्ष्म तरंग पदार्थ, तरंग
पथ निर्धारण (वेवगाइड) संचारण, के तरीके (मोड), प्रति-
बाधा सुमेलन (मैचिंग), चौक संधियाँ, दिशा युग्मक, टी आर
(T. R.) युक्तियाँ।

वी एच० एफ० (V.H.F.) ट्रायोल दौलित, क्लाड-
स्ट्रान, मेनेट्रान, प्रगामी तरंग ड्यूब, दक्षता आरेख, वायुवाहित
(एअरबोर्न) और भूमि आधारी (ग्राउंड बेस्ड) रेडार तन्त्रों
के सिद्धान्त और अभियन्तात्मक। दिशा निर्धारण (डायरेक्शन
फार्डिंग) के सिद्धान्त।

यान संचालन तन्त्रों जैसे लॉरेन, डेक्का, डापलर के सिद्धान्त।

इलेक्ट्रानिक तुंगतामापी (आल्टीमीटर) के सिद्धान्त।

- 1.4. प्रसारण (ब्राडकास्टिंग) और टेलीविजन प्रणालियाँ
(सिस्टम)

लम्बी, मध्यम और लघु तरंगों तथा वी० एच० एफ०
(V.H.F.) पर प्रसारण, पराम (क्वरेज), क्षेत्र तीव्रता, रव
और विषण (इन्टरफरेन्स) भूमि मार्गों तरंग द्वारा संचरण, आकाश
मार्गी तरंग द्वारा संचरण, फेडिंग की घटनाएँ।

स्टुडियो और सभा भवन, रव के स्तर, अनुकरण (रिव-
रब्रेशन) ध्वनि स्तर और ध्वनि के वितरण, संवातन (वेन्टी-
लेशन) और प्रदीप्ति (इल्युमिनेशन) के दृष्टि से डिजाइन।

स्टुडियो और नियंत्रण कक्ष उपस्कर, माइक्रोफोन-उत्पादन
(आऊट पुट), प्रतिबाधा, ध्वनि स्तर, दिशात्मकता, रव और
नंदरूपता की दृष्टि से डिजाइन पर विचार। माइक्रोफोन का
चयन। माइक्रोफोन से प्रेषित (ट्रांसमिटर) तक की ध्वनिक
कड़ी (लिंक)—विशेष लक्षण और डिजाइन पर विचार। अभि-
नेखन (रिकार्डिंग) और प्रतिश्रवण (प्लेबैक)।

प्रसारण प्रेषित, प्रसारण की आवश्यकताएँ, मोड्युलक,
एम्प्लीफायर और शक्ति प्रदाय एकक (सप्लाय सिस्टम)।

मुपरहेटेराइजेशन, अभिग्रहण परिपथों की डिजाइन। प्रसारण
अभिग्राहकों (रिसीवरों) में ट्रांसिस्टर।

प्रसारण में आवृत्ति मांडलन।

कैमरों में टेलिविजन परिपथ, पिक्चर मानक प्ररूपी प्रेषिक
और अभिग्राहक, प्रकाश और स्टुडियो सम्बन्धी उपस्कर।

परिशिष्ट II

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा सम्बन्धी विनियम

[ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिए प्रकाशित
किए जाते हैं, ताकि वे यह जान लें कि वे अपेक्षित शारीरिक
योग्यता स्तर पर कहां तक पूरे उतरते हैं। इन विनियमों का
एक उद्देश्य स्वास्थ्य परीक्षकों का मार्गदर्शन करना भी है
नथा जो उम्मीदवार विनियमों में निर्दिष्ट न्यूनतम अपेक्षाएं
पूरी नहीं करने, उन्हें स्वास्थ्य परीक्षक द्वारा स्वास्थ्य घोषित
नहीं किया जा सकता। अलबत्ता किमी उम्मीदवार को इन
विनियमों में निर्धारित मानदण्डों के अनुसार अयोग्य घोषित

करते समय डाक्टरों को विशेष रूप से लिख कर दर्ज किए गए कारणों के आधार पर भारत सरकार को इस बात की सिफारिश करने का अधिकार होगा कि उसे सरकार की कोई हानि किए बिना सेवा में ले लिया जाए।

2. अलवत्ता यह बात स्पष्ट रूप से समझ ली जाए कि डाक्टरों को बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करने के बाद किसी भी उम्मीदवार को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार भारत सरकार ने अपने पास सुरक्षित रखा है।]

1. नियुक्ति के लिए योग्य घोषित किए जाने के लिए यह आवश्यक है कि उम्मीदवार शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से पूर्ण स्वस्थ हो और वह ऐसी किसी भी शारीरिक विकृति से मुक्त हो, जिससे उसे अपने पद के कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करने में बाधा पड़ सकती हो।

2. भारतीय (एंग्लो-इंडियन समेत) जाति के उम्मीदवारों की आयु, कद और छाती के घेरे के सहसम्बन्ध के मामले में यह डाक्टरों बोर्ड के निर्णय पर छोड़ दिया गया है कि वह उम्मीदवारों की शारीरिक जांच के सम्बन्ध में मार्गदर्शन के लिए जो भी सहसम्बन्ध अंक सर्वाधिक उपयुक्त समझे उसका उपयोग करें। यदि कद, भार और छाती के घेरे के सम्बन्ध में कोई विषमता हो तो उस स्थिति में किसी उम्मीदवार का बोर्ड द्वारा योग्य अथवा अयोग्य घोषित किए जाने से पूर्व जांच और छाती के एक्सरे के लिए उसे अस्पताल में भेजा जाना चाहिए।

3. उम्मीदवार का कद नीचे दिए अनुसार नापा जायगा—

यह अपने जूते निकाल देगा और मापदंड के आगे खड़ा होगा, उसके पैर सटे हुए होंगे और वजन एड़ियों पर होगा न कि पंजों पर अथवा पैर के अन्य भागों पर। वह बिना तने हुए सीधा खड़ा होगा। तथा उसकी एड़ियां, पिंडलियां, कूल्हे और कंधे मापदंड से सटे हुए होंगे तथा छोड़ी कुछ इस प्रकार धंसी होगी, जिससे कि सिर पर ऊपरी मिरा समस्तर शलाका के समान स्तर पर हो। कद सेंटीमीटरों में दर्ज किया जाएगा तथा एक से ० मी० का अंश आध से ० मी० के बराबर माना जाएगा।

4. उम्मीदवार की छाती का माप नीचे निर्दिष्ट रीति से लिया जाएगा :—

उसे सीधा खड़ा किया जाएगा, उसके पैर सटे हुए होंगे तथा उसकी बांहें सिर के ऊपर उठी हुई होंगी। फीते को छाती के चारों ओर इस प्रकार रखा जाएगा

कि उसका ऊपरी मिरा पीछे की ओर कंधे की हड्डी के निचले कोणों से छू रहा हो तथा जिस समय फीते को छाती के चारों ओर ले जाया जाए, वह उसके समतल पर हो। नत्पश्चात् बांहें नीचे कर ली जाएंगी जिससे कि वे वगल में हीली झूलती रहे। साथ ही इस बात की भाव-धानी बरती जाएगी कि कंधे ऊपर या नीचे न उठने पाएं, जिससे फीता अपने स्थान से हट न जाए। इसके

बाद उम्मीदवार को कई बार गहरा सांस लेने के लिए कहा जाएगा तथा छाती के अधिकतम विस्तार को सावधानी से लेखबद्ध कर लिया जाएगा और न्यूनतम तथा अधिकतम विस्तार सेंटीमीटरों में यथा 84-89, 86-93.5 आदि, दर्ज किया जाएगा। नाम दर्ज करते समय आध से ० मी० से कम अंश लेखबद्ध न किए जाएं।

ध्यान दें :—अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पूर्व उम्मीदवार के कद और छाती का माप दो बार लिया जाना चाहिए।

5. उम्मीदवार का वजन भी लिया जाएगा तथा उसका वजन किलोग्रामों में दर्ज किया जाएगा, आधे किलोग्राम के अंश दर्ज नहीं किए जाना चाहिए।

6. (क) उम्मीदवार की नजर की जांच नीचे निर्दिष्ट नियमों के अनुसार की जाएगी और प्रत्येक जांच परिणाम को दर्ज किया जाएगा।

(ख) बिना चश्मे के आंख की न्यूनतम नजर की कोई सीमा नहीं होगी, लेकिन प्रत्येक मामले में डाक्टरों बोर्ड अथवा अन्य चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा चश्मे के बिना उम्मीदवार की आंख की नजर अनिवार्य रूप से दर्ज की जाएगी, क्योंकि इससे आंख की हालत के बारे में आधारभूत जानकारी प्राप्त होगी।

(ग) चश्मे के साथ अथवा बिना चश्मे के दूर और पास की नजर के लिए निम्नलिखित मान निर्धारित किए गए हैं :—

दूर की नजर		पास की नजर	
अच्छी आंख (चश्मे के साथ)	खराब आंख	अच्छी आंख (चश्मे के साथ)	खराब आंख
6/6	6/12	जे०-1	जे०-II
अथवा			
6/9	6/9		

(घ) निकट दृष्टि वाले प्रत्येक मामले में बुद्धि परीक्षा की जानी चाहिए, तथा परिणाम लेखबद्ध किए जाने चाहिए। कोई ऐसा नेत्रविकार होने की स्थिति में, जिसके उत्तरोत्तर बढ़ने की सम्भावना हो और जिससे उम्मीदवार की कार्यकुशलता पर असर पड़ सकता हो, उम्मीदवार को अयोग्य घोषित किया जाना चाहिए।

निकट दृष्टि की कुल मात्रा (मिलेडर सहित)—4.00 डी से अधिक नहीं होनी चाहिए। दूरदृष्टि की कुल मात्रा (मिलेडर सहित) † 4.00 डी से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(ङ) दृष्टि-क्षेत्र—समस्त सेवाओं के सम्बन्ध में दृष्टि क्षेत्र की जांच सम्मेलन निदान की प्रक्रिया में की जानी चाहिए और यदि जांच में असन्तोष जनक अथवा संदिग्ध परिणाम प्राप्त हों तो दृष्टि क्षेत्र का निर्धारण परिमापी पर किया जाएगा।

(च) रतौंधी—मोटे तौर पर रतौंधी दो प्रकार की होती है। (1) विटामिन की कमी के परिणामस्वरूप तथा (2) रेटिना के कायिक रोग के परिणामस्वरूप जिसका कि सामान्य कारण रेटिनाइटिस पिरमेटाजा होता है। पहले प्रकार में बुध्न सामान्य होता है, वह सामान्यतः कम आयु वर्ग में तथा ऐसे व्यक्तियों में देखा जाता है, जिनका पोषण ठीक रीति में नहीं हुआ। इसमें सुधार बड़ी मात्रा में विटामिन ए लेने में होता है। दूसरे प्रकार में अक्सर बुध्न की शिकायत भी रहती है और केवल बुध्न की परीक्षा करने से ही अधिकांश मामलों में रतौंधी का पता चल जाता है। इस श्रेणी का रोगी व्यस्क होता है और जरूरी नहीं है कि वह कुपोषण से पीड़ित हो। सरकार में ऊंचे पदों पर नियुक्ति चाहने वाले व्यक्ति इसी श्रेणी में आते हैं। दोनों (1) और (2) के लिए तमोनुकूलन परीक्षण से रतौंधी का पता चल जाएगा। जहां तक (2) का सम्बन्ध है, विशेष रूप से जब बुध्न में आक्रान्त नहीं होता इलेक्ट्रोरेटीनोग्राफी करने की आवश्यकता होती है। इन दोनों परीक्षाओं में (तमोनुकूलन परीक्षण और रेटिनोग्राफी में) काफी समय खर्च होता है और इनके लिए विशेष व्यवस्था और उपस्कर की आवश्यकता होती है। अतः डाक्टरों की परीक्षा में नैमी परीक्षण के तौर पर ये परीक्षण करने सम्भव नहीं होते। इन तकनीकी कठिनाइयों के कारण यह सूचित करना मन्त्रालय/विभाग का काम है कि आया रतौंधी के लिए ये परीक्षण करने की आवश्यकता है या नहीं। यह बात कार्य की अपेक्षाओं तथा भावी सरकारी कर्मचारियों द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले कर्तव्यों की प्रकृति पर निर्भर करेगी।

(छ) रंगदृष्टि—(i) सभी पदों के सम्बन्ध में रंगदृष्टि की जांच अनिवार्य रूप से की जाएगी।

(ii) रंग-बोध का वर्गीकरण उच्च और निम्न वर्गों में किया जाएगा, जो इस बात पर निर्भर करेगा कि लैटन के द्वारक का आकार तीचे सारणी में निदिष्ट आकारों में से कौनसा है :—

वर्ग	रंग भेद	
	का उच्च वर्ग	का निम्नवर्ग
लेप और उम्मीदवारों के बीच दूरी	16"	16"
(2) द्वारक का आकार	1.3 मि.मी.	1.3 मि.मी.
(3) उद्भासन का समय	5 से०	5 से०

जिन सेवाओं का सम्बन्ध सार्वजनिक सुरक्षा में है उनके लिए रंग दृष्टि का उच्च वर्ग होना आवश्यक है, लेकिन अन्य सेवाओं के लिए रंग दृष्टि का निम्नवर्ग पर्याप्त समझा जाए।

(iii) संतोषजनक रंग दृष्टि तब होती है जब लाल संकेत, हरे संकेत और अन्य रंगों को मरलता में तथा तत्काल पहचाना जा सके। रंग दृष्टि के परीक्षण के लिए इतिहास की प्लेटों जिन्हें अच्छे प्रकाश में दिखाया जाएगा और एडरज ग्रीन

की लालटेन जैसी उपयुक्त लालटेन पर पर्याप्त रूप से निर्भर किया जा सकता है। यद्यपि साधारणतः सड़क, रेल अथवा वायु-यातायात से सम्बन्ध रखने वाली सेवाओं के सम्बन्ध में दोनों में से कोई भी परीक्षण पर्याप्त माना जा सकता है यह अत्यावश्यक है कि लैटन द्वारा परीक्षण किया जाय। संदिग्ध मामलों में जहाँ कोई उम्मीदवार दोनों में से कोई एक परीक्षण किए जाने पर परीक्षण में पूरा नहीं उतरता हो, वहाँ दोनों परीक्षण किए जाएं।

(ज) दृष्टि तीक्ष्णता से भिन्न नेत्र दशाएं :—

(i) कोई भी ऐसा कायिक रोग अथवा वर्धमान अपवर्तन वृद्धि, जिससे दृष्टि की तीक्ष्णता कम होने की सम्भावना हो अनर्हता मानी जाए।

(ii) भेंगापन—क्योंकि द्विनेत्री दृष्टि होना अनिवार्य भेंगापन है, अतः चाहे प्रत्येक आंख की दृष्टि-तीक्ष्णता निर्धारित मान के बराबर होने पर अनर्हता माना जाए।

(iii) एक आंख—डाक्टरों बोर्ड श्रेणी I और श्रेणी II पदों पर नियुक्त के लिए एक आंख वाले व्यक्ति की सिफारिश कर सकता है, यदि उसे इस बात का संतोष हो कि वह जिस पद के लिए उम्मीदवार है उसके सारे कार्य निष्पन्न कर सकता है तथा अच्छी आंख की दृष्टि तीक्ष्णता दूर की नजर के लिए 6/6 हो अगर पास की नजर के लिए 0.6 हो और अपवर्तन वृद्धि $\neq 4.00$ डी अथवा -4.00 डी से अधिक न हो अगर अच्छी आंख के बुध्न में किसी प्रकार की कोई असामान्यता दृष्टिगोचर न हो। दृष्टि-मान में यह ढील केवल एक आंख वाले व्यक्तियों के सम्बन्ध में लागू होती है और यह ढील उनकी विकलांगता की ध्यान में रखते हुए दी गई है। यह ढील उन व्यक्तियों के लिए नहीं है, जिनकी दृष्टि द्विनेत्री है।

(iv) संस्पर्श लेन्स—उम्मीदवार की डाक्टरों परीक्षा के दौरान संस्पर्श लेन्सों का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह आवश्यक है कि जब नेत्र परीक्षण किया जाए, दूर की नजर के लिए टाइप अक्षरों की प्रदीप्ति 15 फुट केंडल हो।

7. रक्त दाब—रक्त दाब के सम्बन्ध में बोर्ड अपने विवेक से काम लेगा। सामान्य अधिकतम प्रकुंचन दाब निकालने की स्थूल रीति इस प्रकार है :—

(i) 15-25 वर्ष की आयु वाले युवा व्यक्तियों के लिए औसत दाब आयु $\neq 100$ है।

(ii) 25 वर्ष से ऊपर की आयु के व्यक्तियों के लिए आयु के आधे के साथ 110 जमा करने का सामान्य नियम काफी संतोषजनक जान पड़ता है।

ध्यान दें—सामान्य नियम यह है कि 140 मि० मी० से अधिक प्रकुचन दाब तथा 90 मि० मी० में ऊपर अनुश्लिखित दाब को सन्देहजनक समझा जाए तथा उम्मीदवार के योग्य अथवा अन्यथा होने के सम्बन्ध में अपनी अन्तिम राय देने से पूर्व बोर्ड द्वारा उसे अस्पताल में रखा जाए। अस्पताल में रखे जाने की रिपोर्ट में यह निर्देश किया जाए कि रक्त दाब में वृद्धि क्षणस्थायी है और उत्तेजना आदि का परिणाम है अथवा यह किसी कायिक रोग के कारण है। ऐसे समस्त मामलों में हृदय का एकसरे और विद्युत हृदय लेखन के साथ-साथ मूत्र शर्करा उत्सर्जन परीक्षण भी नेमी रूप में किया जाए। बहरहाल उम्मीदवार के स्वस्थ या अन्यथा होने के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय केवल डाक्टरों बोर्ड पर निर्भर करता है।

रक्त दाब मासूम करने का तरीका

नियमन: इस कार्य के लिए पारद दाबांतरमापी किस्म का उपकरण इस्तेमाल करना चाहिए। माप किसी भी हालत में कसरत या उत्तेजना से 15 मिनट के अन्दर नहीं लिया जाना चाहिए बशर्ते कि रोगी और विशेष रूप से उसकी बांह आराम में हो। वह लेट या बैठ सकता है। बांह जिस ओर रोगी हो उस ओर कम या अधिक पड़ी हुई स्थिति में होनी चाहिए और किसी न किसी चीज पर सुखपूर्वक टिकी हुई हो। बांह पर कन्धे तक कोई वस्त्र नहीं होना चाहिए। कफ को पूरी तरह हवा निकाल कर इस प्रकार बांधा जाए कि रचड़ का बीच का सिरा बांह के भीतर हिस्से पर आए तथा इसका निचला सिरा कुहनी के मोड़ से एक या दो इंच ऊपर हो। बाद में कपड़े की पट्टी के जो लपेट हों उन्हें बैग पर एक सा फैला दिया जाए, जिससे कि हवा भरने समय वह फूल न जाए। प्रगण्ड ध्रमनी का स्थान कुहनी के मोड़ पर होने वाली धड़कन से मासूम किया जाता है। तत्पश्चात् उस पर स्टेथोस्कोप नीचे की ओर धीरे से और बीचोबीच रखा जाता है, लेकिन वह कफ का सम्पर्क नहीं करता। कफ में लगभग 200 मि० मी० पारद दाब तक हवा भर दी जाती है तथा तब धीरे-धीरे हवा निकाल ली जाती है। जिस समय एक के बाद दूसरी धीमी विस्पंद ध्वनियां सुनाई देती हैं उस समय स्तम्भ की लम्बाई जिस तल पर होती है वह तल प्रकुचन दाब का द्योतक है। जब और हवा निकालने दी जाती है विस्पंद ध्वनियों की तीव्रता बढ़ जाती है। जिस तल पर साफ सुनाई दे रही ध्वनियां धीमी, दबी हुई हुई और क्षीण होती हुई ध्वनियों में बदल जाती हैं वह अनुश्लिखित दाब का द्योतक है। माप बहुत थोड़े समय-समय के अन्दर लिया जाना चाहिए क्योंकि देर तक कफ से जकड़ा रहने के कारण रोगी परेशान हो जाता है और इससे पाठ्यांकों के गलत हो जाने की सम्भावना हो जाती है। यदि आवश्यक जान पड़े तो पुनः जांच की जा सकती है। लेकिन यह कफ की पूरी हवा निकाल देने के कुछ मिनट बाद की जानी चाहिए। (कई बार कफ की हवा निकालने समय एक निश्चित तल पर ध्वनियां सुनाई पड़ती हैं, जैसे-जैसे दाब गिरता जाता है, वे गायब होने लगती हैं और फिर और नीचे तल पर पुनः सुनाई पड़ती है। इस निस्तब्ध अंतराल के कारण पाठ्यांकन में त्रुटि हो सकती है।)

8. मूत्र (परीक्षक की उपस्थिति में किया गया) की जांच की जाए और जो परिणाम प्राप्त हों, उन्हें लेख बढ़ कर लिया जाए। जहाँ सामान्य रासायनिक परीक्षण किए जाने पर उम्मीदवार के मूत्र में शर्करा उपस्थित पाई जाए, वहाँ डाक्टरों बोर्ड मूत्र परीक्षा के अन्य सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए जाच जारी रखेगा और साथ ही विशेष रूप से मधुमेह होने के प्रत्येक संकेत अथवा लक्षण को नोट करेगा। यदि सिवाय ग्लूकोजमेह के बोर्ड यह पाए कि उम्मीदवार डाक्टरों तौर पर स्वस्थता के अपेक्षित मानदण्ड पर पूरा उतरता है तो वह उम्मीदवार को ग्लूकोजमेह के मधु मेह से भिन्न होने पर स्वस्थ घोषित कर सकता है। तत्पश्चात् बोर्ड उम्मीदवार को निर्विष्ट चिकित्सा विशेषज्ञ के पास, जिसे अस्पताल और प्रयोगशाला की सुविधाएं उपलब्ध हों, भेजेगा। चिकित्सा विशेषज्ञ मानक रक्त शर्करा सहायता परीक्षण सहित जो भी नेतानिक और प्रयोगशाला परीक्षण करना उचित समझेगा करेगा तथा अपनी राय डाक्टरों बोर्ड को प्रस्तुत करेगा, डाक्टरों बोर्ड उम्मीदवार के स्वस्थ होने या न होने के सम्बन्ध में अपनी अन्तिम राय प्राप्त हुई राय के आधार पर देगा। उम्मीदवार को दूसरी बार डाक्टरों बोर्ड के आगे पेश नहीं होना पड़ेगा। अनबत्ता औषधियों के प्रभाव के निवारण के लिए उम्मीदवार को अस्पताल में कई दिन कठोर निगरानी में रखना आवश्यक हो सकता है।

9. परीक्षणों के परिणामस्वरूप यदि किसी महिला उम्मीदवार को 12 मप्ताह या अधिक समय से गर्भवती पाया जाए तो उसे जबतक उसका प्रवस काल समाप्त नहीं हो जाता अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित किया जा सकता है। प्रसूति की तारीख के 6 मप्ताह बाद रजिस्टर्ड चिकित्सक से अपने स्वस्थ होने का डाक्टरों प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर स्वस्थता प्रमाण पत्र लिए उसकी पुनः जांच की जाएगी।

10. निम्नलिखित बातें और देखी जाएं:—

(क) उम्मीदवार के प्रत्येक कान की श्रवण शक्ति अच्छी है और कान का कोई रोग होने के कोई लक्षण नहीं है। यदि श्रवण शक्ति दोषपूर्ण हो तो उस हालत में उसके कानों की जांच कर्ण चिकित्सक से कराई जाए। अगर श्रवण शक्ति का दोष गलत क्रिया से ठीक हो सकता हो अथवा श्रवण सहायक के उपयोग से किया जा सकता है तो उम्मीदवार को इस आधार पर अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता बशर्ते कि वह कान के किसी ऐसे रोग से पीड़ित न हो, जो बढ़ रहा हो।

इस सम्बन्ध में डाक्टरों परीक्षा प्राधिकारियों का निम्न-लिखित के अनुसार मार्गदर्शन कराया जाता है:—

1. दूसरा कान सामान्य होने पर एक कान में चिह्नित 30 दशांशबल तक हो तो या पूर्ण बधिरता। श्रवण-तकनीकी कार्यों के लिए ध्यान।

2. दोनों कानों में परिदृश्य बधिरता जिसमें श्रवण-यंत्र की सहायता से कुछ सुधार संभव हो। तकनीकी तथा गैर-तकनीकी कार्य दोनों के लिए ही योग्य यदि बधिरता 1000 से 4000 तक की वाक-शक्ति आयुक्तियों में 30 दशांशबल तक हो।
3. केन्द्रीय या उपान्त प्रकार के मध्यकर्ण कला के छिद्र।
 - (i) एक कान सामान्य होने पर दूसरे कान में मध्यकर्ण कला के छिद्र मौजूद होने पर—अस्थायी तौर पर अयोग्य।
कर्ण शल्यचिकित्सा की उन्नत अवस्था के अधीन उम्मीदवार को दोनों कानों में उपान्त या अन्य छिद्रों के होने पर उसे अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित कर अवसर दिया जाना चाहिए और फिर उसके मामले में निम्न-लिखित 4 (ii) के अधीन विचार किया जाए।
 - (ii) दोनों कानों में उपान्त या एटिक छिद्र—अयोग्य।
 - (iii) दोनों कानों में केन्द्रीय छिद्र—अस्थायी तौर से अयोग्य।
4. कर्ण मूल गुहिका वाले कान एक ओर/दोनों ओर से अवसामान्य श्रवण।
 - (i) दोनों से एक कान में सामान्य श्रवण-शक्ति दूसरे कान में कर्णमूल गुहिका—तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों ही कार्यों के लिए योग्य।
 - (ii) दोनों ओर कर्णमूल गुहिका तकनीकी कार्यों के लिए अयोग्य। गैर-तकनीकी कार्यों के लिए योग्य यदि श्रवण-यंत्र की सहायता के बिना किसी कान की भी श्रवण शक्ति में 30 दशांशबल तक सुधार हो जाए।
5. दीर्घस्थायी प्रसारित कान आपरेशन किये हुए/ बिना आपरेशन के। तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों ही कार्यों के लिए अस्थायी तौर पर अयोग्य।
6. नासा-पट की अस्थिर (i) प्रत्येक व्यक्तिगत मामले की परिस्थितियों के अनुसार निर्णय किया जाएगा।
(ii) यदि तक्षणों के साथ विचलित नासा-पट मौजूद है—अस्थायी तौर पर अयोग्य।
7. गलतुण्डिका और/या स्वरयंत्र की चिरकारी शोथज दशाएं।
 - (i) गलतुण्डिका और/या स्वरयंत्र की चिरकारी शोथज दशाएं—योग्य।
 - (ii) तीव्र मात्रा में वाक् की स्वररुक्षता यदि मौजूद हो—अस्थायी तौर पर अयोग्य।
8. कान, नाक या गले के सुदृग् या स्थानीय दुर्दम गुल्म।
 - (i) सुदृग् गुल्म—अस्थायी तौर पर अयोग्य।
 - (ii) दुर्दम गुल्म—अयोग्य।
9. कर्णगहन सम्पुटकाठिन्य यदि आपरेशन के बाद या श्रवणयंत्र की सहायता से श्रवणशक्ति 30 दशांशबल के भीतर हो—योग्य।
10. कान, नाक या गले के सहज दोष।
 - (i) यदि कार्यों में बाधा न डाले—योग्य।
 - (ii) तीव्र मात्रा में हकलाना—अयोग्य।
11. नासा पालिप
 - (i) अस्थायी तौर पर—अयोग्य।
 - (ख) उसके बोलने में कोई अवरोध नहीं है,
 - (ग) उस पुरुष/महिला के दांत स्वस्थ हैं और चबाने का काम अच्छी तरह से करने के लिए आवश्यकतानुसार नकली दांत लगे हैं।
(ठीक प्रकार से भरे गए दांतों को स्वस्थ माना जाएगा)।
 - (घ) कि उसकी छाती अच्छी तरह से निर्मित है और उसका विस्तार पर्याप्त है, और उसका हृदय और फेफड़े स्वस्थ हैं।
 - (ङ) कि उसे कोई उदरीय रोग नहीं है।
 - (च) कि उसे हर्निया (रपचड़) नहीं है।
 - (छ) कि उसे हाइड्रोसील, उग्र वृषणशिरापस्फीति, अपस्फीति, शिरा अथवा बवासीर तो नहीं है।
 - (ज) कि उसके अंग, हाथ और पाद ठीक प्रकार से निर्मित और विकसित हैं और उसके सभी जोड़ों में निर्वाध और दोषरहित गति है।

- (झ) कि उसे कोई चिरकालिक त्वचा रोग नहीं है।
 (ञ) कि उसके शरीर में कोई जन्म जात विकृति अथवा दोष नहीं है।
 (ट) कि उसमें किसी ऐसे उग्र अथवा चिरकारी रोग के लक्षण नहीं हैं जिनसे ऐसा लगे कि उसका गठन खराब हो गया है।
 (ठ) कि उसका शरीर पर सफल चचक के टीके के चिह्न हैं।
 (ड) कि वह मंचारी रोगों से मुक्त है।

11. हृदय और फेफड़ों की किसी ऐसी अपसामान्यता का, जिसका साधारण शारीरिक जांच से पता नहीं लग सकता है, पता लगाने के लिए छाती का एकसरे चित्र सभी मामलों में नेमी रूप से लिया जाना चाहिए।

यदि किसी दोष का पता चले तो उसे प्रमाण-पत्र में अवश्य दर्ज किया जाना चाहिए तथा स्वास्थ्य परीक्षक को इस सम्बन्ध में अपना मत देना चाहिए कि क्या यह दोष उम्मीदवार से अपेक्षित इयूटियों के कुशल निष्पादन में बाधा का कारण बन सकता है अथवा नहीं।

टिप्पणी:—उम्मीदवार को चेतावनी दी जाती है कि उपर्युक्त पदों के सम्बन्ध में उनके शारीरिक स्वास्थ्य को निर्धारित करने के लिए नियुक्त किए गए विशेष अथवा स्थायी चिकित्सा बोर्ड के निर्णय के विरुद्ध उन्हें अपील करने का अधिकार नहीं होगा। फिर भी यदि सरकार के सामने प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के आधार पर सरकार इस बात से सन्तुष्ट हो कि पहले बोर्ड के निर्णय में त्रुटि की सम्भावना हो सकती है तो ऐसी स्थिति में सरकार दूसरे बोर्ड के लिए अपील स्वीकार कर सकती है। इस प्रकार के साक्ष्य उस पत्र की तारीख के एक मास के अन्दर प्रस्तुत किए जाने चाहिए जिसमें पहले चिकित्सा बोर्ड के निर्णय की सूचना उम्मीदवार को दी गई है अन्यथा दूसरे बोर्ड के लिए कोई भी अपील स्वीकार नहीं की जाएगी।

यदि कोई उम्मीदवार पहले बोर्ड के निर्णय में त्रुटि की सम्भावना के साक्ष्य में कोई चिकित्सा प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करता है तो उस प्रमाण-पत्र पर तब तक विचार नहीं किया जाएगा जब तक उसमें चिकित्सक की इस आशय की टिप्पणी शामिल नहीं होगी कि प्रमाण-पत्र इस तथ्य की पूर्ण जानकारी से दिया गया है कि उम्मीदवार चिकित्सा बोर्ड द्वारा सेवा के लिए शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने के कारण अस्वीकृत किया गया है।

चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट

स्वास्थ्य परीक्षक के मार्ग निर्देशन के लिए निम्नलिखित सूचना दी जा रही है:—

1. शारीरिक स्वस्थता के लिए जो मानक अपनाए जाएं उनमें सम्बन्धित उम्मीदवार की आयु और सेवा-काल पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

किसी भी व्यक्ति को सरकारी सेवा में प्रवेश के लिए तब तक योग्य नहीं माना जाएगा जब तक वह यथा स्थिति सरकार अथवा नियोक्ता प्राधिकारी को इस सम्बन्ध में सन्तुष्ट नहीं करता है कि उसे कोई ऐसा रोग, रचनात्मक विकृति अथवा शारीरिक अशक्तता नहीं जिसके कारण वह इस सेवा के लिए अयोग्य है अथवा अयोग्य होने की सम्भावना है।

इस बात को अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि शारीरिक स्वास्थ्यता का अर्थ वर्तमान और भावी स्वस्थता दोनों से है और डाक्टरों की परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि ऐसे उम्मीदवार चुने जाएं जो निरन्तर प्रभावी सेवा के योग्य हों और स्थायी नियुक्ति के मामलों में उन्हें जल्दी पेंशन देने तथा असमय मृत्यु के कारण अदायगियों से बचा जा सके। इसके साथ-साथ इस बात को भी ध्यान में रखा जाए कि प्रश्न निरन्तर प्रभावी सेवा की सम्भावना का है और किसी उम्मीदवार को किसी ऐसे दोष के आधार पर अस्वीकृत न किया जाए जो केवल बहुत ही कम मामलों में निरन्तर प्रभावी सेवा में बाधा का कारण पाया गया है।

जब कभी किसी महिला उम्मीदवार की परीक्षा की जानी होगी तब किसी महिला डाक्टर को चिकित्सा बोर्ड के सदस्य के रूप में सहयोजित किया जाएगा।

चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट गोपनीय रखी जानी चाहिए।

जब किसी उम्मीदवार को सरकारी सेवा में नियुक्ति के लिए अयोग्य घोषित किया जाए तब चिकित्सा बोर्ड द्वारा बताए गए दोष का विस्तृत व्योरा दिए बिना अस्वीकृति के कारण मोटे तौर पर उम्मीदवार को सूचित किये जाएं।

यदि चिकित्सा बोर्ड के विचार में किसी मामले में सरकारी सेवा के लिए उम्मीदवार की अयोग्यता का कारण ऐसी अशक्तता है जो उपचार (चिकित्सा अथवा शल्य चिकित्सा) से ठीक हो सकती है तो ऐसी स्थिति में चिकित्सा बोर्ड को इस आशय की टिप्पणी दर्ज करनी चाहिए। नियोक्ता प्राधिकारी द्वारा बोर्ड का मत उम्मीदवार को सूचित किए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है और जब उम्मीदवार रोग मुक्त हो जाए तब सम्बन्धित प्राधिकारी उम्मीदवार को दूसरे चिकित्सा बोर्ड के पास भेज सकता है।

जिन उम्मीदवारों को अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित किया जाता है उनके मामले में दुबारा परीक्षा की अवधि सामान्यता छः मास से अधिक नहीं होनी चाहिए। निर्दिष्ट अवधि के बाद इन उम्मीदवारों की दुबारा परीक्षा किए जाने पर उन्हें और अधिक अवधि के लिए अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित नहीं किया जाना चाहिए अपितु नियुक्ति के लिए उनकी स्वस्थता अथवा अस्वस्थता के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय दिया जाना चाहिए।

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा

उम्मीदवार को अपनी स्वास्थ्य परीक्षा से पहले निम्नलिखित कथन देना चाहिए और उसी के साथ संलग्न घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने चाहिए। निम्नलिखित टिप्पणी में दी गई

चेतावनी की ओर उसका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया जाता है :—

1. अपना पूरा नाम लिखें (स्पष्ट अक्षरों में) —————

2. अपनी आयु और जन्म का स्थान लिखें —————

2(क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमिया, नागालैंड की आदिमजाति जैसी ऐसी किसी जाति के सदस्य हैं जिनका औसत कद निश्चित रूप से कम होता है? उत्तर 'हां' या 'नहीं' में होना चाहिए। यदि उत्तर 'हां' में है तो जाति का नाम लिखें।

3. (क) क्या आपको कभी चेचक, विरामी अथवा अन्य किसी प्रकार का ज्वर, ग्रंथियों का विवर्धन अथवा पूर्यता, थूक में खून, दमा, हृदयरोग, फेफड़ों का रोग, मूच्छा, रूमेटिज्म, ऐपेण्डिसाइटिस का रोग हुआ है? अथवा

(ख) क्या कोई अन्य रोग अथवा दुर्घटना हुई है जिसके कारण आपको विस्तर पर पड़े रहने और चिकित्सा अथवा शल्य चिकित्सा करवाने की आवश्यकता पड़ी है?

4. पिछली बार चेचक का टीका कब लगा था?

5. क्या आप कभी अधिक कार्य अथवा किसी अन्य कारण से अधीरता के शिकार हुए हैं?

6. अपने परिवार के सम्बन्ध में निम्नलिखित व्यूरा दें :—

पिता यदि जीवित है तो उसकी आयु और स्वास्थ्य	मृत्यु के समय पिता की आयु और मृत्यु का कारण	जीवित भाईयों की आयु और स्वास्थ्य
(1)	(2)	(3)

मृत भाईयों की संख्या और मृत्यु के समय उनकी आयु तथा मृत्यु का कारण	मां यदि जीवित है तो उनकी आयु और स्वास्थ्य	मृत्यु के समय मां की आयु और मृत्यु का कारण
(4)	(5)	(6)

जीवित बहनों की संख्या, उनकी आयु और स्वास्थ्य	मृत बहनों की संख्या और मृत्यु के समय उनकी आयु तथा मृत्यु का कारण।
(7)	(8)

7. क्या आपकी पहले किसी चिकित्सा बोर्ड द्वारा स्वास्थ्य परीक्षा की गई है?

8. यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर "हां" में है तो कृपया बताएं कि किस सेवा (किन सेवाओं)/पद (किन पदों) के लिए आपकी स्वास्थ्य परीक्षा ली गई थी?

9. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था?

10. चिकित्सा बोर्ड द्वारा परीक्षा कब और कहाँ की गई थी?

11. चिकित्सा बोर्ड की परीक्षा का परिणाम, यदि आपको सूचित किया गया था अथवा आपको उसकी जानकारी है।

मैं घोषणा करता हूँ कि जहाँ तक मेरा विश्वास है उपर्युक्त उत्तर सत्य और सही हैं।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर

मेरी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए

बोर्ड के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

टिप्पणी :—उपर्युक्त कथन के सही होने के लिए उम्मीदवार को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। किसी सूचना को जानबूझ कर दबाने से उसकी नियुक्ति को रद्द किया जा सकता है और यदि वह नियुक्त किया जा चुका होगा तो निवर्तन भत्ते और उपदान के सभी दावे जस्त कर लिए जाएंगे।

(ख) की शारीरिक जांच के सम्बन्ध में चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट।

1. सामान्य विकास : अच्छा साधारण
 खराब
 पोषण कृश औसत
 स्थूल कद (बिना जूतों के)
 वजन
 उत्तम वजन कब
 वजन में हाल ही में हुआ कोई परिवर्तन
 तापमान
 छाती का घेरा
 छाती का घेरा

1. (पूरे प्रणवसन के बाद)
 (पूरे निःप्रवसन के बाद)

2. त्वचा : कोई स्पष्ट रोग

3. आंख : (1) कोई रोग

(2) रतौंधी

(3) रंग दृष्टि में दोष

(4) दृष्टि क्षेत्र

(5) दृष्टि तीक्ष्णता

(6) दृष्टि परीक्षा

दृष्टि तीक्ष्णता	बिना चश्मे के चश्मे के बाद	चश्मे का नम्बर गोल वेलन अक्ष
दूर दृष्टि		
दाहिनी आंख		
बाई आंख		
निकट दृष्टि		
दाहिनी आंख		
बाई आंख		
दूर दृष्टिता (स्पष्ट)		
दाहिनी आंख		
बाई आंख		

4. कान : निरीक्षण श्रवण
बाहिता कान बांया कान

5. ग्रन्थियां
थाइराइड

6. दांतों की हालत

7. श्वसन तन्त्र : क्या शारीरिक जांच से श्वसन अंगों में
किसी अपसामान्यता का पता चलता है?

यदि किसी अपसामान्यता का पता चलता है तो उसे पूरी
तरह स्पष्ट करें

8. परिसंचरण तंत्र :

(क) हृदय : कोई आंगिक विक्षति पर
खड़े रहने की स्थिति में 25 बार उछलने के
बाद तथा उछलने के 2 मिनट के बाद ।

(ख) रक्त दाव : प्रकुंचन
अनुशियलन

9. उदर : घरा, दाब, बेदना, हर्निया ।

(क) स्पर्श गोचर यकृत
प्लीहा वृक्क
अबुर्द

(ख) बवासीर
नाल व्रण

10. तन्त्रिका तन्त्र : अधीरता अथवा मानसिक निर्बलता
के लक्षण

11. चलन तन्त्र / कोई अपसामान्यता

12. जनन मल्ल तन्त्र : हाइड्रोसिल, वृषण शिरापस्फीति
आदि के लक्षण :

मूत्र विश्लेषण

(क) भौतिक रूप

(ख) विशिष्ट गुरुत्व

(ग) ऐल्ब्यूमन

(घ) कौशिकाएं

(ङ) निर्मोक

(च) शर्करा

13. छाती की एक्सरे-परीक्षा की रिपोर्ट

टिप्पणी:—महिला उम्मीदवार के मामले में यदि यह पाया
जाए कि वह 12 मप्ताह या उससे अधिक समय
से गर्भवती है तो उसे विनियमन 9 के अनुसार
अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित किया जाना
चाहिए ।

14. क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में ऐसी कोई बात है
जिसके कारण उसकी उस सेवा की, जिसका वह उम्मीदवार
है, ड्यूटियों के कुशल निष्पादन के लिए अयोग्य होने की
सम्भावना हो सकती है ?

15. उम्मीदवार की किन-किन सेवाओं के लिए स्वास्थ्य
परीक्षा हो चुकी है और किन के लिए वह अपनी ड्यूटियों
के कुशल एवं निरन्तर पालन के लिए सब प्रकार से योग्य
पाया गया है तथा किन के लिए अयोग्य पाया गया है ?

16. क्या उम्मीदवार युद्ध सेवा के योग्य है :

टिप्पणी:—बोर्ड को अपने निष्कर्ष निम्नलिखित तीन श्रेणियों
में से किसी एक के अन्तर्गत दर्ज करने चाहिए ।

(i) योग्य

(ii) के कारण अयोग्य ।

(iii) के कारण
अस्थायी योग्य ।

अध्यक्ष

सदस्य

स्थान

तारीख

परिशिष्ट III

इस परीक्षा के द्वारा भरे जाने वाले पदों के सम्बन्ध में
संक्षिप्त विवरण :—

1. इंजीनियर (श्रेणी-1) बेतार, आयोजना और समन्वय
स्कंध/अनुश्रवण संगठन, संचार मंत्रालय :

(क) वेतनमान : रु. 400-400-450-30-600-35-
670-द० रो०-35-950 ।

(ख) इंजीनियर पद के धारी इस पद-क्रम में पांच वर्ष तक सेवा करने पर सहायक बेतार, सलाहकार बेतार, आयोजना और समन्वय स्बंध/प्रभारी इंजीनियर अनुश्रवण संगठन (वेतन मान : रु० 700-40-1100-50/2-1250 तथा 100 रुपये विशेष वेतन—केवल सहायक बेतार/सलाहकार के लिए) के पदक्रम के 50 प्रतिशत रिक्त स्थानों में पदोन्नत किए जाने के पात्र होंगे। सहायक बेतार/सलाहकार/प्रभारी इंजीनियर के पदक्रम में पदोन्नति श्रेणी I के पदों के लिए बनाई गई विभागीय पदोन्नति की सिफारिश पर चुनाव के आधार पर होगी।

जिन सहायक बेतार/सलाहकारों और प्रभारी इंजीनियरों ने अपने पदक्रम में 5 वर्ष तक काम कर लिया है वे उप-बेतार/सलाहकार (वेतन मान 1100-50-1400) के रूप में पदोन्नति किए जाने के लिए विचार किए जाने के पात्र हैं। उप-बेतार/सलाहकार के पदक्रम में 75 प्रतिशत तक रिक्त स्थान श्रेणी I पदों के लिए बनाई गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर चुनाव-आधार पर भरे जाते हैं, उप-बेतार/सलाहकार के पदक्रम में 25 प्रतिशत रिक्त स्थान सीधी भरती से भरे जाते हैं।

(ग) इंजीनियर के पद पर नियुक्ति किए जाने वाले व्यक्ति को भारत में कहीं भी तैनात किया जा सकता है।

(घ) इंजीनियर के पद पर नियुक्त किए जाने वाले किसी व्यक्ति को, यदि आवश्यक समझा जाए तो, किसी भी रक्षा सेवा या भारत की रक्षा से सम्बन्धित किसी भी पद पर चार वर्ष से अत्युत्त अवधि तक, जिसमें प्रशिक्षण अवधि, यदि कोई हो, भी शामिल है, काम करना होगा। परन्तु ऐसे व्यक्ति को—

(क) अपनी नियुक्ति के 10 वर्ष पूरे हो जाने के बाद उपर्युक्त प्रकार का काम नहीं करना होगा।

(ख) साधारणतः चालीस वर्ष की उम्र के बाद उपर्युक्त प्रकार का काम नहीं करना होगा।

2. उप-प्रभारी इंजीनियर (श्रेणी I) सहायक इंजीनियर श्रेणी II (राजपत्रित) और तकनीकी सहायक श्रेणी II (अराजपत्रित) विदेश संचार सेवा, संचार मंत्रालय में,

(क) तकनीकी सहायक/सहायक इंजीनियर/उप-प्रभारी इंजीनियर के रूप में नियुक्त किए जाने वाले उम्मीदवारों को कम-से-कम दो वर्ष की अवधि के लिए परिवीक्षा पर नियुक्त किया जाएगा, यदि आवश्यक हुआ तो अवधि को बढ़ाया भी जा सकेगा।

(ख) तकनीकी सहायक/सहायक इंजीनियर/उप-प्रभारी इंजीनियर को भारत में कहीं भी काम करना होगा।

(ग) तकनीकी सहायक/सहायक इंजीनियर/उप-प्रभारी इंजीनियर के पदों पर अस्थायी नियुक्तियों के मामले में बंध-पत्र में, जिसे अधिकारी को भरना होता है, निर्दिष्ट शर्तों

के अतिरिक्त, किसी भी पक्ष से एक महीने के नोटिस दिए जाने पर उसकी सेवा समाप्त की जा सकेगी। परन्तु विभाग के ऊपर यह बात छोड़ दी गई है कि वह नोटिस के स्थान पर एक महीने का वेतन और भत्ता देकर सेवा समाप्त कर दें लेकिन अधिकारी को कोई ऐसा विकल्प नहीं दिया गया है।

(घ) वेतन मान :—

(1) तकनीकी सहायक—रु० 325-15-475-द० १०-20-575।

(2) सहायक इंजीनियर—रु० 350-25-500-30-590-द० १०-30-800-द० १०-30-830-35-900।

(3) सहायक प्रभारी इंजीनियर—रु० 400-400-450-30-600-35-670-द० १०-35-950।

(ङ) उच्चतर ग्रेडों में पदोन्नति की संभावनाएं।

(1) तकनीकी सहायक—सभी तकनीकी सहायक जिन्होंने इस पदक्रम में कम-से-कम 3 वर्ष तक काम कर लिया है, सहायक इंजीनियर वेतन मान, रु० 350-25-500-30-590-द० १०-30-800-द० १०-30-830-35-900 के पदक्रम में विभागीय पदोन्नति के लिए आरक्षित 50 प्रतिशत पदों पर योग्यता के आधार पर चुने जाने पर पदोन्नति किए जाने के पात्र हैं।

(2) सहायक इंजीनियर—सभी सहायक इंजीनियर, जिन्होंने इस पदक्रम में कम-से-कम 3 वर्ष तक काम कर लिया है, उप-प्रभारी इंजीनियर वेतन मान-रु० 400-400-450-30-600-35-670-द० १०-35-950 के पदक्रम में विभागीय पदोन्नति के लिए आरक्षित 75 प्रतिशत पदों पर योग्यता के आधार पर चुने जाने पर पदोन्नति किए जाने के पात्र हैं।

(3) उप-प्रभारी इंजीनियर—उप-प्रभारी इंजीनियर के पदधारियों को जो कम-से-कम 3 वर्ष तक उप-प्रभारी इंजीनियर या सहायक इंजीनियर के पद-क्रम में काम कर रहे हों वे प्रभारी इंजीनियर वेतन मान रु० 700-40-1100-50/2-1250 विदेश संचार सेवा के पद पर परिवीक्षाधीन अवधि, जो दो वर्ष की होगी, सफलता पूर्वक समाप्त होने पर पदोन्नत किए जाने के पात्र हैं। इस पदक्रम में सीधे भरती किए गए अधिकारियों के मामले में तीन वर्ष की न्यूनतम सेवा अवधि प्रशिक्षण सफलतापूर्वक समाप्त करने की तारीख से गिनी जाएगी। प्रभारी इंजीनियर के पदक्रम पर पदोन्नति इस प्रयोजन के लिए बनाई गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर चुनाव के आधार पर की जाएगी।

(4) प्रभारी इंजीनियर—प्रभारी इंजीनियर के पद का वह पदाधिकारी जिसने प्रभारी इंजीनियर के पदक्रम में कम-से-कम 3 वर्ष तक काम किया हो विदेश संचार सेवा में निदेशक (वेतन मान रु० 1100-50-1400) के पद पर

पदोन्नत किए जाने का पात्र है। निदेशक के पदक्रम में पदोन्नति इस प्रयोजन के लिए बनाई गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर चुनाव के आधार पर की जाएगी।

(5) निदेशक—निदेशक के पद का वह पदाधिकारी जिसने निदेशक के पदक्रम में कम-से-कम 3 वर्ष तक काम किया हो, विदेश संचार सेवा में उप-महानिदेशक (वेतनमान 1300-60-1600-100-1800 रु०) के पद पर पदोन्नत किए जाने का पात्र है। उप-महानिदेशक के पदक्रम में पदोन्नति इस प्रयोजन के लिए बनाई गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर चुनाव के आधार पर की जाएगी।

(6) उप-महानिदेशक—उप-महानिदेशक के पद का वह पदधारी जिसने उप-महानिदेशक के पदक्रम में कम-से-कम 3 वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो विदेश संचार सेवा में महानिदेशक (वेतनमान : रु० 2000 निश्चित) के पद पर पदोन्नत किए जाने का पात्र है। महानिदेशक के पदक्रम में पदोन्नति इस प्रयोजन के लिए बनाई गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर चुनाव के आधार पर की जाएगी।

(च) तकनीकी सहायक, सहायक इंजीनियर या उप-प्रभारी इंजीनियर के पद पर नियुक्त किए जाने वाले व्यक्ति को, यदि आवश्यकता हो, किसी भी रक्षा सेवा या भारत की रक्षा से सम्बन्धित किसी पद पर 3 वर्ष से अन्यून अवधि के लिए, जिसमें प्रशिक्षण में लगी अवधि भी शामिल है, काम करना होगा, परन्तु ऐसे व्यक्ति को :—

(क) अपनी नियुक्ति के 10 वर्ष पूरे हो जाने के बाद उपर्युक्त प्रकार का कार्य नहीं करना होगा,

(ख) साधारणतः चालीस वर्ष की उमर पूरी हो जाने के बाद उपर्युक्त प्रकार का काम नहीं करना होगा।

टिप्पणी :—सेवा की अन्य शर्तें जैसे, छुट्टी, स्थानान्तरण, दौरे पर, यात्रा भत्ता, कार्यारम्भ काल कार्यारम्भ काल-वेतन, डाक्टरी सुविधाएं, यात्रा खर्चा, पेंशन और उपदान, नियंत्रण और अनुशासन तथा आचरण आदि वही होंगी जो उसी हैसियत के अन्य केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों पर लागू होती है।

3. सहायक स्टेशन इंजीनियर (श्रेणी-I) तथा सहायक इंजीनियर (श्रेणी-II), महानिदेशालय, आकाशवाणी, सूचना और प्रसारण मंत्रालय :—

(क) नियुक्ति दो वर्ष की अवधि के लिए परीक्षा पर की जाएगी।

(ख) (i) इस पद पर नियुक्त किए गए अधिकारी को भारत में कहीं भी काम करना होगा तथा साथ ही उसको किसी भी समय सरकारी निगम के अधीन स्थानान्तरण किया जा सकेगा और ऐसे स्थानान्तरण होने पर उसको उस निगम के कर्मचारियों के लिए निर्दिष्ट शर्तों के अधीन काम करना होगा।

(ii) सहायक स्टेशन इंजीनियर या सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त कोई भी व्यक्ति, यदि अपेक्षित हो तो प्रशिक्षण की अवधि (यदि कोई हो) सहित, कम-से-कम 4 वर्ष की अवधि तक किसी रक्षा सेवा या भारत की सुरक्षा से सम्बद्ध पद पर कार्य करने के लिए बाध्य होगा।

परन्तु ऐसे व्यक्ति को :

(क) नियुक्ति की तारीख की 10 वर्ष की समाप्ति पर उक्त सेवा करनी अपेक्षित नहीं होगी,

(ख) चालीस वर्ष की आयु सीमा पर पहुंचने पर उक्त सेवा करनी अपेक्षित नहीं होगी,

(ग) सरकार निम्नलिखित घटनाओं पर किसी अधिकारी की नियुक्ति बिना कारण बताए समाप्त कर सकती है :—

(i) परीक्षा अवधि के दौरान या इसके समाप्त होने पर;

(ii) अनधीनता, अविनयता, कदाचार या फिलहाल लागू होने वाले सेवा सम्बन्धी नियमों के किसी उपबंध को भंग करने या पालन न करने पर;

(iii) यदि वह डाक्टरी तौर पर अनुपयुक्त पाया जाए और उसके अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए अपनी अस्वस्था के कारण काफी समय तक इसी प्रकार अनुपयुक्त बने रहने की सम्भावना हो।

अस्थायी नियुक्ति के मामले में, किसी अधिकारी की सेवा किसी भी समय बिना कारण बताए किसी भी पक्ष से एक महीने का नोटिस देकर समाप्त की जा सकती है।

(घ) वेतन मान :

(i) सहायक स्टेशन इंजीनियर—रु० 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-900।

(ii) सहायक इंजीनियर 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800-द० रो०-30-830-35-900 रु०।

(ङ) उच्चतर पदक्रमों में पदोन्नति की संभावनाएं :—

सहायक इंजीनियर तथा सहायक स्टेशन इंजीनियर

(i) वह सहायक इंजीनियर जिसने इस पदक्रम में 3 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है आकाशवाणी में 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-950 रु० के वेतनमान में विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों पर विभागीय पदोन्नति के लिए आरक्षित 40 प्रतिशत रिक्तियों के लिए चुनाव के आधार पर सहायक स्टेशन इंजीनियर के ग्रेड में पदोन्नति किये जाने का पात्र है।

- (ii) वह सहायक स्टेशन इंजीनियर जिसने इस पदक्रम में 5 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है, आकाशवाणी में 700-40-1100-50/2-1250 रु० के वेतनमान में विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों पर चुनाव के आधार पर स्टेशन इंजीनियर के ग्रेड में पदोन्नति किए जाने का पात्र है।
- (iii) वह स्टेशन इंजीनियर जिसने 7 वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो 1300-60-1600 रु० के वेतनमान में विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों पर चुनाव के आधार पर वरिष्ठ-इंजीनियर के ग्रेड में पदोन्नत किये जाने का पात्र है।
- (iv) वरिष्ठ इंजीनियर उप-मुख्य इंजीनियर (1600-100 1800 रु०) के रूप में पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं, उप-मुख्य इंजीनियर अतिरिक्त मुख्य इंजीनियर के रूप में पदोन्नत किये जाने के पात्र होंगे जोकि मुख्य इंजीनियर (2000-125-2250 रु०) के पद पर पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं।

टिप्पणी :—सेवा की अन्य शर्तें जैसे छुट्टी, स्थानान्तरण, दौरे पर यात्रा भत्ता, कार्यारम्भ काल, कार्यारम्भ काल वेतन, डाकटरी सुविधाएं, यात्रा रियायत, पेंशन और उपदान, नियन्त्रण और अनुशासन, तथा आचरण आदि, वही होंगी जो उसी हैमियन के अन्य केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों पर लागू होती है।

4. तकनीकी अधिकारी (श्रेणी I) और संचार अधिकारी (श्रेणी I) सिविल विमानन विभाग, पर्यटन और सिविल विमानन मंत्रालय में;

- (क) नियुक्ति के लिए चुने गए उम्मीदवारों को 2 वर्ष की अवधि के लिए परीक्षा पर नियुक्त किया जाएगा, इस अवधि में उनको समय-समय पर विहित किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षण लेना होगा। जिन व्यक्तियों को अनु-कूल रिपोर्ट दी गई हो और जिन्होंने विहित की गई परीक्षा या परीक्षाएं पास की हों उनको अस्थायी संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी नियुक्त किया जाएगा। जब भी उनके स्थायीकरण के लिए पद उपलब्ध होंगे उन पर संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी/के पदक्रम में स्थायी किए जाने के लिए विचार किया जाएगा।
- (ख) यदि सरकार के मत में किसी परीक्षाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण असन्तोषजनक हो या यह प्रतीत हो कि उसके कार्यकुशल होने की संभावना नहीं है तो सरकार उसे तत्काल सेवा-मुक्त कर सकती है।
- (ग) परीक्षा अवधि समाप्त होने के बाद सरकार उसकी अपने पद पर स्थायी नियुक्ति कर सकती है या यदि सरकार के मत में उसके कार्य और आचरण असन्तोषप्रद रहे हैं सरकार या तो

उसे सेवा-मुक्त कर देगी या परीक्षा अवधि उतने समय के लिए बढ़ा देगी जितनी वह आवश्यक समझे।

- (घ) यदि इस नियम के उप-नियम (ख) और (ग) के अन्तर्गत सरकार कोई कार्यवाई न करे तो परीक्षा के लिए विहित अवधि के बाद की अवधि को मास-अनु-मास आवध माना जाएगा जो किसी भी पक्ष के एक मास के नोटिस के द्वारा समाप्त किया जा सकेगा।
- (ङ) यदि सरकार द्वारा सेवा में नियुक्ति करने की शक्ति किसी अधिकारी को सौंपी गई हो तो वह अधिकारी इस नियम के अन्तर्गत सरकार की किसी भी शक्ति का उपयोग कर सकेगा।
- (च) इस नियम के अन्तर्गत भरती किए गए अधिकारी छुट्टी, वेतन-वृद्धि और पेंशन के लिए उन्हीं नियमों के अनुसार पात्र होंगे जो फिलहाल प्रचलित हैं, और केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों पर लागू होते हैं। वे केन्द्रीय भविष्य-निधि में भी इस निधि के नियम विनियमों के अनुसार शामिल होने के पात्र हैं।
- (छ) ये अधिकारी भारत में कहीं भी, और आपात्काल स्थिति में भारत के बाहर किसी भी क्षेत्र-सेवा में स्थानान्तरित किए जा सकेंगे। उनको उड़ान वाले किसी जहाज पर कार्य सम्भालने के लिए भी कहा जा सकता है।
- (ज) इंजीनियरी सेवा (इलेक्ट्रानिक्स) परीक्षा के द्वारा नियुक्त होने वाले अधिकारियों की पारस्परिक वरिष्ठता साधारणतः परीक्षा में उनके योग्यता के क्रम से निश्चित की जाएगी। लेकिन भारत सरकार का वैयक्तिक मामलों में अपने विवेक पर वरिष्ठता को निश्चित करने का अपना अधिकार सुरक्षित है।
- (झ) उच्चतर पदक्रमों के लिए पदोन्नति की संभावनाएं : वरिष्ठता संचार अधिकारी/वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी :—संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी अपने पदक्रम में कम से कम 3 वर्ष की सेवा पूरी कर लेने पर वरिष्ठता व योग्यता के आधार पर 700-40-1100-50-2-1250 रु० के वेतनमान में नागर विमानन विभाग में वरिष्ठ संचार अधिकारी/वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी के पदों पर पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं बशर्ते कि ऐसे पद उपलब्ध हों।
- उप-निदेशक/नियंत्रक, संचार के पदक्रम में पदोन्नति : वरिष्ठ संचार अधिकारी/वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी जिन्होंने अपने ग्रेड में कम से कम 3 वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो, वे विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों पर चुनाव के

आधार पर 1100-50-1400 रु० के वेतनमान में उप-निदेशक/नियन्त्रक संचार के पदक्रम में पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं।

नागर विमानन विभाग में पदोन्नति के इस क्रम में अगली पदोन्नति का पद विभागीय पदोन्नति समिति द्वारा चुनाव किये जाने की शर्तों के अनुसार 1300-60-1600-100-1800 रु० के वेतनमान में निदेशक (संचार तथा अंतर्राष्ट्रीय विमानक्षेत्र) 1800-100-2000 रु० के वेतनमान में उप-महानिदेशक और 2500-125/2-2750 रु० के वेतनमान में महानिदेशक।

(अ) सेवा की आवश्यकताओं के अनुसार सेवा की शर्तों में परिशोधन किया जा सकता है। बाद में सेवा की शर्तों में परिवर्तन किए जाने से यदि उम्मीदवारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े तो उनको किसी प्रकार का मुआवजा पाने का हक नहीं होगा।

(ट) विमानन विभाग में संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी के वेतनमान नीचे दिए गए हैं :—

(i) संचार अधिकारी (श्रेणी I) रु० 400-400-450-30-600-35-670-द०रो०-35-950।

(ii) तकनीकी अधिकारी (श्रेणी I) रु० 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-950।

(ठ) संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी के पद पर नियुक्त किये जाने वाले व्यक्ति को यदि आवश्यक समझा जाए तो किसी भी रक्षा सेवा या भारत की रक्षा में संबंधित किसी पद पर चार वर्ष से अन्यून अवधि तक जिसमें प्रशिक्षण की अवधि यदि कोई हो, भी शामिल है, काम करना होगा।

परन्तु ऐसे व्यक्ति को,

(क) अपनी नियुक्ति के 10 वर्ष पूरे हो जाने के बाद उपर्युक्त प्रकार का काम नहीं करना होगा।

(ख) साधारणतः 40 वर्ष की उम्र के बाद उपर्युक्त प्रकार का काम नहीं करना होगा।

5. तकनीकी विकास महानिदेशालय औद्योगिक विकास मंत्रालय में सहायक विकास अधिकारी (इंजीनियरी) (श्रेणी I) :—

(क) तकनीकी विकास महानिदेशालय में सहायक विकास अधिकारी (इंजी०) के पद पर नियुक्त किए गए व्यक्ति 2 वर्ष के लिए परीक्षाधीन रहेंगे।

(ख) इस श्रेणी I (राजपत्रित) पद का वेतनमान 400-400-450-30-600-35-670-द०रो०-35-950 रु० है।

(ग) अपने पदक्रम में 5 वर्ष की सेवा वाले सहायक विकास अधिकारी तकनीकी विकास महानिदेशालय

में 700-40-1100-50/2-1150-द० रो०-1300-60-1600 रु० के वेतनमान में विकास अधिकारी के पद पर पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं। विकास अधिकारी पदक्रम में 50 प्रतिशत पद पदोन्नति द्वारा भरे जाते हैं। विकास अधिकारी औद्योगिक सलाहकार (1800-2000 रु०) के रूप में पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं। औद्योगिक सलाहकार उप-महानिदेशक (2500-125/2-2750 रु०) के पदों पर पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं और उप-महानिदेशक भी महानिदेशक (तकनीकी विकास) (3000 रु०) के पद पर पदोन्नत किये जाने के पात्र हैं।

(घ) इस प्रतियोगी परीक्षा परिणामों के आधार पर नियुक्त कोई भी व्यक्ति, यदि अपेक्षित हो तो, प्रशिक्षण की अवधि सहित यदि कोई हो, कम से कम 4 वर्ष की अवधि तक रक्षा सेवा या भारत की सुरक्षा से सम्बद्ध पद पर कार्य करने के लिए बाध्य होगा।

परन्तु ऐसे व्यक्ति को :

(i) ऐसी नियुक्ति की तारीख की 10 वर्ष की समाप्ति पर उक्त सेवा करनी अपेक्षित नहीं होगी।

(ii) 40 वर्ष की आयु सीमा पर पहुंचने पर उक्त सेवा करनी सामान्यतः अपेक्षित नहीं होगी।

6. उप आयुद्ध पूर्ति अधिकारी पदक्रम II (श्रेणी I) भारतीय नौसेना रक्षा मंत्रालय में :

(क) इस पद पर नियुक्त किए जाने के लिए चुने गए उम्मीदवारों को परीक्षाधीन के रूप में दो वर्ष के लिए नियुक्त किया जाएगा। इस अवधि को समर्थ अधिकारी अपने विवेक के अनुसार बढ़ा सकता है। यदि परीक्षाधीन व्यक्ति ने यह अवधि समर्थ अधिकारी के संतोष के अनुसार समाप्त न की तो उसको सेवा-मुक्त कर दिया जाएगा। परीक्षा की अवधि में उनको 9-12 महीने के तकनीकी पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण लेना होगा और अधिक से अधिक तीन मौकों में विभागीय परीक्षा पास करनी होगी। यदि वे विभागीय परीक्षा पास न कर सके तो सरकार के विवेक के अनुसार उनको सेवा मुक्त किया जा सकेगा। उन्हें प्रशिक्षण के लिए जाने के पहले, भारतीय नौसेना में प्रशिक्षण के बाद 3 वर्ष की अनिवार्य सेवा करने के सम्बन्ध में 1500 रु० (यह रकम समय-समय पर भिन्न-भिन्न हो सकती है) के एक बंधपत्र पर हस्ताक्षर करने होंगे।

(ख) समर्थ अधिकारी आवश्यक अवधि (अस्थायी नियुक्ति के मामले में एक मास और स्थायी नियुक्ति के मामले

में 3 मास) का नोटिस देकर नियुक्ति को कभी भी समाप्त कर सकता है। लेकिन सरकार का यह अधिकार सुरक्षित है कि वह नोटिस की अवधि या उसके समाप्त न हुए भाग के लिए समान वेतन और भत्ते देकर नियुक्त व्यक्तियों को तत्काल या अनुबद्ध अवधि समाप्त होने के पहले सेवा मुक्त कर दे।

(ग) उन की सेवा की शर्तें वही होंगी जो उन असैनिक सरकारी कर्मचारियों पर लागू होती हैं जिनको समय-समय पर भारत सरकार द्वारा जारी किए गए आदेशों के अनुसार रक्षा सेवा अनुमानों से वेतन लिया जाता है। उन पर समय-समय पर संशोधित रणक्षेत्र सेवा दायित्व, नियम, 1957 लागू होंगे।

(घ) उनका भारत या विदेश में कहीं भी स्थानान्तरण किया जा सकेगा।

(ङ) वेतन मान और वर्गीकरण—श्रेणी—I—राजपत्रित वेतनमान रु० 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-950।

(च) उच्चतम पदक्रम में पदोन्नति की सम्भावनाएं :

(i) उप-आयुध पूर्ति अधिकारी (पदक्रम I) वे उप-आयुध पूर्ति अधिकारी (पदक्रम II) जिन्होंने 3 वर्ष की सेवा कर ली है उ० आ० पू० अ० पदक्रम I, वेतन रु० 700-40-1100-50/2-1250 के पद पर विभागीय पदोन्नति की सिफारिश पर चुनाव किए जाने पर पदोन्नत किए जाने के पात्र हैं। लेकिन शर्त यह है कि पदोन्नति के लिए केवल उन्हीं अधिकारियों पर विचार किया जाएगा जिन्होंने वह विभागीय परीक्षा पास कर ली हो जो तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम या आयुध तकनीकी संस्थान, किरकी में नौसेना तकनीकी स्टाफ अधिकारी पाठ्यक्रम के बाद में ली गई हो। इस विभागीय परीक्षा का पाठ्य विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

पाठ्यविवरण :—

(1) नौसेना आयुध भंडार, विशाखापटनम्
(क) कर्मशाला कार्य (तीन मास)
(ख) गन वार्फ तकनीकी पाठ्यक्रम I
(ग) गोला बारूद तकनीकी पाठ्यक्रम I
(घ) प्रशासन और लेखा पाठ्यक्रम
(ङ) बालासोर, कोसीपुर, ईसापुर और जबलपुर का दौरा } 37 सप्ताह

(2) गनरी स्कूल और टी० ए० एस० स्कूल

(3) हेवी वेहिकल फैंट्री आवाड़ी और कोर्डॉइट फैंट्री, अरुवाडू का दौरा। 2½ सप्ताह

(4) नौसेना आयुध भंडार, बम्बई—

(क) गनवार्फ तकनीकी पाठ्यक्रम II
(ख) गोलाबारूद तकनीकी पाठ्यक्रम II
(ग) आर्डिनेंस फैंट्री, अम्बरनाथ का दौरा } 5 सप्ताह

(5) आयुध तकनीकी संस्थान, किरकी

(6) (क) एच०ई० फैंट्री, गोला बारूद फैंट्री, ए०आर०डी० और ई० बी० आर० डी० एल० किरकी का दौरा 4½ सप्ताह

(7) आर्डिनेंस फैंट्री, शैल आर्मस फैंट्री, कानपुर, बरास्ता नौसेना मुख्यालय, नई दिल्ली। 1/4 सप्ताह

(8) नौसेना मुख्यालय, नई दिल्ली रक्षा विज्ञान प्रयोगशाला, दिल्ली का दौरा/अंतिम परीक्षा 1½ सप्ताह

(ii) नौसेना आयुध पूर्ति अधिकारी (सामान्य पदक्रम)

उप-आयुध पूर्ति अधिकारी ग्रेड I जिन्होंने इस रूप में 3 वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो, वे नौसेना आयुध पूर्ति अधिकारी (सामान्य पदक्रम) वेतनमान रु० 1100-50-1400 के पदक्रम में, समुचित विभागीय पदोन्नति समिति के द्वारा चुने जाने के आधार पर पदोन्नति किए जाने के पात्र हैं।

(iii) नौसेना पूर्ति अधिकारी (प्रवरण पाठ्यक्रम)

वे नौसेना आयुध पूर्ति अधिकारी (सामान्य पदक्रम) जिन्होंने इस प्रकार (तीन वर्ष) की सेवा पूरी कर ली हो, नौसेना आयुध पूर्ति अधिकारी (प्रवरण पदक्रम) वेतनमान रु० 1300-60-1600 के पदक्रम में विभागीय पदोन्नति समिति के द्वारा चुनाव किए जाने के आधार पर, पदोन्नत किए जाने के पात्र हैं।

(iv) निदेशक आयुध पूर्ति

नौसेना आयुध पूर्ति अधिकारी (प्रवरण पदक्रम सामान्य पदक्रम) जिन्होंने इस पदक्रम/इन पदक्रमों में पांच वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो वे निदेशक आयुध पूर्ति, वेतनमान रु० 1600-100-1800 के पदक्रम के समुचित विभागीय पदोन्नति समिति द्वारा चुनाव किए जाने के आधार पर पदोन्नति किए जाने के पात्र होंगे।

7. केन्द्रीय सरकार के अधीन अन्य पद जिनके सामान्यतः नीचे दिए गए वेतनमान हैं :—

(i) श्रेणी I—रु० 400-950।

(ii) श्रेणी II—रु० 350-900।

PRESIDENT'S SECRETARIAT*New Delhi, the 14th November 1972*

No. 119-Pres./72.—The President is pleased to award the "SHAURYA CHAKRA" for acts of gallantry to :—

1. Shri KALI CHARAN,
Village Ayar,
District Etah, Uttar Pradesh.

(Effective Date of the Award—20th February 1966)

On the 20th February, 1966, at about 1830 hours, the gang of the notorious dacoit Mahabira, armed with deadly weapons, raided the house of Shri Tota Ram and Shri Rati Ram of village Ayar, in Madhya Pradesh. A group of about 18-19 people of the gang entered the house of Shri Tota Ram and started firing indiscriminately and killed seven members of the family. Another group of dacoits entered the adjoining house of Shri Rati Ram, committed murder and set the house on fire. Shri Tota Ram in order to save himself and his two daughters, entered a room and bolted it from inside. In the meanwhile, the dacoits committed gruesome and cold-blooded murder of 16 persons and created a dreadful scene. As the dacoits were not able to break open the door to will Shri Tota Ram and his two daughters, they set fire to the house. In the meantime, Shri Kali Charan, brother of Shri Tota Ram, unmindful of the grave risk to his own life, came out with his gun and reached the scene, and finding no other suitable cover to face the dacoits, took position behind a tree, challenged the dacoits and opened fire. In the encounter between him and the dacoits, Shri Kali Charan was successful in shooting down two of the dacoits. This demoralised the gang which retreated. The brave and undaunted action of Shri Kali Charan prevented the dacoits from committing further murders and saved the lives of Shri Tota Ram and his two daughters.

In this action, Shri Kali Charan displayed gallantry, initiative and determination of a high order.

2. 7111682 Craftsman Carpenter and Joiner
DURLOV CHANDRA DAS,
Corps of Electrical and Mechanical Engineers.
(Posthumous).

(Effective date of the award—11th June 1970)

On the 11th June, 1970, Craftsman Carpenter and Joiner Durlov Chandra Das was travelling on duty by a passenger train on Howrah-Kharagpur Section of the South Eastern Railway in West Bengal. At 0830 hours, the train was attacked at Ulubaria railway station by some anti-social elements who started pelting stones and causing damage to railway rakes. The trouble created by the hooligans caused confusion and panic among the passengers. The Guard of the train sought assistance from the travelling public and specially from Army personnel. Craftsman Durlov Chandra Das, along with some other co-passengers in uniform, came out of the compartment and chased the miscreants unarmed. Some of the miscreants had meanwhile climbed on the roof of the train. At the request of the Guard, Craftsman Das climbed up to chase the miscreants away from the roof without caring for the risk involved. While Craftsman Das was still on the roof, the train moved slowly and he got struck against an over-head high tension power line. As a result, he was extensively burnt and was thrown away from the roof of the running train. He was rushed to the nearest civil hospital and then to command Hospital, Calcutta, where he died on the 13th June, 1970.

In this action, Craftsman Carpenter and Joiner Durlov Chandra Das displayed gallantry and initiative of a high order.

3. Shri GOVINDA RAO,
G/59863 Chargeman (Plant)

Speedy restoration of road communications, after Alaknanda devastation on road Rishikesh-Joshimath-Badrinath in July 1970, largely depended upon the induction of the equipment and machines from other sectors and their deployment on this road. Shifting of machines across the nullahs, gaping ravines, deep gorges and active slides was a very difficult and hazardous task. Maintenance of the equipment and machines to a high standard of efficiency was also essential to undertake this task. Chargeman Govinda Rao, however, undeterred by all these difficulties skilfully tackled the tricky and intricate problem of dismantling, shifting to the required points and re-assembling the machines, along hazardous and

risky tracks, sometimes climbing vertical hill slopes with the help of ropes. By his personal example and grim determination, he inspired his men to undertake similar risks with the sole idea of proving equal to the task that had been given to him. He worked day and night in heavy rain, and attended to repair work round the clock to ensure that the machines were ready for work next morning.

Throughout, Shri Govinda Rao, Chargeman (Plant) displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

4. Captain HARISH KUMAR SINGH MEHTA
(IC-17812) Punjab.

(Effective date of the award—2nd September, 1970)

On the 2nd September, 1970, a patrol of 15 Other Ranks under Captain Harish Kumar Singh Mehta was ordered to raid a suspected hideout in Thenzawal Sector in South Mizo Hills. He led the patrol at midnight to ensure surprise and secrecy. The patrol reached the suspected area in the early hours of the morning, after having covered a hazardous terrain, which involved considerably uphill climb and crossing of the river Daleshwari on a raft, and immediately started probing the area. At day break, a favourable breeze brought the smell of boiling rice to the search party. Captain Mehta led the patrol in the direction from which the smell was coming and after having travelled about 1,000 yards through a nullah spotted a hideout guarded by a sentry in uniform. Disregarding his personal safety, he immediately assaulted the hut and killed the hostile sentry and injured another hostile who was trying to escape through the surrounding undergrowth. He chased the injured hostile and captured him. On the basis of the information collected from the captured hostile, more raids were carried out in the area. In all these raids, Captain Mehta killed one hostile, captured two and forced three hostiles to surrender. Several weapons were also captured by him.

Throughout, Captain Harish Kumar Singh Mehta displayed gallantry and leadership of a high order.

5. 18578 Rifleman PASH BAHADUR GURUNG
Assam Rifles.

(Effective date of the award—9th September, 1970)

On the night of the 9th/10th September, 1970, a column was detailed to raid a hostile camp located on Thingsaitlong approximately 25 kilometres from Aijal. This camp was located on a precipitous slope and surrounded by a thick bamboo jungle. There was only one approach to the camp along a track running along the eastern bank of the nullah and it was heavily guarded by hostiles. Rifleman Pash Bahadur Gurung volunteered to lead the column. When he was only 10 metres from the camp, the hostiles took up firing positions. Undeterred, Rifleman Pash Bahadur Gurung charged the camp single-handed and shot dead two hostiles. The hostiles fled leaving behind the dead. Encouraged by his personal example, his column followed him and succeeded in killing two hostiles, wounding another two and capturing large quantities of arms and ammunition. With the success of this raid, the hostiles party responsible for sabotage on road Selling Serchhip, was completely liquidated.

In this action, Rifleman Pash Bahadur Gurung displayed courage, initiative and determination of a high order.

6. 213103 Sergeant KAILASH CHANDER SHARMA
ACH/GD.

(Effective date of the award—15th September, 1970)

On the 15th September, 1970, a fire broke out in the stores section of a Helicopter Unit. Sergeant Kailash Chander Sharma, the Unit Warrant Officer, immediately raised alarm and rushed to the scene of the fire carrying two fire extinguishers. He found that the fire was spreading, and that it could endanger the adjacent store rooms and the hanger in which two aircraft were parked. He fought the fire single-handed, until reinforcement arrived. The flames were fierce and he suffered severe burns on his body. Though not a trained fire fighter, he continued fighting the fire with complete disregard to his personal safety, until overcome by heat, smoke and fumes, he collapsed. He was rescued by 229133 Corporal Tilak Raj Sharma who arrived at the scene. Sergeant Kailash Chander Sharma's efforts succeeded in localising the fire to only two rooms and enabled the two aircraft in the hanger and other valuable stores to be shifted to a place of safety.

In this action Sergeant Kailash Chander Sharma displayed courage, determination and initiative of a high order.

7. 229133 Corporal TILAK RAJ SHARMA
CARP/RIG.

(Effective date of the award—15th September, 1970)

On the 15th September, 1970, a fire broke out in the stores section of a Helicopter Unit. On hearing this, Corporal Tilak Raj Sharma immediately ran to the scene of the fire. After rescuing Sergeant Kailash Chander Sharma, who had collapsed due to heat, smoke and fumes, he started fighting the fire. Corporal Sharma, though not a trained fire-fighter, continued fighting the fire in complete disregard to his personal safety. He suffered severe burns on his body and finally collapsed, whereupon he was rescued by other personnel engaged in fire fighting operations. Corporal Tilak Raj Sharma's efforts helped in localising the fire to only two rooms. Two aircraft and other valuable stores were however saved.

In this action, Corporal Tilak Raj Sharma displayed courage, determination and initiative of a high order.

8. 807415 Non-Combatant (Enrolled)

YAMAPALLA PAPA RAO, COOK.

(Effective date of the award—15th September, 1970)

On the 15th September, 1970, a fire broke out in the stores section of a Helicopter Unit. On hearing that the unit stores were on fire, NC(E) Yamapalla Papa Rao, Cook, immediately rushed to the scene of the fire carrying two fire extinguishers. He found that the fire had spread and was endangering the safety of the adjacent store rooms and the hangar in which two aircraft were parked. He immediately started fighting the fire. Though the flames were fierce and he suffered severe burns on his body, NC(E) Yamapalla Papa Rao continued fighting the fire with complete disregard to his personal safety until the regular fire fighting party took over. NC(E) Yamapalla Papa Rao's efforts helped to localise the fire to only two rooms and enabled two aircraft and other valuable stores to be shifted to a place of safety.

In this action, NC(E) Yamapalla Papa Rao displayed courage, initiative and determination.

9. RAMANAND KIMOTHI,

Chief Engineering Mechanic No. 46156.

(Effective date of the award—31st December, 1970)

On the 31st December, 1970, A 1 Boiler of INS MYSORE was scheduled to be flashed up for carrying out trials of the auxiliary machinery. Since the boiler was inoperative for a long time, difficulty was experienced in firing it. This was due to the boiler tubes being choked with soot, which resulted in three successive flash backs. As the trials of the auxiliary machinery depended on the availability of steam, this defect would have delayed the commencement of the scheduled trials. Despite the earlier flash backs, Ramanand Kimothi, Chief Engineering Mechanic, attempted to fire the boiler after rectifying the defect. In his zeal to go ahead, a flash occurred causing burns on his face and right arm. The sailor's presence of mind and prompt action prevented the accident from being more serious. Again, on the 9th January, 1971, the feed water pump was feeding the boiler incorrectly. Despite his burns, the sailor went into Boiler Room to help rectify the defective pump. Although in attempting to start the pump, he sustained injuries on his already burnt arm causing excessive bleeding, he continued to work on the pump till it was started.

Throughout, Chief Engineering Mechanic Ramanand Kimothi displayed gallantry and determination of a high order.

10. Major KANWALJIT SINGH (IC-14590)
Punjab.

(Effective date of the award—2nd February, 1971)

On the 2nd February, 1971, Major Kanwaljit Singh was supervising the grenade throwing practice by the personnel of his Company at a filed firing range. He himself was positioned in No. 2 throwing bay to supervise throwing, on orders of the Officer-in-Charge. One of the soldiers lobbed the Grenade in a manner that it fell back in the same throwing bay in which he himself and Major Kanwaljit Singh

were standing. Major Kanwaljit Singh immediately warned every one to remain in cover and pushed the soldier to one side thus shielding him from the grenade burst. Knowing well that the safety time of four seconds was almost over, Major Kanwaljit Singh relobbed the grenade away from the trench in a most daring manner. While doing so, the grenade burst at the time of release severing a major portion of the palm and four fingers of his left hand.

In this action, Major Kanwaljit Singh displayed gallantry and initiative of a high order.

11. GO-1061 Assistant Engineer (Civil)

Shri PONNU SUKUMARAN.

(Effective date of the award—21st July, 1971)

Shri Ponnu Sukumaran was incharge of road Damdim-Algarah on the night of 21st/22nd July, 1971, when there was very heavy rain in the area. With a view to taking stock of the road condition and to ascertain the extent of damage that may have been caused by the downpour and the swollen and turbulent rivers, he left his camp early next morning. He negotiated many landslides on the way. On approaching Chelkhole bridge, he found the road completely breached. Realising possibility of damages to the bridge, which was vital for the road communications in that area, he wanted to survey it but there was no alternative approach available. He then decided to have a look on the bridge by climbing up a hill despite the fact that there was danger to his life in doing so due to falling boulders and slippery hill conditions. On reaching the hill-top, he noticed that one side abutment of the bridge had been washed away by the river and that end of the bridge was over-hanging. He climbed down the steep hill from where huge boulders were still rolling down. He managed to collect essential stores and muster the help of a few of his men. By working throughout the day in grave danger to his own life, he succeeded in anchoring the bridge by improvised means and thus saved it.

Throughout, Shri Ponnu Sukumaran displayed exemplary courage, determination, and devotion to duty of a high order.

12. Shri RAM LUBHAYA

G/143683 Superintendent B/R Gde II.

After the Alaknanda tragedy, Shri Ram Lubhaya was detailed for a 12 ft. wide initial track cutting in the Patal-ganga rock of road Rishikesh-Joshimath. The bursting of the lake which was responsible for the unprecedented devastation of the area, left nothing but bare and solid rock with deep vertical slopes. Restoration of road communications was possible only by cutting a track through this highly unstable and seemingly impossible rocky strata. The only way in which the rocks could be approached was by suspending oneself with ropes. Because of high instability of these rocky strata, there was general reluctance to undertake suspended drilling. Faced with this difficult situation, Shri Ram Lubhaya, with a rope tied around his waist, led his men to the required drilling points in spite of great danger to his own life. By his fearless and inspired his team to face risks and thus the work assigned to him.

Throughout, Shri Ram Lubhaya displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

13. G/35482 Mason PURNABIR SUNDAS

(Effective date of the award—21st July, 1971)

Due to unprecedented heavy downpour on the night of the 21st/22nd July, 1971 in the Paperkhiti Sub-Division, one of the sides of the abutments of Chelkhola Bailey Bridge was partly eroded by the turbulent river underneath, and the bridge was in imminent danger of being washed away. Mason Purnabir Sundas, who lived in a village across the river, on seeing the critical condition of the bridge, which is very vital for the road communications in the area, without any orders from any superior authority, decided to reach his detachment location to inform the Officer-in-Charge for immediate remedial measures to safeguard the bridge. Fully conscious of the risk involved to his own life, he crossed the loosely hanging bridge, but found his way blocked by a very active land-slide. In the face of imminent danger to his life, he climbed over a narrow and dangerous ledge to achieve his objective. Ultimately, he returned to the damaged bridge site with his sector-in-charge. He joined the small party of men, and succeeded in retrieving the bridge by anchoring it with improvised methods.

Throughout, Mason Purnabir Sundas displayed courage, initiative and determination of a high order.

14. 13655243 Havildar GOPI SINGH
Guards.

(Effective date of the award—11th September, 1971)

On the 11th September, 1971, information was received from Sub-Divisional Officer, Karimganj that two time-bombs had been found in a ladies compartment in 212 UP Passenger train which had halted between SUPAR KANDI and NILAM BAZAR railway stations GANJ Sub-Division of North CACHAR, ASSAM h East Frontier Railway. Havildar Gopi Singh with a party of six other Ranks went to the spot and found that the whole train had been vacated by the passengers. He entered the compartment and found two highly complicated imported time-bombs. He single-handedly disarmed the charges, made them safe, removed them from the train and destroyed them.

In this action, Havildar Gopi Singh displayed exemplary courage and determination of a high order.

P. N. KRISHNA MANI, Jt. Secy.
to the President.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

(Department of Industrial Development)

New Delhi, the 24th October 1972

RESOLUTION

No. 20-37/72-HEM.—Reference this Ministry's Resolution No. 20-39/71-HEM, dated the 27th December, 1971 nominating various members on the Committee to review the activities and advise on the programme of the Research and Development Organisation for Electrical Industry, Bhopal, Government hereby nominate with immediate effect Shri R. V. Subrahmanian, Additional Secretary in this Ministry, as Chairman of the Review Committee of the Research and Development Organisation for Electrical Industry, Bhopal.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India for general information.

N. J. KAMATH, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE

(Department of Social Welfare)

New Delhi, the 26th October 1972

RESOLUTION

No. F.7-1/72-S.W.2.—In partial modification of this Department Resolution No. 8/11/70-S.W.5, dated the 4th January, 1971 constituting an Advisory Committee on Integrated Services for Children and Youth in Urban Areas the following changes in the composition of this Committee are hereby notified :—

1. Shri P. K. Samal Joint Secretary(N), Department of Social Welfare, New Delhi.—*Member*.
2. Shri S. Sathvam, Deputy Secretary (SW), Department of Social Welfare, New Delhi.—(vice Shri M. C. Nanavatty, Adviser, Department of Social Welfare).
3. Prof. Deva Raj, Director (CMA), Indian Institute of Public Administration, New Delhi.—(vice Prof. G. Mukharji).
4. Shri A. B. Malik, Joint Secretary Department of Health, Ministry of Health & Family Planning, New Delhi.—(vice Shri R. N. Madhok, Joint Secretary, Department of Health)
5. Shri Ishwar Chandra Director General, Employment & Training, Ministry of Labour & Employment, New Delhi.—(vice Shri S. K. Mallick).
6. Dr K. G. Krishnamurthy, Joint Director, Planning Commission, New Delhi.—(vice Dr A. B. Bose).

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all the Members of the Committee: all the Ministries of the Government of India, the Planning Commission; Lok 5—341GI/72

Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat; the Cabinet Secretariat and Prime Minister's Secretariat; the Department of Parliamentary Affairs and the Chief Secretaries of all the State Governments and Union Territories.

ORDERED also that this Resolution be published in the Gazette of India for general information.

O. P. SINGH BHATIA, Under Secy.

ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA

New Delhi, the 13th April 1972

RESOLUTION

No. 36/1/72-M.—With a view to promoting closer contacts between the Archaeological Survey of India and the Indian Universities conducting archaeological and other related studies, and training future archaeologists; to providing for closer association of learned societies in India and of the State Governments with the activities of the Archaeological Survey of India; the President is pleased to reconstitute the Central Advisory Board of Archaeology for a period of four years from the 1st May, 1972, with the following composition and functions :—

Composition :—

Chairman

- (i) Minister of Education Social Welfare and Culture, or in his absence, the Minister of State or the Deputy Minister in charge of archaeology in the Ministry of Education Social Welfare and Culture.

Members

- (ii) Secretary to the Government of India in the Ministry of Education Social Welfare and Culture.
- (iii) Director General, Archaeological Survey of India.
- (iv) Director, National Museum, New Delhi, or in his absence the next senior officer below him.
- (v) Director, Anthropological Survey of India, or in his absence, the next senior officer below him.
- (vi) Director General of Tourism, Government of India, or in his absence, the Joint Director General of Tourism concerned.
- (vii) Three members of Parliament, one elected by the Rajya Sabha and two elected by the Lok Sabha.
- (viii) A nominee each of : Indian History Congress; All India Oriental Conference; Asiatic Society of Calcutta; Archaeological Society of India; and Indian Council for Historical Research.
- (ix) A representative each of the State Governments who should be generally the Directors in charge of Archaeology in the States, and where this is not possible for any reason, the Secretaries of the Departments in charge of archaeology in the State Governments.
- (x) Five representatives of the Universities of India of the rank of University Professor of Indian History, Culture and Archaeology nominated by the Government of India from a list of names recommended by the Universities.
- (xi) Two Scientists having interest in archaeological studies, nominated by the Government of India.
- (xii) Five persons, nominated in their individual capacities by the Government of India, including two persons belonging to institutions actually engaged in archaeological field-work.

Member Secretary

Joint Director General, Archaeological Survey of India.

Functions :—

The Board shall advise the Government of India on matters relating to archaeology in India referred to it by its members. It may also make suggestions on such matters for the consideration of the Government. The Board may set up Sub Committees, as and when necessary, to examine and report on specific issues before it.

2. The Board shall ordinarily meet once in two years, the date/s and venue of the meeting being decided by the Chairman.

3. The tenure of the Members of Parliament elected to be members of the Board shall be limited to the tenure of their Membership of the House which elected them.

4. The President is also pleased to order that the Central Advisory Board of Archaeology shall set up a Standing Committee with the following composition and functions :—

Chairman and Convenor

Director-General, Archaeological Survey of India.

Members

Five members of the Board to be elected by the Members of the Board amongst themselves.

Functions :—

The Standing Committee shall advise this Board generally on the promotion of archaeological pursuance in the country; consider all reports and items referred to it and express its views on the agenda for the Board's meetings; and perform such other functions as the Government or the Chairman of the Board or the Chairman of the Committee may assign to it. It may set-up sub-Committees as and when necessary with power to co-opt. It may meet not more than twice a year.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

B. B. LAI, Dir. General, *Ex-Officio* Jt. Secy.

New Delhi, the 1st November 1972

No. 35/1/72-M.—In pursuance of the Government of India, Archaeological Survey of India, Resolution No. 36/1/72-M. dated the 13th April, 1972, the undermentioned persons, elected by the Rajya Sabha/Lok Sabha or nominated by the learned institutions/State Governments/the Chairman, from amongst recommendations received from the Universities/the Government of India, as the case may be, have been appointed Members of the Central Advisory Board of Archaeology :—

Members elected by Parliament

- (1) Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat M.P. (Rajya Sabha) Laxmi Niwas, Bani Park Jaodish Marg, Jaipur-6.
- (2) Shri H. N. Mukerjee, M.P. (Lok Sabha), 21, Rakabganj Road, New Delhi.
- (3) Shri Rudra Pratap Singh, M.P. (Lok Sabha).

Nominee of All India Oriental Conference

Professor R. N. Dandekar, General Secretary All India Oriental Conference, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona-4.

Nominee of the Indian Council of Historical Research

Professor R. S. Sharma, History Department, Patna University, Patna.

State Government's representatives

1. Shri M. H. Rao Secretary and Director of Archaeology, Government of Madhya Pradesh, Bhopal.
2. Shri J. M. Nanavati, Director of Archaeology, Panchayat Building, Lal Darwaza, Ahmedabad.
3. Shri N. Gopalakrishnan Unnithan Director of Archaeology, Government of Kerala, Trivendrum.
4. Shri P. C. Das Gupta, Director of Archaeology, Government of West Bengal, Calcutta.
5. Shri K. P. Dutt, Deputy Director, Education Department, Government of Tripura, Agartala.
6. Director of Cultural Affairs, Museums Building, Bhubaneswar.
7. Shri H. N. Dasmohanatra, Director of Archaeology and State Museum, Government of Assam, Gauhati.
8. Shri S. K. Misra, Secretary to the Government of Haryana, Archaeology Department, Chandigarh.
9. Shri Shromani Sharma, Secretary, Department of Culture, Lucknow.

10. Dr B. P. Sinha, Director of Archaeology and Museums, Government of Bihar, Patna.
11. Shri M. A. Waheed Khan, Director of Archaeology and Museums, Government of Andhra Pradesh, Hyderabad.
12. Dr. A. U. Shaikh, Secretary, Education Department, Government of Maharashtra, Sachivalaya, Bombay-32.
13. Shri R. C. Agarwal, Director of Archaeology and Museums, Government of Rajasthan, Jaipur.
14. Thiru R. Nagaswamy, Director of Archaeology, 3/4 South Bank Road, Madras-28.
15. Shri Maneshwar Singh Chahal, Deputy Secretary to the Government of Punjab, Education Department, Chandigarh.
16. Shri L. Tomcha Singh, Director of Education, Government of Manipur, Imphal.
17. Director of Archaeology, Government of Mysore, Mysore.
18. Shri Wida Mohd. Husnain Director, Libraries, Research and Museum, Government of Jammu & Kashmir, Srinagar.

University representation

1. Professor S. B. Deo, Head of the Department of History and Archaeology, Nagpur University, Nagpur.
2. Professor H. D. Sankalia, Deccan College and Post-graduate Research Institute, Poona.
3. Professor K. A. Nizami, Pro-Vice Chancellor, Aligarh Muslim University, Aligarh.
4. Professor S. R. Das, Calcutta University, 15/6, Jamir-lane, Calcutta-19.
5. Professor R. Narasimha Rao, Head of the Department of History and Archaeology, Osmania University, Hyderabad.

Scientists

1. Dr. D. Lal, Tata Institute of Fundamental Research, Homi Bhabha Road, Bombay-5.
2. Dr. Vishnu Mittra, Birbal Sahni Institute of Palaeobotany, Lucknow.

Central Government nominees

1. Shri A. Ghosh, 'Bankuli' Gurgaon Road, New Delhi.
2. Professor B. B. Lal, School of Studies in Indian History, Culture and Archaeology, Jiwaji University, Gwalior.
3. Professor S. C. Misra, Head of the Department of History, M. S. University, Baroda.
4. Professor C. R. Sharma, Head of the Department of Ancient History Culture and Archaeology, University of Allahabad, Allahabad.
5. Dr. T. V. Mahalingam, retired Professor of Archaeology, 8A-4th Cross Street, Ramkrishna Nagar, Raja Annamalaipuram, Madras-28.

M. N. DESHPANDE, Dir. General,
ex-Officio, Jt. Secy.

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

Rules

New Delhi, the 25th November 1972

No. A-12025/3/72-C&P.—The rules for a competitive examination to be held by the Union Public Service Commission in 1973 for the purpose of filling vacancies in the following posts are, with the concurrence of the Ministries/Departments concerned, published for general information.

Class I

1. Engineer in the Wireless Planning and Coordination Wing/Monitoring Organisation, Ministry of Communications.
2. Deputy Engineer-in-charge in the Overseas Communications Service, Ministry of Communications.

3. Assistant Station Engineer in the All India Radio, Ministry of Information and Broadcasting,
4. Technical Officer in the Civil Aviation Department, Ministry of Tourism and Civil Aviation,
5. Communication Officer in the Civil Aviation Department, Ministry of Tourism and Civil Aviation,
6. Assistant Development Officer (Engineering) in the Directorate General of Technical Development, Ministry of Industrial Development, and
7. Deputy Armament Supply Officer, Grade II in the Indian Navy, Ministry of Defence.

Class II

1. Assistant Engineer in the All India Radio, Ministry of Information and Broadcasting,
2. Assistant Engineer in the Overseas Communications Service, Ministry of Communications, and
3. Technical Assistant (Class II-non-Gazetted) in the Overseas Communications Service, Ministry of Communications.

A candidate may compete in respect of any one or more of the posts mentioned above. He should clearly indicate in his application the posts, for which he wishes to be considered in the order of preference.

No request for alteration in the preferences indicated by a candidate in respect of posts for which he is competing would be considered unless the request for such alteration is received in the office of Union Public Service Commission within 10 days of the date of announcement of final result of the examination.

2. The number of vacancies to be filled on the results of the examination will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservations will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States) Order, 1951, the Constitution (Scheduled Tribes) Order, 1950, and the Constitution (Scheduled Tribes) (Part C States) Order, 1951, as amended by the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Lists (Modification) Order, 1956 read with the Bombay Reorganisation Act, 1960, and the Punjab Reorganisation Act, 1966, the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956, the Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964, the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order, 1967, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order 1968, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968 and the Constitution (Nagaland) Scheduled Tribes Order, 1970.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix I to these Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. A candidate must be either :—

- (a) a citizen of India, or
- (b) a subject of Sikkim, or
- (c) a subject of Nepal, or
- (d) a subject of Bhutan, or
- (e) a Tibetan refugee who came over to India, before 1st January, 1962, with the intention of permanently settling in India, or
- (f) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and East African countries of Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) with the intention of permanently settling in India;

Provided that a candidate belonging to categories (c), (d), (e) and (f) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

A candidate in whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination and he may also be provisionally appointed subject to the necessary certificate being given to him by the Government.

5. (a) A candidate for this examination must have attained the age of 20 years and must not have attained the age of 30 years on the 1st January, 1973, i.e. he must have been born not earlier than 2nd January, 1943, and not later than 1st January, 1953.

Provided that a candidate who was born later than 1st January, 1953, but not later than 1st August, 1953, shall also be eligible for admission to this examination, as a special case. This relaxation would be admissible for the examination to be held in 1973 only.

(b) The upper age-limit of 30 years will be relaxable up to 35 years in the case of Government servants of the following categories, if they are employed in a Department/Office mentioned in column 1 below and apply for admission to the examination for the corresponding posts(s) mentioned in Column 2.

- (i) A candidate who holds substantively a permanent post in the particular Department/Office concerned. This relaxation will not be admissible to a probationer appointed against a permanent post in the Department/Office during the period of his probation.
- (ii) A candidate who has been continuously in temporary service in the particular Department/Office for at least 3 years on the 1st January, 1973.

Column 1	Column 2
Wireless Planning and Co-ordination Wing/Monitoring Organisation.	Engineer (Class I) Deputy-Engineer-in-Charge (Class I).
Overseas Communications' Service.	Assistant Engineer (Class II), Technical Assistant (Class II Non-Gazetted)
All India Radio	Assistant Station Engineer (Class-I) Assistant Engineer (Class II)
Civil Aviation Department	Technical Officer (Class I) Communication Officer (Class I)
Directorate General of Technical Development	Assistant Development Officer (Engineering) (Class I)
Indian Navy	Deputy Armament Supply Officer Grade II (Class I)

PROVIDED THAT NO CANDIDATE SHALL BE PERMITTED UNDER THE RELAXATION OF THE UPPER AGE LIMIT ADMISSIBLE TO DEPARTMENTAL CANDIDATES [cf. RULES 5(b) ABOVE] TO COMPETE MORE THAN THREE TIMES AT THE EXAMINATION.

N.B.—The upper age-limit of 30 years *vide* rule 5(a) above and 35 years *vide* rule 5(b) above, will be admissible for the examinations to be held in 1973 and 1974 only and thereafter the upper age limits will be 25 years and 30 years respectively.

(c) The upper age-limit prescribed above will be further relaxable :—

- (i) Up to a maximum of five years, if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;
- (ii) Up to a maximum of three years, if a candidate is a *bona fide* displaced person from erstwhile East Pakistan and had migrated to India on or after 1st January 1964 but before 25th March, 1971;

- (iii) Up to a maximum of eight years, if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from erst-while East Pakistan and had migrated to India on or after 1st January, 1964 but before 25th March, 1971;
- (iv) Up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry and has received education through the medium of French at some stage;
- (v) Up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vi) Up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vii) Up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya, Uganda or the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);
- (viii) Up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (ix) Up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (x) Up to a maximum of three years in case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof. This concession will not, however, be admissible to a candidate who has already appeared at five previous examinations;
- (xi) Up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area and released as a consequence thereof, who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes. This concession will not, however, be admissible to a candidate who has already appeared at ten previous examinations; and
- (xii) Up to a maximum of three years, if a candidate is a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu.

(d) The Freedom Fighters of Goa, Daman and Diu who were not employees of the Portuguese Government of Goa, Daman and Diu and participated in the liberation struggle and suffered as a consequence thereof, imprisonment or detention for not less than six months under former Portuguese Administration, will be permitted to appear at the examination provided they have not attained the age of 35 years on 1st January 1972.

N.B. (i).—Candidates claiming age concession under rule 5(d) above will not be entitled to the age concessions allowed under rules 5(b) and 5(c) above.

N.B. (ii).—For the purposes of this Rule, a candidate shall be deemed to have competed at the examination once for all the posts ordinarily covered by the examination, if he competes for any one or more of the posts.

A candidate shall be deemed to have competed at the examination, if he actually appears in any one or more subjects.

N.B. (iii).—The candidature of a person who is admitted to the examination under the age concession mentioned at (b) above shall be cancelled, if, after submitting his application, he resigns from Service, or his services are terminated

by his department, either before or after taking the examination. He will, however, continue to be eligible, if he is re-trenched from the Service or post after submitting his application.

A candidate who, after submitting his application to his department is transferred to other department/office will be eligible to compete under departmental age concession for the post, for which he would have been eligible but for his transfer, provided his application has been forwarded by his parent department.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.

6. A candidate must have—

- (a) obtained a degree in Engineering from a University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India or other educational Institutes established by an Act of Parliament, or declared to be deemed as Universities under Section 3 of the University Grants Commission Act, 1956, or
- (b) passed Sections A and B of the Associate Membership Examination of the Institution of Engineers (India); or
- (c) obtained a degree/diploma in Engineering, from such foreign Universities/Colleges, Institutions and under such conditions as may be recognised by the Government for the purpose from time to time; or
- (d) passed the Graduate Membership Examination of the Institution of Tele-communication Engineers (India); or
- (e) M.Sc. degree or its equivalent with Wireless Communication Electronics, Radio Physics, or Radio Engineering as special subject; or
- (f) passed the Graduate Membership Examination of the Institution of Electronics and Radio Engineers, London held after November 1959.

The Graduate Membership Examination of the Institution of Electronics and Radio Engineers, London held prior to November, 1959, is also acceptable, subject to the following conditions :—

- (1) that the candidates who have passed the examination held prior to November, 1959, should have appeared and passed in the following additional papers according to post 1959 scheme of Graduate Membership Examination;
 - (i) Principles of Radio and Electronics—I (Section 'A').
 - (ii) Mathematics II (Section 'B').
- (2) that the candidates concerned should produce a certificate from the Institution of Electronics and Radio Engineers, London in fulfilment of the condition prescribed at (1) above.

NOTE 1.—In exceptional cases, the Commission may treat a candidate who has not any of the qualifications prescribed in this rule, as educationally qualified, provided that he has passed examination conducted by other institutions, the standard of which in the opinion of the Commission, justifies his admission to the examination.

NOTE 2.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination, but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply, provided that the qualifying examination including the Practical Training/Project work is completed before the commencement of this examination. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible, but the admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination including the Practical training/Project work as soon as possible, and in any case not later than two months after the commencement of this examination.

NOTE 3.—A candidate, who is otherwise qualified but who has taken a degree from a foreign University which is not recognised by Government, may also apply to the Commission and may be admitted to the examination at the discretion of the Commission.

7. Candidates must pay the fee prescribed in Annexure I to the Commission's Notice.

8. A candidate already in Government Service, whether in a permanent or a temporary capacity or as a work-charged employee other than a casual or daily-rated employee, must obtain prior permission of the Head of the Department or office concerned to appear for the Examination.

9. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

10. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

11. Any attempt on the part of a candidate to obtain support for his candidature by any means may disqualify him for admission.

12. A candidate who is or has been declared by the Commission guilty of impersonation or of submitting fabricated documents or documents which have been tampered with or of making statements which are incorrect or false or of suppressing material information or otherwise resorting to any other irregular or improper means for obtaining admission to the examination or of using or attempting to use unfair means in the examination hall or of misbehaviour in the examination hall, may in addition to rendering himself liable to criminal prosecution,—

- (a) be debarred permanently or for a specified period :—
 - (i) by the Commission, from admission to any examination or appearance at any interview held by the Commission for selection of candidates; and
 - (ii) by the Central Government from employment under them;
- (b) be liable to disciplinary action under the appropriate rules, if he is already in service under Government.

13. Candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written examination as may be fixed by the Commission in their discretion shall be summoned by them for an interview for a personality test.

14. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate; and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for appointment up to the number of unreserved vacancies decided to be filled on the results of the examination.

Provided that candidates belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes may, to the extent the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes cannot be filled on the basis of the general standard be recommended by the Commission by a relaxed standard to make up the deficiency in the reserved quota, subject to the fitness of these candidates for appointment to the posts, irrespective of their ranks in the order of merit at the examination.

15. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

16. Due consideration will be given, at the time of making appointments on the results of the examination, to the preferences expressed by a candidate for various posts, at the time of his application.

17. Success in the examination confers no right to appointment unless Government are satisfied after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is suitable in all respects for appointment to the public service.

18. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defects likely to interfere with the discharge of his duties as an officer of the service. A candidate who after such physical examination as Government or the appointing authority, as the case may be, may prescribed is found not to satisfy those requirements will not be appointed. All candidates who are declared qualified for the Personality Test will be physically examined at the place where they are summoned for interview, either immediately before or after the interview. Candidates will have to pay a fee of Rs. 16.00 to the Medical Board. The fact that a candidate has been physically examined will not mean or imply that he will be considered for appointment.

In order to prevent disappointment candidates are advised to have themselves examined by Government Medical Officer of the standing of a Civil Surgeon before applying for admission to the examination. Particulars of the nature of the medical test to which candidates will be subjected before appointment to Gazetted posts and of the standards required are given in Appendix II. For the disabled ex-Defence Services personnel, the standards will be relaxed consistent with the requirements of each posts.

19. No person :—

- (a) who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living, or
- (b) who, having a spouse living, has entered into or contracted a marriage with any person.

shall be eligible for appointment to service :

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

20. Brief particulars relating to the posts to which recruitment is being made through this examination are stated in Appendix III.

K. D. SRIVASTAVA, Under Secy.

APPENDIX I

1. The examination shall be conducted according to the following plan :—

Part I—Compulsory and optional papers as shown below. The standard and syllabi prescribed for these papers are given in the Schedule to this Appendix.

Part II—Personality Test carrying a maximum of 200 marks for such candidates as may be called by the Commission. (Please see para 6 below).

2. The following will be the subjects for the written examination :

Subject	Duration	Maximum Marks
(1)	(2)	(3)
Hrs.		
<i>A. Compulsory</i>		
(1) English Essay	1½	50
(2) General English	1½	50
(3) General Knowledge and Current Affairs	1½	50
(4) History of Science	1½	50
(5) Radio Physics	3	100
(6) Electronic Materials and Components	3	100
(7) Applied Electronic Circuits	3	100
(8) Electrical and Mechanical Engineering	3	100
		(60 marks for Electrical Engineering and 40 marks for Mechanical Engineering)

	1	2	3
<i>B. Optional : Any two of the following subjects :—</i>			
(1) Principles of Acoustics		3	100
(2) Transmission Lines and Networks		3	100
(3) Antenna and Wave Propagation		3	100
(4) Mathematics		3	100
(5) Radar and Micro Waves Engineering including Radio Aids to Navigation		3	100
(6) Broadcasting and Television systems		3	100

3. All papers must be answered in English.

4. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances will they be allowed the help of a scribe to write answers for them.

5. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects of the examination.

6. Special attention will be paid in the Personality Test to assessing the candidates' capacity for leadership, initiative and curiosity, tact and other social qualities, mental and physical energy, powers of practical application and integrity of character.

7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

8. Deductions up to 5 per cent of the maximum marks for the written subjects will be made for illegible handwriting.

9. Credit will be given for orderly, effective and exact expression combined with due economy of words in all subjects of the examination.

10. Candidates are expected to be familiar with the metric system of weights and measures. In the question papers wherever necessary, questions involving the use of metric system of weights and measures may be set.

Note.—Candidates will be supplied with tables in metric units compiled and published by the Indian Standards Institution in the examination hall for reference purpose, wherever considered necessary.

Schedule to Appendix I Standard and Syllabus

The standard of papers in English Essay, General English, General Knowledge and Current Affairs and History of Science will be such as may be expected of an Engineering/Science graduate. There will be no practical examination in any of the subjects.

The papers in Radio Physics, Electronic Materials and Components, Applied Electronic Circuits and Electrical and Mechanical Engineering will be of the degree standard for Engineering of Indian Universities and questions will be framed to test the candidates grasp of fundamentals in each subject.

The standard of optional papers will require detailed knowledge as applicable to Engineering problems.

(1) *English Essay*.—An essay to be written in English on one of several subjects.

(2) *General English*.—Questions to test the candidates' understanding of and power to write English. Passages will usually be set for summary or précis.

(3) *General Knowledge and Current Affairs*.—The paper will include questions to test knowledge of current events and of matters of every day observation and experience. The paper will also include questions on History of India and Geography.

(4) *History of Science*.—History of the evolution and growth of science. Great scientists and their contribution to science.

(5) *Radio Physics*.—Magnetism. Definition and units; Magnetic induction; hysteresis; magnetic circuits.

Electricity: Units; die-electrics, charges; alternating and direct current circuits; circuits containing resistance; inductance and capacitance; resonance; effects of Q on selectivity; current, voltage and power relations.

Tuned and untuned amplifiers; oscillators; frequency stability; frequency multipliers and harmonic generators; modulators.

Principles of reception, diversity reception, superhetrodyne receivers.

Radio telegraph, radio telephone communication and broadcasting systems; wave-length and power consideration; signal to noise ratio requirements principles of wave propagation and transmission. Aerials, feeders and matching devices.

Principles of amplitude modulation, frequency modulation and phase modulation, and their application in communication systems.

Speech and hearings—articulation; basic principles of acoustics.

(6) *Electronic Materials and Components*.—Conducting and dielectric materials of different types; piezo-electric and ferro-electric materials and transducers; quartz crystals of different cut and equivalent circuit.

Magnetic materials and ferrites of different types—their characteristics and uses; permanent magnets.

Resistors, capacitors, inductors and transformers; their different types principles of construction, characteristics, performance and applications.

Electron emission and motion in electric and magnetic fields.

Electron tubes, including cathode ray tubes and other special purpose tubes, micro-waves tubes, gas and photo tubes; principles of construction, characteristics and typical applications.

Semi-conductors and their properties; semi-conductor devices including diodes and SCR's, tunnel diodes, transistors and photo-sensitive devices, fundamentals of printed circuits.

Relays: Electromagnetic and thermal types; their characteristics performance and applications.

(7) *Applied Electronics Circuits*.—Circuit principles involved in the following :—

Vacuum tube amplifiers, typical circuits for different applications; feed back; broadband amplifiers; D. C. amplifiers.

Transistor amplifiers, typical circuits; design for temperature stabilisation.

Low and high frequency oscillators. Conventional circuits; relaxation oscillators; frequency multipliers and dividers; frequency stabilization.

Pulse and sweep circuits, counting circuits.

Modulators and detectors; typical circuits for amplitude, frequency and phase modulation.

Power supply systems for electronic equipments—rectifiers, filters, voltage regulated power supplies.

Industrial electronic circuits for induction heating, welding and speed control of electric meters.

Typical circuits used in television receivers.

(8) *Electrical and Mechanical Engineering*.

(a) *Electrical Engineering*.—D.C. motors and generators—their characteristics and general features motor starters.

Primary and secondary cells.

A.C. circuits; power factors; transformers, alternators, synchronous and induction motors; starting devices.

Rectifiers and rotary converters.

Electrical instruments and measurements—measurement of voltage, current and power in D.C. and A.C. circuits; different types of instruments and their characteristics. Typical bridges.

(b) *Mechanical Engineering*.—Properties and strength of materials—stress and strains in tension, compression and shear; Hook's Law; elastic constants; bending moments and shear forces in beams.

Internal combustion engines—major component units and principles of working.

Simple machine tools and their uses.

Transmission of power—belt and gear drive; direct couplings; bearings.

Laws of friction, lubricants and lubricating systems.

Ferrous and non-ferrous, materials—their properties.

(9) *Principles of Acoustics*.

Sound: wave equation; vibrating systems; sound transmission; electro-mechanical acoustical circuits and filters.

Room acoustics; sound absorption and insulation; reverberation; design of broadcasting studios.

Transducers: microphones loudspeakers, design characteristics, measurement and calibration.

Noise control; sound insulation; measurements.

Hearing and speech; Psycho-acoustics criteria, audio-metric measurements. High fidelity systems. Disc, magnetic and film recording and play back systems.

(10) *Transmission Lines and Networks*

Two terminal networks: Combinations of R.L.&C.; Impedance of a transformer-equivalent networks; Analysis and Synthesis of two terminal networks.

Four terminal networks: Linear parameters—image and iterative parameters; Terminations; Loss factors; Insertion losses. Tandem connections reflection and interaction losses. Attenuating pads of the T and H type—Lattice and bridged T. networks. Constant resistance recurrence networks—equalisers.

Wave filters: Conditions for pass and attenuation bands. Principles of filter design based on image parameters. Constant K and M derived filter sections. Low pass high pass and band pass filters (of 3, 4, 5 and 6 element types). Composite and complementary filters. Paralleling of filters. Effects of dissipation and termination. Frequency and impedance normalisation. Transformations of designs from low pass to high pass and band pass filters. Elementary principles in the design of electric wave filters.

Properties of electrical line: Quantitative values of R.L.C. of electrical lines. Transmission line equations—attenuation and phase shift. Reflection in transmission lines equations for a line with any termination. Reflection losses and reflection factor. Standing waves. Impedance of lines with total and partial reflection—circle diagram.

Low frequency transmission lines: characteristic; Distortion for telegraph and telephone working—loading.

High frequency transmission lines: Characteristics—open wire and concentric feeders; Transmission lines as impedance element; Resonant lines—Matching of H.F. lines.

(11) *Antenna and Wave Propagation*

Electro-magnetic equation, radiation of electromagnetic waves, field intensity.

Radiation patterns: directive systems; gain of antennas, practical design of directive antennas for long medium, short wave and very high frequency. Receiving antenna systems. Antennas for direction finding.

Radio frequency transmission lines coupling networks, matching of transmission lines, practical design of feeder lines and switching systems.

Propagation—ground, tropospheric and ionospheric atmospheres and noise.

Measurements of field strength.

(12) *Mathematics*

Fundamental Concepts.

Functions—Average Rates—Limits.

Basic Operations

Derivatives—Differentials—Higher Derivatives. Maxima and Minima—Integrals—Definite Integrals.

Further Operations.

Integration Techniques—Double Integrals
Infinite Series.

Definitions—The Geometric Series—Convergent and Divergent Series—General Theorems—The Comparison Test—Cauchy's Integral Test—Cauchy's Ratio Test—Alternating Series—Absolute Convergence—Power Series—Theorems Regarding Power Series—Series of Functions and Uniform Convergence—Integration and Differentiation of Series—Taylor's Series—Symbolic form of Taylor's Series—Evaluation of Integrals by Means of Power Series—Approximate Formulas derived from Maclaurin's Series—use of Series for the Computation of Functions—Evaluation of a Function taking on an Indeterminate Form.

Complex Numbers

Introduction—Complex Numbers—Rules for the Manipulation of Complex numbers—Graphical Representation and Trigonometric Form—Powers and Roots—Exponential and Trigonometric Functions—The Hyperbolic Functions—The Logarithmic Function—The Inverse Hyperbolic and Trigonometric Functions.

Mathematical Representation of Periodic Phenomena.

Fourier Series, and the Fourier Integral.

Introduction—Simple Harmonic Vibrations—Representation of More Complicated Periodic Phenomena, Fourier Series—Examples of Fourier Expansion of Functions—Some Remarks about Convergence of Fourier Series—Effective Values and the Average of a Product—Modulated Vibrations and Beats—The Propagation of Periodic Disturbances in Form of Waves—The Fourier Integral.

Linear Algebraic Equations, Determinants and Matrices.

Simple Determinants—Fundamental Definitions—The Laplace Expansion—Fundamental Properties of Determinants—The Evaluation of Numerical Determinants—Definition of a Matrix—Special Matrices—equality of Matrices, Addition and subtraction—Multiplication of Matrices—Matrix Division the Inverse Matrix—The Reversal Law in Transposed and Reciprocated Products Properties of Diagonals and Unit Matrices—Matrices Partitioned into Submatrices—Matrices of Special Types—The Solution of a linear Equation in n Unknowns.

Linear Differential Equations with Constant Coefficients.

The Reduced Equation, the Complementary Function—Properties of the Operator $Ln.(D)$ —The Method of Undetermined Coefficients—The Simple Direct Laplace—Transform, or Operational, Method of Solving Linear Differential Equations with Constant Coefficients—The Direct Computation of Transforms—Systems of Linear Differential Equations with constant Coefficients.

Laplace Transforms of Use in the solution of Differential Equations.

Notation—Basic Theorems.

Oscillations of Linear Lumped Electrical Circuits.

Electrical—Circuit Principles—Energy Considerations—Analysis of General Series Circuit—Discharge and charge of a capacitor—Circuit with Mutual Inductance—Circuits coupled by a Capacitor—The Effect of Finite Potential Pulses—Analysis of the General Network—The Steady-state Solution—Four-terminal Networks, in the Alternating Current Steady States—The Transmission Line as a Four-terminal Network.

Partial Differentiation.

Partial Derivatives—The Symbolic Form of Taylor's Expansion—Differentiation of Composite Functions—Change of variables—The First Differential—Differentiation of Implicit Functions—Maxima and Minima—Differential of a definite Integral—Integration under the Integral Sign—Evaluation of Certain definite Integrals—The Elements of the Calculus of Variations—Summary of Fundamental Formulas of the Calculus of Variations—Hamilton's Principle. Lagrange's Equations—Variational problems with Accessory Conditions: Isoperimetric problems.

Vector Analysis.

The Concept of a vector—Addition and Subtraction of Vectors. Multiplication of a vector by a Scalar—The Scalar Product of two Vectors—The Vector Product of Two Vectors—Multiple Products—Differentiation of a Vector with respect to Time—The Gradient—The Divergence and Gauss's Theorem—The Curl of a Vector Field and Stokes's Theorem—Successive Application of the Operator—Orthogonal Curvilinear Co-ordinates—Application to Hydrodynamics—The equation of Heat Flow in Solids—The Gravitational Potential—Maxwell's Equations—The Wave Equation—The Skin-effect or Diffusion. Equation—Tensors (Qualitative Introduction)—Co-ordinate Transformations Scalars, Contravariant Vectors. Covariant Vectors—Addition. Multiplication and contraction of Tensors—Associated Tensors—Differentiation of an Invariant—Differentiation of Tensors; The Christoffel Symbols—Intrinsic and Covariant Derivatives of Tensors of Higher Order—Application of Tensor Analysis to the Dynamics of a Particle.

Elements of the Theory of the Complex Variable.

General Functions of a Complex Variable—The Derivative and the Cauchy—Riemann Differential Equations Line Integrals of Complex Functions—Cauchy's Integral Theorem—Cauchy's Integral Formula—Taylor's Series—Laurent's Series—Residues—Cauchy's Residue Theorem—Singular Points of an Analytic Function—The Point at Infinite—Evaluation of Residues—Liouville's Theorem—Evaluation of Definite Integrals—Jordan's Lemma—Integrals Involving Multiple-Valued Functions.

Operational and transform Methods.

The Fourier—Mellin Theorem—The Fundamental Rules—Calculation of Direct Transforms—Calculation of Inverse Transforms—the Modified Integral—Impulsive Functions Application of the Operational Calculus to the Solution of Partial Differential Equations—Evaluation of Integrals—Application of the Laplace Transform to the Solution of Linear Integral Equations—Solution of Ordinary Differential Equations with Variable Coefficients—The Summation of Fourier Series by the Laplace Transform.

(13) Radar and Micro-waves Engineering including Radio Aids to Navigation.

Principles: resolution accuracy and coverage; radar range equation, radar frequencies and various types of radar equipment.

Pulse circuits and networks; strobs and gating circuits. Various types of presentations and connected circuitry. Modulators and their theory.

Radar receiving circuits.

Various types of radar antenna and feed systems, reflector and their design. Microwave plumbing: Wave guides modes of transmission, impedance matching, choke joints, direction couplers, TR devices.

V.H.F.: triode, Oscillators, klytrons, magnetrons, travelling wave tubes, efficiency diagrams. Principles and Characteristics of air-borne & ground based radar systems. Principles of direction finding.

Principles of navigational systems such as Loran, Decca, Doppler.

*Principles of Electronic Altimeters.**(14) Broadcasting and Television Systems.*

Broadcasting on long, medium and short waves and V.H.F.; coverages field strength, noise and interference; ground wave propagation; sky wave propagation; fading phenomenon.

Studio and auditorium: design with regard to noise level, reverberation, sound level and sound distribution, ventilation and illumination.

Studio and control room equipment, microphones—design considerations from output, impedance, sound level, directivity, noise and fidelity. Choice of microphones. Chain in the audio link from microphone to transmitter—special feature and design considerations. Recording and play back.

Broadcast transmitters; requirements for broadcast: modulators, amplifiers and power supply systems.

Design of superheterodyne receiving circuits Use of transistors in broadcast receivers.

Frequency modulation in broadcasting.

Television circuits in cameras, transmitters and receivers; picture standards; typical transmitters and receivers; lighting and studio equipment.

APPENDIX II

REGULATIONS RELATING TO THE PHYSICAL EXAMINATION OF CANDIDATES

[These regulations are published for the convenience of candidates and in order to enable them to ascertain the probability of their coming up to the required physical standard. The regulations are also intended to provide guidelines to the medical examiners and a candidate who does not satisfy the minimum requirements prescribed in the regulations, cannot be declared fit by the medical examiners. However, while holding that a candidate is not fit according to the norms laid down in these regulations it would be permissible for a Medical Board to recommend to the Government of India for reasons specifically recorded in writing that he may be admitted to service without disadvantage to Government.

It should, however, be clearly understood that the Government of India, reserve to themselves, absolute discretion to reject or accept any candidate after considering the report of the Medical Board].

1. To be passed as fit for appointment a candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient performance of the duties of his appointment.

2. In the matter of the correlation of age, height and chest girth of candidates of Indian (including Anglo-Indian) race, it is left to Medical Board to use whatever correlation figures are considered most suitable as a guide in the examination of the candidates. If there be any disproportion with regard to height, weight and chest girth, the candidate should be hospitalised for investigation and X-ray of the chest taken before the candidate is declared fit or not fit by the Board.

3. The candidate's height will be measured as follows:—

He will remove his shoes and be placed against the standard with his feet together and the weight thrown on the heels and not on the toes or other sides of the feet. He will stand erect without rigidity and with the heels, calves, buttocks and shoulders touching the standard, the chin will be depressed to bring the vertex of the head level under the horizontal bar and the height will be recorded in centimetres and parts of a centimetre to halves.

4. The candidate's chest will be measured as follows:—

He will be made to stand erect with his feet together and to raise his arms over his head. The tape will be so adjusted round the chest that its upper edge touches the inferior angles of the shoulder blades behind and lies in the same horizontal plane when the tape is taken round the chest. The arms will then be lowered to hang loosely by the side and care will be taken that the shoulders are not thrown upwards or backwards so as to displace the tape. The candidate will then be directed to take a deep inspiration several times and the maximum expansion of the chest will be carefully noted, and the minimum and maximum will then be recorded in centimetres, 84-89, 86-93.5 etc. In recording the measurements fractions of less than half a centimetre should not be noted.

N.B.—The height and chest of the candidate should be measured twice before coming to a final decision.

5. The candidate will also weighed and his weight recorded in kilograms; fractions of half a kilogram should not be noted.

6.(a) The candidate's eye-sight will be tested in accordance with the following rules. The result of each test will be recorded.

(b) There shall be no limit for minimum naked eye vision but the naked eye vision of the candidates shall, however, be recorded by the Medical Board or other medical authority, in every case as it will furnish the basic information in regard to the condition of the eye.

(c) The following standards are prescribed for distant and near vision with or without glasses :

Distant Vision		Near Vision	
Better eye (Corrected vision)	Worse eye	Better eye (Corrected vision)	Worse eye
6/6	6/12	J-I	J-II
6/9	6/9		

(d) In every case of myopia, fundus examination should be carried out and the result recorded. In the event of pathological condition being present which is likely to be progressive and affect the efficiency of the candidate, he should be declared unfit.

The total amount of Myopia (including the cylinder) shall not exceed $-4.00D$. The total amount of Hypermetropia (including the cylinder) shall not exceed $+4.00D$.

(c) *Field of Vision*.—The field of vision shall be tested in respect of all services by the confrontation method. When such test gives unsatisfactory or doubtful results, the field of vision should be determined on the perimeter.

(f) *Night Blindness*.—Broadly there are two types of night blindness: (1) as a result of Vit. A deficiency and (2) as a result of Organic disease of Retina—a common cause being Retinitis pigmentosa. In (1) the fundus is normal, generally seen in younger age group and ill nourished persons and improves by large doses of Vit. A. In (2) the fundus is often involved and mere fundus examination will reveal the condition in majority of cases. The patient in this category is an adult, and may not suffer from malnutrition. Persons seeking employment for higher posts in the Government will fall in this category. For both (1) and (2), dark adaptation test will reveal the condition. For (2) specially when fundus is not involved electro-Retinography is required to be done. Both these tests (dark adaptation and retinography) are time-consuming and require specialized set up, and equipment; and thus are not possible as a routine test in a medical check up. Because of these technical considerations, it is for the Ministry/Department to indicate if these tests for night blindness are required to be done. This will depend upon the job requirement and nature of duties to be performed by the prospective Government employees.

(g) *Colour Vision*.—(i) The testing of colour vision shall be essential in respect of all the posts.

(ii) Colour perception should be graded into a higher and a lower grade depending upon the size of the aperture in the lantern as described in the table below:—

Grade	Higher Grade of Colour perception	Lower Grade of Colour perception
1. Distance between the lamp and candidates	16'	16'
2. Size of aperture	1.3mm	13 mm
3. Time of exposure	5 Sec.	5 Sec.

For the services concerned with the safety of the Public, the higher grade of colour vision is essential but for other, the lower grade of colour vision should be considered sufficient.

(iii) Satisfactory colour vision constitute recognition with ease and without hesitation of signal red, signal green and white colours. The use of Ishihara's plates, shown in good light and a suitable lantern like Edridge Green's shall be considered quite dependable for testing colour vision. While either of the two tests may ordinarily be considered sufficient, in respect of the services concerned with road, rail and air traffic, it is essential to carry out the lantern test. In

doubtful cases where a candidate fails to qualify when tested by only one of the two tests, both the tests should be employed.

(h) *Acular conditions other than visual acuity*.—

(i) Any organic disease or a progressive refractive error, which is likely to result in lowering the visual acuity, should be considered a disqualification.

(ii) *Squint*.—As the presence of binocular vision is essential, squint, even if the visual acuity in each eye is of the prescribed standard, should be considered a disqualification.

(iii) *One eye*.—The Medical Board may recommend one eyed persons for appointment to Class I & Class II posts if it is satisfied that he can perform all the functions for the particular job for which he is a candidate provided further that the visual acuity in the functioning eye is 6/6 for distance vision and 0.6 for near vision and the refractive error is not more than plus or minus 4.00D and the fundus of the functioning eye should reveal no abnormality. This relaxation in visual standards will be applicable to only one-eyed persons in view of their disability and not to persons with binocular vision.

(i) *Contact Lenses*.—During the medical examination of a candidate, the use of contact lenses is not to be allowed. It is necessary that when conducting eye test the illumination of the type letters for distant vision should have an illumination of 15 foot-candles.

7. Blood Pressure.

The Board will use its discretion regarding Blood Pressure. A rough method of calculating normal maximum systolic pressure is as follows:—

(i) With young subjects 15—25 years of age the average is about 100 plus the age.

(ii) With subjects over 25 years of age the general rule of 110 plus half the age seems quite satisfactory.

N.B.—As a general rule any systolic pressure over 140 mm and diastolic over 90 mm. should be regarded as suspicious and the candidate should be hospitalised by the Board before giving their final opinion regarding the candidate's fitness or otherwise. The hospitalization report should indicate whether the rise in blood pressure is of a transient nature due to excitement etc. or whether it is due to any organic disease. In all such cases X-ray and electrocardiographic examinations of heart and blood urea clearance test should also be done as a routine. The final decision as to the fitness or otherwise of a candidate will, however, rest with the Medical Board only.

Method of taking Blood Pressure.

The mercury manometer type of instrument should be used as a rule. The measurement should not be taken within fifteen minutes of any exercise or excitement. Provided the patient and particularly his arm is relaxed, he may be either lying or sitting. The arm is supported comfortably at the patient's side in a more or less horizontal position. The arm should be freed from clothes to the shoulder. The cuff completely deflated should be applied with the middle of the rubber over the inner side of the arm, and its lower edge an inch or two above the bend of the elbow. The following turns of cloth bandage should spread evenly over the bag to avoid bulging during inflation.

The brachial artery is located by palpitation at the bend of the elbow and the stethoscope is then applied lightly and centrally over it below, but not in contact with the cuff. The cuff is inflated to about 200 mm. Hg. and then slowly deflated. The level at which the column stands when soft successive sounds are heard represents the Systolic Pressure. When more air is allowed to escape the sounds will be heard to increase in intensity. The level at which the well-heard clear sounds change to soft muffled fading sound represents the diastolic pressure. The measurements should be taken in a fairly brief period of time as prolonged pressure of the cuff is irritating to the patient and will vitiate the readings. Re-checking, if necessary, should be done only a few minutes after complete deflation of the cuff. (Sometimes, as the cuff is deflated sounds are heard at a certain level; they may disappear as pressure falls and reappear at a still lower level. This 'Silent Gap' may cause error in readings).

8. The urine (passed in the presence of the examiner) should be examined and the result recorded. Where a Medical Board finds sugar present in a candidate's urine by the usual chemical tests the Board will proceed with the examination with all its other aspects and will also specially note any signs or symptoms suggestive of diabetes. If except for the glycosuria, the Board finds the candidate conforms to the standard of medical fitness required they may pass the candidate "fit subject to the Glycosuria being non-diabetic" and the Board will refer the case to a specified specialist in Medicine who has hospital and laboratory facilities at his disposal. The Medical Specialist will carry out whatever examinations, clinical and laboratory, he considers necessary including a standard blood sugar tolerance test and will submit his opinion to the Medical Board upon which the Medical Board will base its final opinion "fit" or "unfit". The candidate will not be required to appear in person before the Board on the second occasion. To exclude the effects of medication it may be necessary to retain a candidate for several days in hospital, under strict supervision.

9. A woman candidate who as a result of tests is found to be pregnant of 12 weeks standing or over, should be declared temporarily unfit until the confinement is over. She should be re-examined for a fitness certificate six weeks after the date of confinement, subject to the production of a medical certificate of fitness from a registered medical practitioner.

10. The following additional points should be observed—

(a) that the candidates hearing in each ear is good and that there is no sign of disease of the ear. In case it is defective the candidate should be got examined by the ear specialist, provided that if the defect in hearing is remediable by operation or by use of a hearing aid, a candidate cannot be declared unfit on that account provided he/she has no progressive disease in the ear. The following are the guidelines for the medical examining authority in this regard :—

(1) Marked or total deafness in one ear, other ear being normal. Fit for non-technical jobs if the deafness is 30 Decibel in higher frequency.

(2) Perceptive deafness in both ears in which some improvement is possible by a hearing aid. Fit in respect of both technical and non-technical jobs if the deafness is upto 30 Decibel in speech frequencies of 1000 to 4000.

(3) Perforation of tympanic membrane of Central or marginal type. (i) One ear normal other ear perforation of tympanic membrane present—Temporarily unfit.

Under improved conditions of Ear Surgery a candidate with marginal or other perforation in both ears should be given a chance by declaring him temporarily unfit and then he may be considered under 4(ii) below.

(ii) Marginal or attic perforation in both ears—Unfit.

(iii) Central perforation both ears—Temporarily unfit.

(4) Ears with mastoid cavity subnormal hearing on one side/on both sides.

(i) Either ear normal hearing other ear Mastoid cavity—Fit for both technical and non-technical jobs.

(ii) Mastoid cavity of both sides—Unfit for technical job. Fit for non-technical jobs if hearing improves to 30 Decibels in either ear with or without hearing aid.

(5) Persistently discharging ear-operated/unoperated.

Temporarily unfit for both technical and non-technical jobs.

(6) Chronic inflammatory/allergic conditions of nose with or without bony deformities of nasal septum.

(i) A decision will be taken as per circumstances of individual cases.

(ii) If deviated nasal Septum is present with symptoms—Temporarily unfit.

(7) Chronic inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx.

(i) Chronic inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx Fit.

(ii) Hoarseness of voice of severe degree if present then—Temporarily unfit.

(8) Benign or locally malignant tumours of the E.N.T.

(i) Benign tumours—Temporarily unfit.

(ii) Malignant Tumours—Unfit.

(9) Otosclerosis

If the hearing is within 30 Decibels after operation or with the help of hearing aid—Fit.

(10) Congenital defects of ear, nose or throat.

(i) If not interfering with functions—Fit.

(ii) Stuttering of severe degree—Unfit.

(11) Nasal Poly

Temporarily unfit.

(b) that his/her speech is without impediment;

(c) that his/her teeth are in good order that he/she is provided with dentures where necessary for effective mastication (well filled teeth will be considered as sound);

(d) that the chest is well formed and his chest expansion sufficient; and that his heart and lungs are sound;

(e) that there is no evidence of any abdominal disease;

(f) that he is not ruptured;

(g) that he does not suffer from hydrocele, a severe degree of varicocele, varicose veins or piles;

(h) that his limbs, hand and feet are well formed and developed and that there is free and perfect motion of all his joints;

(i) that he does not suffer from any inveterate skin disease;

(j) that there is no congenital malformation or defect;

(k) that he does not bear traces or acute or chronic disease pointing to an impaired constitution;

(l) that he bears marks of efficient vaccination; and

(m) that he is free from communicable disease;

11. Radiographic examination of the chest should be done as a routine in all cases for detecting any abnormality of the heart and lungs, which may not be apparent by ordinary physical examination.

When any defect is found it must be noted in the Certificate and the medical examiner should state his opinion whether or not it is likely to interfere with the efficient performance of the duties which will be required of the candidate.

Note.—Candidates are warned that there is no right of appeal from a Medical Board, special or standing, appointed to determine their fitness for the above posts. If, however, Government are satisfied on the evidence produced before them of the possibility of an error of judgment in the decision of the first Board, it is open to Government to allow an appeal to a second Board. Such evidence should be submitted within one month of the date of the communication in which the decision of the first Medical Board is communicated to the candidate, otherwise no request for an appeal to a second Medical Board will be considered.

If any medical certificate is produced by a candidate as a piece of evidence about the possibility of an error of judgment in the decision of the first Board, the certificate will not be taken into consideration unless it contains a note by the medical practitioner concerned to the effect that it has been given in full knowledge of the fact that the candidate has already been rejected as unfit for service by the Medical Board.

Medical Board's Report

The following intimation is made for the guidance of the Medical Examiner :—

1. The standard of physical fitness to be adopted should make due allowance for the age and length of service, if any, of the candidate concerned.

No person will be deemed qualified for admission to the Public Service who shall not satisfy Government, or the appointing authority, as the case may be, that he has no disease constitutional affection, or bodily infirmity unfitting him, or likely to unfit him for that service.

It should be understood that the question of fitness involves the future as well as the present and that one of the main objects of medical examination is to secure continuous effective service and in the case of candidates for permanent appointment to prevent early pension or payments in case of premature death. It is at the same time to be noted that the question is one of the likelihood of continuous effective service, and that rejection of a candidate need not be advised on account of the presence of a defect which in only a small proportion of cases, is found to interfere with continuous effective service.

A lady doctor will be co-opted as a member of the Medical Board whenever a woman candidate is to be examined.

The report of the medical board should be treated as confidential.

In cases where a candidate is declared unfit for appointment in the Government Service, the grounds for rejection may be communicated to the candidates in broad terms without giving minute details regarding the defects pointed out by the Medical Board.

In cases where, a Medical Board consider that a minor disability disqualifying a candidate for Government service can be cured by treatment (medical or surgical) a statement to that effect should be recorded by the Medical Board. There is no objection to a candidate being informed of the Board's opinion to this effect by the appointing authority and when a cure has been effected it will be open to the authority concerned to ask for another Medical Board.

In the case of candidates who are to be declared 'Temporarily Unfit' the period specified for re-examination should not ordinarily exceed six months at the maximum. On re-examination after the specified period these candidates should not be declared temporarily unfit for a further period but a final decision in regard to their fitness for appointment or otherwise should be given.

(A) Candidate's statement and declaration.

The candidate must make the Statement required below prior to his Medical Examination and must sign the Declaration appended thereto. His attention is specially directed to the warning contained in the Note below :—

1. State your name in full (in block letters)

2. State your age and birth place

2. (a) Do you belong to races such as Gorkhas, Garwalis, Assamese, Nagaland Tribals etc, whose average height is distinctly lower. Answer 'Yes' or 'No', and if the answer is 'Yes' state the name of the race.

3. (a) Have you ever had small-pox, intermittent or any other fever, enlargement or suppuration of glands, spitting of blood, asthma, heart diseases, lung disease, fainting attacks, rheumatism, appendicitis ?

or

(b) any other disease or accident requiring confinement to bed and medical or surgical treatment ?

4. When were you last vaccinated ?

5. Have you suffered from any form of nervousness due to overwork or any other cause ?

6. Furnish the following particulars concerning your family :

Father's age if living and state of health	Father's age at death and cause of death	No. of brothers living, their ages and state of health	No. of brothers dead, their ages at and cause of death
1	2	3	4

--	--	--	--

--	--	--	--

Mother's age if living and state of health	Mother's age at death and cause of death	No. of sisters living, their ages and state of health	No. of sisters dead, their ages at and cause of death
5	6	7	8

--	--	--	--

--	--	--	--

--	--	--	--

--	--	--	--

--	--	--	--

--	--	--	--

--	--	--	--

--	--	--	--

7. Have you been examined by a Medical Board before ?
.....

8. If answer to the above is yes, please state what Service(s)/post(s) you were examined for?.....

9. Who was the examining authority ?.....

10. When and where was the Medical Board held ?
.....

11. Result of the Medical Board's examination, if communicated to you or if known.....

I declare that all the above answers are to the best of my belief, true and correct.

Candidate's Signature.....
Signed in my presence
Signature of Chairman of the Board

NOTE.—The candidate will be held responsible for the accuracy of the above statement. By wilfully suppressing any information he will incur the risk of losing the appointment and, if appointed of forfeiting all claims to superannuation Allowance or Gratuity.

(B) Report of the Medical Board. (Name of candidate).
Physical examination.

1. General development: Good Fair.....
Poor..... Nutrition: Thin..... Average.....
..... Obese..... Height (without
shoes)..... Best weight.....
when..... Any recent change in weight.....
..... Temperature.....

Girth of chest :—

- (1) (After full inspiration)
(2) (After full expiration)
2. Skin : Any obvious disease
3. Eyes : (1) Any disease
(2) Night blindness.....
(3) Defect in colour vision.....
(4) Field of vision.....
(5) Visual acuity.....
(6) Fundus Examination

Acuity of vision	Naked with eyes glasses	Strength of glasses		
		Sph.	Cyl.	Axis
Distant vision				
R. E.				
L. E.				
Near vision				
R. E.				
L. E.				
Hypermetropia (manifest)				
R. E.				
L. E.				

4. Ears; Inspection.....Hearing : Right
Ear Left Ear.....

5. GlandsThyroid.....

6. Condition of teeth.....

7. Respiratory System : Does physical examination reveal anything abnormal in the respiratory organs ?
.....
.....

If yes, explain fully.....
.....

8. Circulatory system :

- (a) Heart : Any organic lesions ?
Rate..... Standing.....
After hopping 25 times.....
Two minutes after hopping.....
(b) Blood Pressure : Systolic.....
Diastolic

9. Abdomen : Girth.....Tenderness.....
Hernia.....

(a) Palpable : Liver spleen
..... Kidneys Tumours.....
.....

(b) Haemorrhoids Fistula

10. Nervous system : Indications of nervous or mental disabilities.....

11. Loco Motor System : Any abnormality

12. Genito Urinary system : Any evidence of Hydrocele, varicocele, etc.

Urine Analysis :

- (a) Physical appearance.....
(b) Sp. Gr.....
(c) Albumen (d) Sugar
(e) Casts (f) Cells

13. Report of X-Ray Examination of Chest.....

14. Is there anything in the health of the candidate likely to render him unfit for the efficient discharge of his duties in the service for which he is a candidate ?

NOTE : In the case of a female candidate, if it is found that she is pregnant of 12 weeks standing or over, she should be declared temporarily unfit, *vide* Regulation 9.

15. For which services has the candidate been examined and found in all respects qualified for the efficient and continuous discharge of his duties and for which of them is he considered unfit.

16. Is the candidate fit for Field Service ?

Note.—The Board should record their findings under one of the following three categories :

- (i) Fit
(ii) Unfit on account of
(iii) Temporarily unfit on account of.....

President.....

Member.....

Place.....

Date.....

APPENDIX III

Brief particulars relating to the posts for which recruitment is being made through this examination.

1. Engineers (Class I) in the Wireless, Planning and Co-ordination Wing/Monitoring Organisation, Ministry of Communications :

(a) Scale of pay Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.

(b) The incumbent of the post of Engineer is eligible for promotion against 50 per cent of the vacancies in the grade of Assistant Wireless Adviser, Wireless, Planning and Co-ordination Wing/Engineer-in-Charge, Monitoring Organisation (Scale of pay Rs. 700—40—1,100—50/2—1,250 plus Rs. 100 as special pay for the post of Assistant Wireless Adviser only) after putting in five years service in the grade, promotion to the grade of Assistant Wireless Adviser/Engineer-in-Charge will be on the basis of the selection on the recommendations of the Departmental Promotion committee as constituted for Class I posts. All Assistant wireless Advi-

Officers and Engineer-in-Charge with 5 years service in the grade of Assistant Wireless Adviser/Engineer-in-Charge are eligible for being considered for promotion as Deputy Wireless Adviser (Scale of pay Rs. 1,100—50—1,400). The vacancies in the grade of Deputy Wireless Adviser are filled by promotion to the extent of 75% on the basis of selection on the recommendations of D.P.C. as constituted for Class I Post 25% of the vacancies in the grade of Deputy Wireless Adviser are filled by direct recruitment.

- (c) The person appointed to the post of Engineer is liable to be posted anywhere in India.
- (d) Any person appointed to the post of Engineer shall, if so required, be liable to serve in any Defence Service or post connected with the Defence of India for a period of not less than four years, including the period spent on training, if any :

Provided that such person—

- (a) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment;
- (b) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.

2. Deputy Engineer-in-Charge (Class I), Assistant Engineer (Class II Gazetted) and Technical Assistant (Class II—Non-Gazetted) in the Overseas Communications Service, Ministry of Communications.

- (a) Candidates selected for appointment as Technical Assistant/Assistant Engineer/Deputy Engineer-in-Charge will be appointed on probation for a minimum period of two years which may be extended, if necessary.
- (b) An Officer appointed as Technical Assistant/Assistant Engineer/Deputy Engineer-in-Charge will be liable to serve anywhere in India.
- (c) In case of temporary appointment to the posts of Technical Assistant/Assistant Engineer/Deputy Engineer-in-Charge apart from the conditions laid down in the bond which an officer may be required to execute, his service will be terminable by giving one month's notice on either side. It is, however, left to the Department to terminate the service of a temporary employee by giving one month's pay and allowances in lieu of notice but the officer has no such option.

(d) Scales of Pay :

- (1) Technical Assistant Rs. 325—15—475—EB—20—575.
- (2) Assistant Engineer Rs. 350—25—500—30—590 — EB — 30—800—EB—30—830 — 35—900.
- (3) Deputy Engineer-in-Charge Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.

(e) Prospects of promotion to higher grades.

- (1) Technical Assistant : All Technical Assistants with a minimum service of three years in the grade are eligible for promotion to the grade of Assistant Engineer in the scale of Rs. 350—25—500—30—590—EB — 30 — 800—EB—30—830—35—900 by selection on merit against 50 per cent vacancies reserved for departmental promotion.
- (2) Assistant Engineers : All Assistant Engineers with a minimum service of three years in the grade are eligible for promotion to the grade of Deputy Engineer-in-Charge in the scale of Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—950 by selection on merit against 75 per cent vacancies reserved for departmental promotion.
- (3) Deputy Engineer-in-Charge : The incumbent of the post of Deputy Engineer-in-Charge with a minimum service of three years in the grade of Deputy Engineer-in-Charge or Assistant Engineer is eligible for promotion to the post of Engineer-in-Charge (Scale : Rs. 700—40—1100—50/2—1250) in the Overseas

Communications Service on the successful completion of the period of probation which will be two years. The minimum service of three years in the case of officers directly recruited in the grade will be reckoned from the date of completion of training. The promotion to the grade of Engineer-in-Charge will be on the basis of selection on the recommendations of the D.P.C. as constituted for the post.

- (4) Engineer-in-Charge : The incumbent of the post of Engineer-in-Charge with a minimum service of three years in the grade of Engineer-in-Charge is eligible for promotion to the post of Director (Scale : Rs. 1100—50—1400) in the Overseas Communications Service. Promotion to the Grade of Director will be on the basis of selection on the recommendations of the D.P.C. as constituted for the post.
- (5) Director : The incumbent of the post of Director with a minimum service of three years in the grade of Director is eligible for promotion to the post of Deputy Director General (Scale : Rs. 1300—60—1600—100—1800) in the Overseas Communications Service. Promotion to the grade of Deputy Director General will be on the basis of selection on the recommendations of the D.P.C. as constituted for the post.
- (6) Deputy Director General : The incumbent of the post of Deputy Director General with a minimum service of three years in the grade of Deputy Director General is eligible for promotion to the post of Director General (Scale : Rs. 2000/- fixed) in the Overseas Communications Service. Promotion to the grade of Director General will be on the basis of selection on the recommendations of the D.P.C. as constituted for the post.
- (f) Any person appointed to the post of Technical Assistant, Assistant Engineer or Deputy Engineer-in-Charge shall, if so required be liable to serve in any Defence Service or post in connection with the Defence of India, for a period of not less than four years including the period spent on training, if any :

Provided that such person :—

- (a) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment.
- (b) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.

NOTE.—The remaining conditions of service such as leave, travelling allowances on transfer/tour, joining time/joining time pay, medical facilities, travel concession, pension and gratuity, control and discipline and conduct etc. will be as applicable to other Central Government employees of similar status.

3. Assistant Station Engineer (Class I) and Assistant Engineer (Class II), Directorate General, All India Radio, Ministry of Information and Broadcasting.

- (a) Appointments will be made on probation for a period of two years.
- (b) (i) An Officer appointed to the post will be liable to serve anywhere in India and also will be liable to transfer, at any time, to serve under a public corporation and on such transfer, he will be liable to be governed by the conditions of service laid down for employees of the Corporation.
- (ii) Any person appointed to the post of Assistant Station Engineer or Assistant Engineer shall, if so required be liable to serve in any Defence Service or post in connection with the Defence of India, for a period of not less than four years including the period spent on training, if any :

Provided that such person :—

- (a) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment.

- (b) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.
- (c) The Government can terminate the appointment of an officer in the following events, without giving any notice :—(i) during or at the end of the period of probation, (ii) for insubordination, intemperance, misconduct or breach or non-performance of any of the provisions of the rules pertaining to the service for the time being in force, (iii) if he is found medically unfit and is likely for considerable period to continue to be so unfit by reasons of ill health for the discharge of his duties.

In case of temporary appointments, the service of the officer can be terminated at any time, without assigning any reason by giving one month's notice on either side.

(d) Scale of Pay :—

- (i) Assistant Station Engineer—Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.
- (ii) Assistant Engineer—Rs. 350—25—500—30—590—EB—30—800—EB—30—830—35—900.

(e) Prospects of Promotion to higher grades :

Assistant Engineer and Assistant Station Engineer :—

- (i) Assistant Engineer with a minimum of 3 years service in the grade are eligible for promotion to the grade of Assistant Station Engineer in All India Radio in the scale of Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950 on the basis of selection against 40% vacancies reserved for departmental promotion, on the recommendations of the Departmental Promotion Committee.
- (ii) Assistant Station Engineer with 5 years service in the grade are eligible for promotion to the grade of Station Engineer in All India Radio in the scale of Rs. 700—40—1100—50/2—1250 on the basis of selection on the recommendations of the Departmental Promotion Committee.
- (iii) Station Engineers who have a minimum of 7 years service in that grade are eligible for promotion to the grade of Senior Engineer in the scale of Rs. 1300—60—1600 on the basis of selection on the recommendations of the Departmental Promotion Committee.
- (iv) Senior Engineers are eligible for promotion as Deputy Chief Engineer (Rs. 1600—100—1800); Deputy Chief Engineers are eligible for promotion as Additional Chief Engineers who in turn are also eligible for promotion to the post of Chief Engineer (Rs. 2000—125—2250).

NOTE.—The remaining conditions of service, such as leave travelling allowance on transfers/tour, joining time/joining time pay, medical facilities, travel concessions, pension and gratuity, control and discipline and conduct etc., will be as applicable to other Central Government employees of similar status.

4. Technical Officer (Class I) and Communication Officer (Class I) in the Civil Aviation Department, Ministry of Tourism and Civil Aviation.

- (a) Candidates selected for appointment will be appointed as probationers for a period of 2 years during which they will undergo practical training in accordance with the programme of training that may be prescribed from time to time. Those who are favourably reported upon and have passed any Departmental examination or examinations that may be prescribed will be appointed as temporary Communication Officers/Technical Officers. They will be considered for confirmation in the grade of Communication Officer/Technical Officer as and when permanent posts for their confirmation become available.
- (b) If in the opinion of Government the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the Officer in his appointment or if his work or conduct has in the opinion of the Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) If no action is taken by Government, under sub-rule (b), (c) of the rule, the period after the prescribed period of probation shall be treated as an engagement from month to month, terminable on either side, on the expiration of one calendar month's notice in writing.

(e) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer that officer may exercise any of the powers of Government under this rule.

(f) Officers recruited under these rules shall be eligible for leave, increment and pension in accordance with the rules for the time being in force and applicable to Officers of the Central Government. They will also be eligible to join the Central Provident Fund in accordance with the rules regulating that Fund.

(g) These Officers shall be liable for transfer anywhere in India for any Field Service in and outside India during an emergency. They can also be asked to take up duties on board an aircraft in flight.

(h) The relative seniority of Officers appointed through the Engineering Services (Electronics) Examination will ordinarily be determined by the order of their merit in the Examination, Govt. of India, however, reserve the right of fixing the seniority at their discretion in individual cases.

(i) Prospects of promotion to higher grades :—

Promotion to the grade of Senior Communication Officer/Senior Technical Officer :

Communication officers/Technical Officers with a minimum of three years of service in the grade are eligible for promotion to the grade of Senior Communication Officer/Senior Technical Officer in the Civil Aviation Department subject to occurrence of vacancies in the scale of 700—40—1100—50/2—1250 on the basis of seniority-cum-fitness.

Promotion to the grade of Dy. Director/Controller of Communication :

Senior Communication Officers/Senior Technical Officers who have a minimum of 3 years of service in that cadre are eligible for promotion to the grade of Dy. Director/Controller of Communication in the scale of Rs. 1100—50—1400 on the basis of selection on the recommendations of the DPC.

The next higher posts in the line of promotion in the Civil Aviation Department subject to selection by the DPC are Director (Communication, Training and Licensing and International Airports) in the scale of Rs. 1300—60—1600—100—1800; Deputy Director General in the scale of Rs. 1800—100—2000; and Director General in the scale of Rs. 2500—125/2—2750.

(j) These conditions of service are subject to revision according to the requirements of service. Candidates will not be entitled to any compensation if they are adversely affected by any changes in the conditions of service which may be introduced later on.

(k) The scales of pay for the posts of Communication Officer/Technical Officer in the Department of Aviation are given below :

(i) Communication Officer (Class I) Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.

(ii) Technical Officers (Class I) Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.

(l) Any person appointed to the post of Communication Officer/Technical Officer shall, if so required be liable to serve in any Defence Service or post connected with the Defence of India for a period of not less than four years including the period spent on training, if any :

Provided that such persons :—

- (a) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment;
- (b) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.

5. Assistant Development Officer (Engineering) (Class I) in the Directorate General of Technical Development : Ministry of Industrial Development.

- (a) Persons recruited to the post of Asstt. Development Officer (Engg.) in the Directorate General of Technical Development will be on probation for a period of two years.
- (b) The scale of pay of this Class I (Gazetted) post is Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.
- (c) Assistant Development Officers with five years service in the grade are eligible for promotion to the post of Development Officer in the D.G.T.D. in the scale of Rs. 700—40—1100—50/2—1150—EB—1300—60—1600. 50% of the posts in the grade of Development Officer are filled by promotion. Development Officers are eligible for promotion as Industrial Adviser (Rs. 1800—2000); Industrial Advisers are eligible for promotion to the post of Deputy Director General (Rs. 2500—125/2—2750) and Deputy Director General in turn are also eligible for promotion to the post of Director General (Technical Development) (Rs. 3,000/-).
- (d) Any person appointed on the result of this competitive examination shall, if so required, be liable to serve in any Defence Service or post connected with 4 years including the period spent on training if any;

Provided that such person :—

- (i) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of such appointment.
- (ii) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.

6. Deputy Armament Supply Officer, Grade II (Class I) in the Indian Navy, Ministry of Defence.

- (a) Candidates selected for appointment to the post will be appointed as probationers for a period of two years which period may be extended at the discretion of the competent authority. Failure to complete the probation to the satisfaction of the competent authority will render them liable to discharge from service. During the period of probation, they will have to undergo a technical training course for a period of 9—12 months and are also to pass the departmental examination in not more than three attempts. In case they fail to pass in departmental examination their services will be liable to be terminated at the discretion of the Government. They will also be required to sign a bond for Rs. 15,000 (the amount may vary from time to time) prior to proceeding on training for compulsory service in the Indian Navy for a period of three years after completion of the training.
- (b) The appointment can be terminated at any time by giving the required period of notice (one month in the case of temporary appointment and three months in the case of permanent appointment) by competent authority. The Government, however, reserves the right of terminating services of the appointees forthwith or before the expiry of the stipulated period of notice by making payment of a sum equivalent to pay and allowances for the period of notice or the unexpired portion thereof.
- (c) They will be subject to terms and conditions of Service as applicable to Civilian Government Servants paid from the Defence Services Estimates in accordance with the orders issued by the Government of India from time to time. They will be subject to Field Service Liability Rules 1957 as amended from time to time.
- (d) They will be liable for transfer anywhere in India or abroad.

(e) Scale of pay and classifications—Class I Gazetted in the scale of pay of Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950.

(f) Prospects of promotion to higher grades—

(i) Deputy Armament Supply Officer Grade I

DASOs Grade II with 3 years service are eligible for promotion to the grade of DASO Grade I in the scale of pay of Rs. 700—40—1100—50/2—1250 on the basis of selection on the recommendations of DPC provided that only those officers will be considered for promotion who have passed the departmental examination which may be held after technical training course, or the Naval Technical Staff Officers Course at the I.A.T. Kirkee. The syllabus of the Departmental examination is reproduced below :—

1. Naval Armament Depot, Vishakhapatnam
 - (a) Shop-work (Three months)
 - (b) Gunwharf Technical Course I
 - (c) Ammunition Technical Course I
 - (d) Administration and Accounts Course
 - (e) Visit to Balasore, Cossipore, Ishapore and Jabalpur.
2. Gunnery School and TAS School :
3. Visits of Heavy Vehicle Factory, AVADI and Cordite Factory, ARUVANDADU
4. Naval Armament Depot, Bombay :—
 - (a) Gunwharf Technical Course II
 - (b) Ammunition Technical Course II
 - (c) Visit to Ordnance Factory, AMBARNATH
5. Institute of Armament Technology, KIRKEE
6. Visit to HE Factory, Ammunition Factory, ARDE and ERDL, KIRKEE
7. Visit to Ordnance Factory & Shell Arms Factory, KANPUR en route Naval Headquarters, New Delhi.
8. Naval Headquarters, New Delhi
 - Visit to Defence Science Laboratories DELHI. FINAL EXAMINATION

(ii) Naval Armament Supply Officer (Ordinary Grade)

Deputy Armament Supply Officer, Grade I with 3 years' service as such, are eligible for promotion to the grade of Naval Armament Supply Officer (Ordinary Grade) in the pay scale of Rs. 1100-50-1400- on the basis of selection to be made by the appropriate DPC.

(iii) Naval Armament Supply Officer (Selection Grade)

Naval Armament Supply Officer (Ordinary Grade) with 3 years' service as such, are eligible for promotion to the grade of Naval Armament Supply Officer (Selection Grade) in the pay scale of Rs. 1300-60-1600 on the basis of selection to be made by the appropriate DPC.

(iv) Director of Armament Supply

Naval Armament Supply Officer (Selection Grade/Ordinary Grade) with 5 years' service in the grade(s) are eligible for promotion to the grade of Director of Armament Supply in the pay scale of Rs. 1600-100-1800 on the basis of selection to be made by the appropriate DPC.

7. Other posts under the Central Government carrying generally the following scales of pay :—

Class I	Rs. 400—950
Class II	Rs. 350—900

